इसाईमत समिक्षा.

छपावी प्रकट करनार,

श्री जैन ज्ञानप्रसारक मंडळ.

मुंबाई.

पहेली आवृत्ति

શાહ સોમચંદ [illegible]ચંદ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શ્રી હીરસૂરીશ્વરજી જૈ. [illegible] મૂ. તપા.
જૈન [illegible] ઉપાશ્રય,
૬૧/૬૨, દફતરી રોડ, [illegible] સ્કૂલ લેન,
મલાડ (પૂર્વ) મુંબઈ-૪૦૦ ૦૬૪.
ક્રમાંક નંબર..............

अमदावाद

श्री जैन प्रिन्टिंग प्रेस.

वीर संवत २४३३. सन १९०७.

ईशाइमत समीक्षा

॥ ॐ श्रीमदर्हद्भ्योनमः ॥ विदित हो कि हमारे
मनमें बहुत दिनोसें एक बिचार उत्पन्न होता रहा,
यह है—क्रिश्चियन अर्थात् ईसाइ मतके मानने वाले
अंग्रेज लोक कितनी सांसारिक् विद्याओंमें बहुत कुशल
मालूम होतेहैं; परंतु यह लोक सत्य असत्य धर्मकी
परीक्षा क्यों नहीं करतेहैं. क्योंकि जो कोई पुरुष
अप्रमाणिक वस्तुकुं सत्य करी माने वो विचक्षणोकी
गिनतीमें नहि गिना जाताहैं. इस वास्ते हमारे मनमें ऐसा
ख्याल आता था कि इन ईसाइ मतवालोंके कदाचित्पूर्ण
पुण्यका उदय होवे और कर्मका क्षयउपशम होवे तिससें
इन लोकोंकुं यथार्थ देव गुरु धर्मकी श्रद्धा स्पर्शना

अर्थात् धर्मानुष्टानका सेवन-करना प्राप्त होवे, तब हम अपने मनमें बहुत संतोष माने; परंतु कितनेक बुद्धिमान् इंग्लिश लोकोने बहुत पुरानी मूर्त्तियोंके लेखोंसें और पुराने सिक्काओंसें तथा अपनी दलीलोसें जैनमतकुं बहुत पुराना अर्थात् सर्व मतोंसें पहिला मत सिद्ध कराहै. इस वास्ते हम उमीद रखते है कि इंग्लिश लोक कितनेक दिनोंमे सत्य असत्य धर्मका भी निर्णय करेंगे; परंतु कितनेक ईसाइ लोक प्रमाण युक्तिके न जाननेसें अपने पंथको चलानेवाले ईसामसीहके अनुरागसें अपनेही माने धर्मको सत्य मानतेहैं और कितनेक आर्यावर्त्तके रहनेवालोंकुं कि जिनकी बुद्धि सत्य धर्ममे पूरी निपुन नहीहै तिनकुं अपने मतका उपदेश करते हैं. तिनमे आर्यावर्त्तके रहनेवाले जो निर्धनहै वे तो धनके लोभसें मतमें आ जातेहै. और कितनेक रंडेहै वे मनमें समझते हैं कि ईसाइ मतमें मिलनेसें हमकुं स्त्री मिल जायगी और कितनेक ऐसा विचारतेहैं कि जो हम इस मतमें हो जावेंगें तब हमारा सब खाना पीना खुल जायगा तब मन माना सो खायें पीवेंगें.

कितनेक हिंदुओंके देवोंकी तथा तिन देवोंकी मूर्त्ति-ओंकी असमंजस रीति भांति देखकर और सुन कर अपने मतकुं छोडके ईसाइ मतकुं अंगीकार कर लेतेहैं; परंतु जो कोई धनके लोभसें तथा स्त्रीके वास्ते और खाने पीनेके वास्ते ईसाइ मतकुं अंगीकार करताहै सो तो पामर जीवहै, और जो विना परीक्षाके करें अपने धर्मकुं छोडके दुसराओंके धर्मकुं मानताहै सो भी बुद्धिमान् नहीं कहा जाताहै; इस वास्ते धर्मकी परीक्षाही करनी जीवकुं बहुत मुश्किलहै. तथा कितनेक ईसाइ मतवाले धर्मकी परीक्षा करते हुवे उलटे—सत्यकुं असत्य और असत्यकुं सत्य समझ लेते हैं; जैसें कि अहमदाबादमें एक ईसाइ मतवालेने एक पुस्तक. " जैनमतपरीक्षा " नामे बनायाहै. तिस पुस्तकमें लिखताहै कि जैनमतकु बडे बडे व्यापारी धनवान् ऊंची पदवीवालें लोक मानतेहैं १. तथा तिनके हाथमें इस दुनीयांकी बहुत दौलत आइहै २ और बहुत दौ-लत मिलानेमें वे लोक बहुत हुशीयारी धरातेहैं ३ और अन्य मतवालोंको जैनीलोक अपने मतमे मिलानेकेवास्ते

उपदेश करतेहैं ४ और वेद उक्त धर्मकी बहुत निंदा करतेहै ५ और हिंदु लोकोने जिस कृष्णकुं देव मानाहै तिसकुं जैनी तीसरी नरकमें गया लिखतेहैं ६ और महेश्वरी लोकोंकों जैनमतमें लानेके वास्ते बहुत महेनत करतेहै ७ और बुद्धिमान् जैन लोकोंका यह बिचारहै कि चाहे बाप दादे—आदिककी परंपरासें क्यों न चला आयाहो कि जो असत्य धर्म होवे तिसकों छोड देना चाहियें ८ और सत्य मतकों मानना चाहियें. ९

इनका उत्तर,—जैनमतकों जो बडे बडे व्यापारी धनवान् उच्च पदवीवाले लोकों मानतेहै सो सत्यहै; क्योंकि पूर्व कालमें जैनधर्मकों चक्रवर्त्ति वासुदेव बलदेव महा मांडलीक प्रमुख राजा-महाराजाए और प्रजा मानतेथे; परंतु इस पंचम कालमें व्यापारी धनवान् उच्च पदवीवाले लोक मानतेहै, क्योंकि इस कालमें इस देशके राजालोक नीतिपूर्वक राज्य भी नहीं कर सकतेहैं, और सांसारिक् विद्यामें भी पूरे पूरे निपुन नहींहैं और खाना पीना भोग भोगना प्रायः इसीमेंही अपने जन्म-

का फल समझतेहै, और धर्म करना तो कर्मके क्षयो पशम और पुण्योदय प्रबल होवे तब होताहै. इस वास्ते जिन जीवोंके कर्मका क्षयोपशम और पुण्यका उदयहै तिनही जीवोंको सत्य धर्मकी प्राप्ति होतीहै, ओर दौलत भी मिलतीहै; परंतु ईसाइयोंके कहने मुजब तो ईश्वर करताहै. तो फेर ईश्वर कर्त्ता इस जगतके न माननेवाले जैनी लोकोंको धन दौलत उच्च पदवी प्रमुख वस्तुयों काहेको देते ? क्योंकि ईसाइ लोक पूर्व जन्म तो मानते नहींहै. इस वास्ते पूर्व जन्मका करा पुण्य वा धर्म तो किसी जीवके पासहै नहीं, तो फेर लाखों राजाए जैनमती पीछे हो गयेहै तिनको किस वास्ते राज्य दीया और इस समयमें हजारों राजाए ईश्वर कर्त्ताको नही मानतेहै, तथा ईसा मसीहको नही मानतेहै, और ईसाइ मतसें विरुद्ध मतकी पुष्टी वृद्धी करतेथे, और करतेहैं, और लाखों व्यापारी धनवान् उच्च पदवीवाले जैनी लोकोंको किस वास्ते व्यापार करनेकी बुद्धी और धन परिवार देते ? जिस्सें ईसाइ मत विरुद्ध जैन मतकी वृद्धी करतेहैं ।

क्या ईश्वर नहीं जानता था कि यह जैनी लोक मेरे पुत्र ईसामसीहके मतकों नहीं मानेंगे, और मेरे पुत्रके चलाये मतसें विरुद्ध मतको मानेंगे, और तिसकी वृद्धी करेंगे. जब ईश्वरकों ऐसा ज्ञान नहीं है तब तो ज्ञान रहितकों इश्वर मानना यह बुद्धिमानोंका काम नहि है, जो कभी ईश्वरने जैनीयोंकों जान बूझके एसे मत मान-नेवाले बनायेहै, तब तो जैनी ईश्वरकी आज्ञासेंही जगतकर्त्ता ईश्वरको नहीं मानतेहै । जो कभी कहोगें ईश्वरने ही जैनी लोकोकों पाप संयुक्त और ईश्वरकर्त्ता जगतका न माननेवाले बनायेहै, तब तो ईश्वरकी दयालुता १ निःपक्षपातता २ न्यायता ३ स-मदृष्टिता ४ सर्वज्ञता ५ इत्यादि अनेक गुण ईश्वरके नष्ट हो जावेंगे; क्योंकि जब ईश्वरने जैनीयोंकों ईश्वरकर्त्ता न माननेवाले रचे, तब तो तुमारे मत मु-जब जैनी सर्व नरकमें जायेंगे, और महा दुःख भो-गेंगे. । तब तो तुमारे ईश्वरकुं दया नहींहै। जो कभी दया होती तो जैनीयोकों काहेकों नरकमें जानेके वास्ते रचता? कितनेक जीवोंकों स्वर्ग जानेके वास्ते रचे और

कितनेक जीवोंको नरक जानेके वास्ते रचे इस वास्ते पक्षपातीहै, २ बिना गुनाहके जेनीयोकों ईश्वर न माननेवाले रचके नरकमें पोंहचाये; इस वास्ते तुमारा ईश्वर अन्यायी सिद्ध होताहै ३ कितनेक जीवोंको धन परिवारादि दिया, और कितनेक कंगाल निर्धन दुखी रोगी इंद्रिय हीन धन परिवार स्त्री पुत्रादि वर्जित रचे, इस वास्ते समदृष्टि नहीं ४ ईसाइयोंका ईश्वर सर्वज्ञ भी नहीं था. जो कभी सर्वज्ञ होता तो ईसाइ मतके न माननेवा और ईसाइ मतके खंडन करनेवाले हमारे सरीखेकों काहेको रचता ॥ ५ ॥ इत्यादि अनेक दूषण तुमारे ईश्वरमें उत्पन्न होतेहै. पूर्वपक्षः—ईश्वरने तो सर्व जीव प्रथम पाप रहितही रचे है पीछे जीव अपने खोटे कर्त्तव्योंसें पापी बन गयेहै, इस वास्ते हमारे ईश्वरमें कोइभी दूषण नहीं ॥ उत्तरपक्षः—जब ईश्वरने सर्व जीव पाप रहित रचेथे तो पापी जीवोंकुं पाप बुद्धि कहांसें उत्पन्न भइ ? क्योंकि जिस वस्तुमें जिस वस्तुकी सत्ता नहीहै सो वस्तु कदापि उत्पन्न नहीं हो सक्ती है—खर शृंगवत् । पूर्वपक्षः—ईश्वरने प्रथम

जीवोंकुं रचा तब अछी और बुरी दोंनों तरेंकी बुद्धि दीनीथी, और ईश्वरने आज्ञा करीथी कि अछी बुद्धिसें सर्व काम करो, और बुरी बुद्धिसें कुछ मत करो; पीछे कितनेक जीवोंनें बुरी बुद्धिसें काम करा तिसकै फल ईश्वरने नरक भोगनेके वास्ते नरकमें उत्पन्न करा, वा करेगा, इस वास्ते ईश्वर निर्दोषहै, उत्तर। जब ईश्वरने बुरी बुद्धि जीवोंकों दीनी, तब ईश्वरने यह वात तो अवश्यमेव जाणी होगी कि येये जीव बुरी बुद्धिसें पाप अवश्यमेव करेंगे, और मेरे मतकुं खंडन करेंगे, तो फेर ऐसी बुद्धि ईश्वरने किस वास्ते दीनी। जैसें कोइ अछा पुरुष अपने पुत्रकुं खेलनेके वास्ते एक चक्कु छुरी वा अन्य कोई वस्तु देवे, और मनमें निश्चयसें जानता होवे कि चक्कु आदिकसें यह मेरा पुत्र अपनी आंख फोड लेवेगा, वो पुरुष कदापि ऐसी वस्तु पुत्रके हाथमें न देवेगा, जो कभी देवे तो बुद्धिमान् नहीं कहा जावेगा, ऐसेही ईश्वर भी बुद्धिमान् नही माना जावेगा॥ इस लीये जीवों पूर्व जन्मांतरोंके करे अपने अपने पुण्य पापोंके प्रभावसें अछी बुरी अ-

वस्था पाकर जगत्में उत्पन्न होतेहै, एसा मानना ठीकहै, किंतु इश्वरकुं जगत्का कर्त्ता मानके बहुत दूषणों स्वीकार करने ठीक नहीहै, और जैनीयोंके हाथमें जो बहुत दौलत आइ है सो जिस जैनीनें पूर्व जन्ममें शुभ कर्म कराहे तिसकों धन परिवार लक्ष्मी निरोग्य शरीरादि वस्तु मिली है, और जिस जैनीने पूर्व जन्ममें शुभ कर्म नही करा वे धनहीन अरु दुखीहै, परंतु इस जन्ममे यथार्थ सर्वज्ञोक्त धर्म करेंगे तो अगले जन्ममें दुःखी नही होवेंगें, परंतु सर्वज्ञ वीतराग परमेश्वर किसीकों सुखी और किसीकों दुखी धनवान् तथा धनहीनादि नही करताहै, जो कभी विना जीवोंके पूर्व जन्मके पुन्य पापके इश्वर जीवोंकों सुखी दुखी धनवान् धनहीन करे तो ऐसे ईश्वरकों कोइ भी बुद्धिमान् नही मानेगा. जैनी लोक जो धन मिलानेमें हुस्यारी रखतेहै वो भी तिनके ज्ञानावरणीय कर्मके क्षयोपशमसें बुद्धि उत्पन्न हुइहै, तिस्सें धन उत्पन्न करनेमें चतुरहै; जो कभी जगत् कर्त्ता इश्वर बुद्धिका दाता माना जाये तब तो कोइ मूर्ख और कोइ बुद्धिमान्

ऐसी विचित्रता न होवे, जो कभी इश्वर विना कारण एकको मूर्ख और एककों बुद्धिमान् बनावे तब तो इश्वरमें राग द्वेष १ पक्षपात २ अन्याय ३ निर्दयता ४ अज्ञानादि दूषण सिद्ध होवेंगे, । ३ । और जो जैन मतवाले अन्य मतवालोंकों जैन मतमें लानेके वास्ते उपदेश करतेहै सो सत्यहै, सर्व मतोवालें ऐसा उपदेश करतेहै, परंतु कितनेक निर्दय लोक अपने मतमें लानेके वास्ते जो न माने तो कतल भी कर देतेहै; परंतु जो कभी जगत् कर्त्ताके हाथमें ही जगत्की डोरी होवे तब तो इश्वर सर्व जीवोंकों इसामसीहपर इमान लानेकी बुद्धि क्यों नही देताहै, जिस्सें सर्व जीव एक धर्मकों मानके स्वर्ग सुखके भोगनेवाले हो जावे, इस वास्ते इश्वर जगत्का कर्त्ता सिद्ध नही होताहै, तथा जैसें इसाइ लोक उपदेश द्वारा सर्व जीवोंको पाप करनेसें रोकतेहै, तैसें सर्व समर्थ्य तुमारा इश्वर जीवोंकों पाप करनेसें क्यों नही रोकताहै, इस वास्ते जगत्का कर्त्ता इश्वर नही निःकेवल अनादि अज्ञानसें कितनेक लोक जगत् कर्त्ता इश्वरहै, ऐसें भोले लोकोंकों असत् आग्रह

करवा देतेहै, ४ और जो जैनी वेदोक्त धर्मकी निंदा करते है ऐसा लिखाहे सो यथार्थ नही है, क्योंकि जैनी लोक निःकेवल वेदोक्त धर्मका ही निषेध नही करते है; किंतु जिस धर्मगे अठारह दूषण वाले देवकों परमेश्वर माने और पंच महाव्रत अर्थात् जीवहिंसा १ मृषावाद २ चोरी ३ स्त्री ४ धन परिग्रह ५ इन पांचोंका जो त्यागी न होवे, और सत्तर भेद संयमसें रहित होवे, दश प्रकारके यति धर्मसें रहित होवे तिसकों गुरु माने, और जीव हिंसा १ जूठ २ चोरी ३ स्त्री प्रसंग ४ लोभादि अठारह पाप करनेमें धर्म माने तिसकी निंदा जैन मतमें है, परंतु जिस पुस्तकमें दया १ दान २ सत्यशील ३ संतोषादि कथन करेहै तिस पुस्तकोक्त धर्मकि जैनी निंदा नही करतेहै, ५, और हिंदु लोकोंने जिस कृष्णको देव मानाहै तिसकों जैन लोक द्वेशबुद्धि करके नरक गया नही कहतेहै, किंतु जो कृष्ण वासुदेव ८६४१२ वर्षसें पहिला हुवाहै, सो जैनमति था; परंतु जैनधर्मकी श्रद्धासें पहिला तीसने संग्राम और महा भोग करनेसें । और महा आरंभ

परिग्रहके सेवनसें नरकायुका बंध करा, और तहांसें निकलके अगली चोवीसीमें बारमा अमम नाम अर्हत तीर्थंकर होवेगा, और अन्य मतवाले जिस कृष्णको परमेश्वरका अवतार मानते है, तिसको हूये तो ५००० हजार वर्ष बतलाते है, तिसको तो जैनी नरक गया नही कहते है, कदाचित् कोइ ऐसें कहे कि वर्षोमें चाहो फेर होवे तो भी वैभव और जैनीयोने जो कृश्न माना है सो एकही है, तिसका उत्तर, जो कभी एक भी होवे तो भी जैनी द्वेष बुद्धीसें अन्य मतका देव जानकर नरक गया नही कहतें क्युंकि इस अवसर्पिणि कालमें नव वासुदेव हूए है तिनोंने महा संग्राम ३६० तीनसौ साठ करे और हजारों स्त्रीयोंसें भोग भोगे महा आरंभ परिग्रह मोह राग द्वेषादि बुरी परणतिसें नवही वासुदेव नरकमें गये है और रामचंद्र बलभद्रादि नव बलदेव मोक्ष और ब्रह्मदेवलोकमें गये है. क्यों कि नवही बलदेव राज्य छोडकर जेनमतकी दीक्षा ले कर महा जप तप संयमादि धर्म करणी करके मोक्ष देवलोकमें गयें है। जो कभी अन्य

मतका देव जानकर जैनी नरक गया कहे तब तो श्री रामचंद्रजी महाराजको मोक्ष ओर बलभद्रजीकुं पाचमें ब्रह्मदेवलोक गये जैनीयोंके शास्त्रमें काहेको लिखते? इस वास्तै जैन शास्त्रके कर्त्ताका जो कथन है सो यथार्थ है, क्योंकि जो कोइ विषय विकार महारंभ महापरिग्रह राग द्वेष मोहमें अत्यंत रक्त होवेगा चाहो तीर्थंकर अवतार पैगंवर ईश्वर पुत्र संत महंत आचार्य उपाध्याय गुरुनाम क्यों न धरावे; तो भी अवश्य नरकमें जायगा. इस कथनको कदापि कोइ बुद्धीमान् निंदा नही कह सकता है. ६ और जो अन्य मतवालोंको जैनी जैनमतमें लानेके वास्ते बहुत मेहनत करते है सो सत्य है। क्योंकि सर्व मतावलंबियोकी यही रीति है. ७ और जो जैनीयोंकी यह प्रतिज्ञा है कि चाहो बाप दादेकी परंपरासें धर्म क्यों न चला आया हो जो असत्य धर्म होवे तिसकी परीक्षा करके छोड देना चाहिये, यह कहना सत्य है, क्यों कि सर्व बुद्धीमानोकुं ऐसाही करणा उचित हैं। ८.

और सत्य मतको मानना सर्व बुद्धिमानोंका

लणक्ष है, परंतु असत् धर्मकों अपनी कल्पना सें सत्य मानना यह बुद्धिमानोका लक्षण नही है । ९। तथा इसाइ मतवाले जैनमत परीक्षा नामक पुस्तकमें लिखते है कि 'कोनुं भजन करवुं जोइये ? तेमां —जैन मतमां एक भजन तरीके नोकार मंत्र चाले है । नमो अरिहंताणं इत्यादि।आ भजनमां परमेश्वरनी स्तुति नथी, भक्ती नथी; परंतु जैन लोकना धर्माचार्य अथवा तीर्थंकरोनी स्तुति आवे छे; वली सवारमां जे प्रार्थना जैन लोक घणुं करीने वापरे छे ते इछामि खमासमणो वंदीयुं जामणी ज्झाये निसिहि आये । मथअेण वंदामी । जे स्वामीनी आगल जैन लोक ऊपर परमाणे नमस्कार करे छे ने माफी मांगे छे ते फकत कोइ एक तीर्थंकरनी मूर्ति छै. हवे आ आराधनानी वातो पर अमने घणी अचरती लागे छे; तेमां सृष्टीना उत्पन करनार रक्षण करनार तथा घणी परमेश्वरनी भक्तिनो एक शब्द आवतो नथी । पण तेनें ठेकाणे केटलाएक माणस जेओ सिद्ध थएला के निर्वाण पामेला मनाए छे तेओनी पूजा थाए छे. केटलाएक

श्रावक लोक जेओ पोताना धरमनुं मत बराबर जाणता नहता तेओए अमारा सांभल्यामां एवुं कह्युं छे के, अमे नास्तिक नथी. अमे परमेश्वरने मानीए छीए. पण तेओ अज्ञानथी एम बोल्या; केमके कल्पसूत्रमां साफ लख्युं छे के, "नार्हतः परमो देवो" अर्थ "अरहत एटले तीर्थंकर करतां कोइ मोटो देव नथी" वली अमे यती तथा बीजा जैन लोकने महोढेथी. नास्तिक मतनां एवां वाक्य सांभळ्यां के "करता हरता कोइ नथी" ने बधुं स्वभावथी थाए छे" एक गोरजीए अमारा मित्रने एवी खबर आपी के कोई शीश तेनी पासे शिखतो होए ने बराबर समजु होए तो त्रीजे वर्षे ते तेने आ भेदनी वात जणावे के, "इश्वरो नास्ति" अर्थ "इश्वर नथी इतिपूर्वपक्ष० ॥

अथ उत्तरपक्ष०पंच परमेष्टी नमस्कार रूप जो जैन मतमें भजन तथा स्मरण चलता है सो सर्व स्मरण और भक्तियोंकी मूल—जड है, क्योंकि इन पंच पदोंके विना अन्य कोइ परमेश्वर और उपास्य नही

है, तिनमें प्रथम जो पद है सो देहधारी सर्वज्ञ सर्व दर्शी अठारह दूषण वर्जित और अनंत गुण करके संयुक्त है, तिन अठारह दूषणोंके नाम लिखते है, अज्ञान १ क्रोध २ मद ३ मान ४ लोभ ५ माया ६ रति ७ अरति ८ निंदा ९ शोक १० मृषा वचन ११ चोरी १२ मत्सर १३ भय १४ प्राणिवध १५ प्रेम क्रीडा प्रसंग १६ स्त्रीयादिकका प्रसंग-मैथुन सेवन १७ हास्य १८॥ अथ इन अठारह दूषणोंका स्वरुप लिखते है। प्रथम अज्ञान दूषण। जे सर्वज्ञ नही है। जो सर्वज्ञ नही, वो परमेश्वर नही, क्योंकि जिसकों अतीत अनागत वर्त्तमान सूक्ष्म बादर प्रगट वा दूर निकटादि वस्तुका ज्ञान नही है, । सो परमेश्वर नही है,। यह दूषण बडा भारी है, परंतु जैन मतके लाखों शास्त्र विद्यमान है तिनके कथनसें यह दूषण अरिहंत देवमें सिद्ध नही हो सक्ता है, परंतु ईसाइयोंने जो ईसामसीहकों परमेश्वर वा परमेश्वरका पुत्र माना है, तिसमें यह दूषण ईसाइयोंके शास्त्रोंसें ही सिद्ध होता है,। तिसका लेख मत्ती रचित पुस्त-

कर्मं अैसा है, ॥ भोरकुं जब बहेनी घरको फिरजाताथा. तब उसको भूख लगी. और मार्गमे एक गूलरका वृक्ष देखके वह उस पास आया; परंतु उसमे ओर कुछ न पाया केवल पत्ते. और उसको कहा, तुजको फिर कभी फल न लगेंगे. इस पर गूलरका पेड तुरत सूख गया॥ इं० म० प० २१॥ आ० । १८ । १९ मती किताबके. ४० पत्रो परि. इस लेखसें इसामसीहमें इतनी बातें सिद्ध होती है । अज्ञान १ क्रोध २ अन्याय ३ असमर्थ ४ क्योंकि जो कभी ईसामसीहकों ज्ञान अर्थात् सर्वज्ञपणा होता तो फल रहित गूलरके वृक्ष पास फल खानेको काहेको जाता ? इस वास्ते इसामसीहकों पूर्ण ज्ञान नही था। १ गूलरकों कहा उनकों फिर कभी फल न लगेंगे, इतने कहनेसें गूलर तुरंत सूख गया, । यह गूलरकों शाप दीया सो क्रोध सेंही दीया २ गूलरका कुछ कसूर नही था तिसको सूखाडाला, विनाही गुनाहके--यह अन्याय है, ३ क्या ईसामसीह जो चाहे सो तत्काल नहीं कर शक्ता था, जो कहे कर शक्ता तो गूलरके पास काहे को जाता,

जहां भूख लगती तहांही जो चाहे सो खानेको एक क्षणमे बना लेता, सो तो नही बनशका, इस वास्ते सामर्थ्यभी नही था, जैनी वो अैसे दूषणो वालेकों कदापि अरिहंत नही मानेंगे, इस वास्ते जैनमतका अरिहंतही अज्ञान रहित था; परंतु ईसामसीह. अज्ञान रहित नही सिद्ध होता है, । १ दूसरा मद दूषण, यह दूषणभी जैनमतके शास्त्रसें अरिहंतमें कदापि सिद्ध नही हो शकेगा; परंतु ईसामसीहमें यह भी दूषण सिद्ध होता है। उपरके लेखमें जो गूलरको शाप दीआ सो क्रोध और अपने ईश्वर्य वा विद्या के मद विना नही दीया जाता है,। इस वास्तें इस दूषणसें भी ईसामसीह मदरहित सिद्ध नही होता है,। २, मान दूषण तो मत्ती रचित पुस्तकमें बहुत जगें देखनेमें आता है। ३ लोभ ४ और माया ५ ये दोनो क्रोध मद मानके सहचारी है। ५ रति ६ अरति अर्थात् खुशी और दिलगीरी ये दोनों भी ईसामसीहमें सिद्ध है ।। क्योंकि जब ईसाकों शूली ऊपर चढाया तब ईशानें बहुत दिलगीरी-अरातिसें शब्द करा सो यह

है। एली एली लामास वक्तना हू अर्थात् हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तूने क्यों मुझे त्यागा है। इंजील० म० प० २५ ॥ इस वास्ते ये भी दूषण सिद्ध होते है ६। ७। ईसा सोता भी था।८ ईशाके शोक भी था तिसकी साक्षी नीचे लिखते है॥ और वह पिताको और जब देके दोनों पुत्रों को अपने संग ले गया, और शोक करने और बहुत उदास होने लगा. तब उसने उनसें कहा के मेरा मन यहां लो अति एदास है के में मरने पर हूं. और थोडा आगे वढके वह मुहके वल गिरा और प्रार्थनाकी है. मेरा पीता जो हो शके तो यह कटोरा मेरे पाससें टल जाय ॥ इं० म० प० ३६ ॥ आ० ३७। ३८। ३९॥ पत्र. ५३ उत्तर. देखो १ जो वह केवल मनुष्य न होता, ईश्वरका वेटा और त्रिकालदर्शी और विद्वान् होता, तो एसी अयोग्य चेष्टा न करता. और शोक १ उदासी २ अधीर्य ३ दीनता ४ न करता। ९। मृषा बचन तो बहुत जगे पाया जाता है। जैसें लिखा है॥ आकाश और पृथिवी टल जायेंगे; परंतु मेरी वाते कभी न टलेगी।

इंजील मत्ती पर्व २४ आयत ३५। अब देखीये आकाश तो पोलाडका नाम है सो सर्व लोकालोक व्यापक सूक्ष्म अमूर्त्तिक है। नित्य है ये आकाश नष्ट नही होवेगा, जो कभी पोलाड रूप आकाश नाश हो जावेगा तो फिर सर्व जगत निग्र कठन वज्र समान हो जावेगा तो, फेर हमारा खुदा और ईशा और हमारे स्वर्ग भिस्त नरके और दोजक कहां रहेंगे? और ईशा आकाश विना कहां बैठके न्याय करेगा? इस वास्ते यह कहना के आकाश नष्ट हो जावेगा यह पूरा मृषावाद–असत्य वचन है, । १० । चोरी । जब ईशा गूलरके फल खाने गयाथा तब गूलरके स्वामीकी आज्ञा न लेनेसें चोरी करनी सिद्ध होती है तथा भूतोंको निकालके ईशाने भूतोंको सूयरोंके झूडमें प्रवेश करा दीया तिससें सर्व सूयरोंका झुंड समुद्रमें डूब मरा, इसमें सूयरोंके स्वामीकी परवानगी विना सूयरोंको उपद्रव करा तिससें प्रगट अदत्तादान सिद्ध होता है, । ११ मत्सर–ईर्षा तो बहुत जगें लिखि है १२ भय तो जब कहा के यह कटोरा मेरे

पाससें टल जाये इसीसेंही सिद्ध हो जाता है। १३ प्राणिवध ४ अर्थात् जीवहिंसा यह तो ईशाने खुद आपही करी है। सो ऐसे है, ॥ तब भूत ग्रस्त मनुष्य कब्रस्थानमेसें निकल उससे आ मिलें. जो यहां लों अति प्रचंड थे कि उस मार्गसें कोई नहीं जा शकता था. और देखो उन्होंने चिल्ला के कहा. हें इशु ईश्वरके पुत्र! आपको हमसें क्या काम? क्या आप समयके आगे हमे पीडा देनेको यहां आयेहै. सो भूतोंने उससे विनति कर कहा. जो आप हमको निकालतेहैं. तो सूअरोंके झुंडमें पैठने दीजिये. उसने उससें कहा जाओ. और वे निकल कर सूअरोंके झूंडमें पैंठे और देखो सूअरोंका सारा झूंड कडाडे परसें समुद्रमे दोड गया. और पानीमें डूब मरा. ॥ इ० म० । (बाब) प० ८ । आ० २८ । २९ पत्र १९ । ३० । ३१ । ३२ । ३३ ॥ उपरके लेखसें यह सिद्ध होताहै कि इशाने विना गुनाहके बिचारे सुयरोंके झूंडको समुद्रमें डूबवाया–प्राणिवध करा । १४ इसामसींहनें भूतोंका मन शुद्ध न करा? सो क्या इशा समर्थ नही था?

भला कहो मरे हुए भी फेर कबरस्थानसें निकल शकतेहैं २ एकका अछा करना और एकका बुरा करना विनाही अछे बूरेके करे यह क्या ईश्वर दयालु न्यायी निरपक्षी रागद्वेष रहितका कामहैं ३ सुयरोंको विना गुनाहके मरवा डालना ४ सुयरोंके स्वामीके विना गुनाहके मालका नष्ट करना ५ भूतोंको पापी जानके सजा न करनी यह क्या न्यायहै ५ तथा ऐसे दूखदाइ पापी भूतोंका समूलसें नाश न करना इसमें क्या कारण था। ६ इत्यादि अनेक असमंजस वाते करी सहितकों परमेश्वर तथा परमेश्वर पुत्र तथा पवित्र आत्मा सर्व समर्थ मानना बहुतही माननेवालेकी भूल है। प्रेम अर्थात् राग यहभी इशामसींहमें था जिनने अछा करा तिनके ऊपर राग और जिनने तिरस्कार करा तिनके उपर द्वेषथा तथा जिनकों क्रुद्ध मानहो के दोजकमें भेजेगा तिन ऊपर द्वेष जिनको स्वर्ग पहुंचावेगा तिन ऊपर राग सिद्ध होताहै। जो कभी राग द्वेष नहोता तो प्रथमही प्रजाकों पापी न होने देता। अथवा जबसें आदमकी उह्लाद पापी हूइथी तबही

कुमारीके पेटसें जन्म लेके ऊपदेश करना था. जिस्से जडहीसें काम न विगडता और लाखों करोडो जीव इसासें यह ले पापी न होते और इशाकों लोकोंके बदले शूली न चडना पडता ॥ १५ क्रीडा करनी सो इशा जब गर्दभ ऊपर चडके गांवमें फिरताथा सो सिद्धहीहै, स्त्रीका प्रसंग इशाने नही करा, इस बातको तो हमभी अछी मानतेहै, चाहो कोइ पुरुष स्त्री किसी जातिवाला क्यों न हो. जो इछा निरोध पूर्वक शील पाले सो पुरुष श्रेष्ट गिना जाताहै, ऐसे ऐसे लोक बहुत मतोमें और बहुत जातियोंमे अबभी मिल शकतेहै, परंतु केवल एकही गुणसें इश्वर नही कहा जाताहै, । १७ हास्य–हसना जहां रति अरति शोकादि होवेगे तहां हास्य तो अवश्यमेवही होताहै, । १८ ये अठारह दूषणवालेकों जगत तारक इश्वर इश्वर पुत्र पवित्रात्मा इश्वरावतार इश्वर अंश अरिहंत तीर्थंकर कदापि कोइ सुज्ञ पुरुष न मानेगा, जो कभी जैनमतके शास्त्रानुसार कोइ पुरुष जैनमतके किसी तीर्थंकरमें केवल ज्ञान हुए पीछे जब उनोंने उपदे-

करे तिस अवस्थामें अठारह दूषणोंमेसें एकभी दूषण सिद्ध कर देवे तो हम तिसको कभी अरिहंत न मानेगे, और जिस मतके इश्वर इश्वरावतार इश्वर पुत्रमें ये अठारह दूषण होवेंगे तिसकोंभी ईश्वरावतार इश्वर पुत्र न मानेगे, इसी तरह सर्व मतोवालोंकुं मानना चाहिये, क्योंकि पूर्वोक्त अठारह दूषणोवाला कदापि इश्वरावतार इश्वर पुत्र नही सिद्ध हो शक्ताहै। तथा इसामसीह परमेश्वर वा परमेश्वरका अवतार वा परमेश्वरका पुत्र था वा नही, ? इस वातका निर्णय विशेष करके करतेहै। इशा परमेश्वर नही था. क्योंकि जो कभी परमेश्वर होता तो स्त्रीके गर्भमें काहेको आता? विनाही गर्भके क्या परमेश्वर इशाका रूप नही कर शक्ता था? तथा विनाही इशाके रूप धारे क्या? लोकोंका मन शुद्ध नही कर शक्ता था? तथा जब जीव प्रथम पापी होने लगे थे तबही पाप बुद्धी जीवोंकी नही दूर कर शक्ता था? तथा इंजील मत्तीमें इशु खिस्तिका जन्म ऐसे लिखाहै,। उसकी माता मरियमकी युसफसें मंगनी हुइथी पर उनके एकठे होनेके

पहिलेंही वह देख पडी कि पवित्र आत्मासें गर्भवतीहै, देखो परमेश्वरके एक दूतने स्वप्नमे उसें दर्शन दे कहाहै, दाऊदके संतान युसफ-तुं अपनी स्त्री मरियमको यहां लानेसें मत डर, क्यों कि उसको जो गर्भ रहाहै सो पवित्र आत्मासेंहै, । इंजील पर्व १ आयत १८। २० पत्र २॥ जब परमेश्वरसें गर्भ रहा तब इशा परमेश्वर न हुआ। जो कभी इश्वर आप गर्भमें आता तो दूत ऐसे कहता कि परमेश्वरही खुद आप गर्भमें आयाहै, इस वास्ते इशा परमेश्वर नहीथा, । तथा इशाइयोंका परमेश्वर सर्वज्ञ नहीथा और इशा परमेश्वर नही था॥ तब आत्मा इशूकों जंगलमें ले गया कि शैतानसें उसकी परीक्षा की जाय वह चालीस दिन और चालीस रात उपवास करके पीछे भूखा हुआ तब परीक्षा करनेहारेने कहा कि जो तुं इश्वरका पुत्रहै तो कहदे कि ये पथ्थर रोटीयां बन जावें ॥ इं० प० ४ आ० १।२।३। पत्र ८ इससें स्पष्ट होताहै कि इशाइयोंका इश्वर सर्वज्ञ नही क्यों कि जो सर्वज्ञ होता तो उसकी परीक्षा शैतानसें क्यों कराता? आपही जान लेता।

और परमेश्वर इशाके स्वरूपमें भी नहीथा, जो कभी परमेश्वरही इशा बना होवे तब तो क्या परमेश्वरनें अपनी परीक्षा शैतानसें करवाइ और परमेश्वरकों अपनी परीक्षा करानेकी क्या जरूरथी क्या परमेश्वर खोटे खरे संशय युक्त रूपइये सरीखा था कि बजारमें चलता नही था इस वास्ते शैतानसें परीक्षा करवाइ ? तथा हरएक जो मुझसें हे प्रभु २ कहताहै स्वर्गके राज्यमें प्रवेश नही करेगा । इंजील । पर्व ७ आ० २१ । पत्र १२ इस लेखसें स्पष्ट सिद्ध होताहै कि इशा परमेश्वर वा परमेश्वरका अंशावतार भी नही था, । अब जो इशाइ लोक इशाकों प्रभु २ वा इश्वर कहतेहै वे भूल खातेहै क्योंकि इशा आपही मना करताहै कि मुझकों प्रभु कहनेसें तुमारी हानी होगी, । तथा इशा किसीको स्वर्ग और किसीकों नरक देने समर्थ नही था, किंतु जैसे २ जीव शुभाशुभ पुण्य पाप करतेहै तिनके अनुसारही सुख दुःख रूप फल मिलताहै यह कथन श्री अरिहंत परमेश्वरकाहै, इस अरिहंतके वचनामृतका स्वाद किसी निमित्तसें इशामसीहनेभी

चाखा मालूम होताहै, तिससेंही इशाके मुखसें ऐसा उपदेश निकला, ॥ और तब वह हरएक मनुष्यकों उसके कार्य्यके अनुसार फल देगा। इंजील। मत्ती पर्व १६ आयत। २७। ३२ जब कर्म्मानुसार फल दिया जायगा तो इशायीयोंका पाप क्षमा होनेका उपदेश करना व्यर्थहै,। और जब कर्मानुसारही फल मिलताहै, तब जो जीव इशाइयोके मतानुसार अब संसारमें उत्पन्न होतेहै, तिनमें कितनेक जीव कंगाल दरिद्री धन हीन दुःखी अंगहीन इंद्रियहीनादि कामो संयुक्त माता पिताके घरमें जन्म लेतेहै. और सदा कंगाल इंद्रिय अंगहीन रोगी सदा भूख तृषादि दुःख सहनेसें महा दुःख भोगतेहै,। और कितनेक राज्यभोग धन स्त्री पुत्र परिवार निरोग्य बलिष्ट सुंदररूपादि संपदासे सुख भोगतेहै। इशाइयोंहैके मतानुसार इन जीवोनें पूर्व जन्ममें अछा बुरा कार्य्य तो कुछ भी करा नहीहै, तो फिर विनाही कारण दुःखी करना यह कोइ दयालु न्यायी निरपक्षी इश्वरका काम है? और ऐसा काम करनेसें इश्वरके पूर्वापर वच-

नका व्यभघात नही होवेगा ? ॥ अपितु होवेहीगा । इस वास्ते इशा परमेश्वर वा परमेश्वरांश नही सिद्ध होताहै । तथा इशा परमेश्वर सर्व समर्थ पाप दूर करने समर्थभी नही मालूम होताहै ॥ इस लेखसे । यीशु अध्यक्ष आगे खडा हुआ. और अध्यक्षने उससे पूछा क्या तुं यहूदिओंका राजाहै. इशू ने उससे कहा आप हो तो कहतेहैं. जब प्रधान यालक और प्राचीन लोग उसपर दोष लगातेथे, तब उसने कुछ उत्तर नहीं दीआ. तब पिलातने उससें कहा क्या तुं नही सुनता कि ये लोग तेरे विरुद्ध कितनीक साक्षी देतेहें, परंतु उसने एक वातका भी उसको उत्तर न दीया. यहां लों कि अध्यक्षने बहुत अचंभा कीया, पिलातने उनसें कहां तो में इशूसे जो रव्रीष्ट कहाताहै. क्या करुं सभोंने उससे कहा वह क्रूशपर चढाया जावे. और इशूको कोर्डे मारके क्रूशपर चढा जानेको सौंप दीया तब अध्यक्षके योधाओंने इशूको अध्यक्ष भुवनमें ले जाके सारी पलटन उस पास इकट्ठी की और उन्होंने उसका वस्त्र उतारके उसे लाल बागा पहिराया.

और कांटोका मुकुट गुन्थके इसके शिरपर रक्खा और इसके दहिने हाथपर नर्कट दीया, और इसके आगें घुठने टेकके यह कहके इसे ठठ्ठा कीया, हे यहूदिओके राजा प्रणाम, और इन्होंनें इसपर थुका. और इस नर्कटको ले, इसके शिरपर मारा, जब वे इससे ठठ्ठा कर चुकें तब इससें वह बागा उतारके मसीहका वस्त्र पहिराके इसे क्रूशपर चढानेको ले गये जब वे एक स्थान पर जो गल गयाथा. अर्थात् खो पडीकास्थान कहाताहैं. पहुंचे तब उन्होंने सिर्कोमें पित्त मिलाके. उसें पीने को दीया. परंतु इससे चीखके पीना न चाहा. तब उन्होंने उसे क्रूशपर चढाया और उन्होंने उसका दोषपत्र उसके शिरके उपर लगाया. तब दो डाकू एक दहिनी और दूसरा बाइ और उसके संग क्रूशोंपर चढाये गये, जो लोग उधरसें आते जातेथे. उन्होंने अपने सिर हिलाके और यह कह कर. उसकी निंदा की हे मंदिरके ढाहने हारे अपनेको बचा जो तूं ईश्वरका पुत्रहै. तोक्रूश परसे उतर आ. इसी रीतिसें प्रधान याजकोनेभी अध्या-

पकों और माचीनों के संगियोने ठट्ठाकर कहा. उ-
सने ओरोको बचाया. अपनेको बचानही शकताहै.
जो वह इस्राएलका राजाहै, तो क्रूशपरसें अब उतर
आवे, और हम उसका विश्वासकरेगें. वह ईश्वरपर
भरोसा रखताहै, यदि ईश्वर उसको चाहताहै, तो
उसको अब बचावे, क्योंकि उसने कहा में ईश्वरका
पुत्रहूं, जो डाकु उसके संग चढाये गये, उन्होंने भी
इसी रीतिसें उसकी निंदा की, दो पहेरसें तीसरे प-
हेर लों सारे देशमें अंधकार हो गया. तीसरे पहेरके
निकट इशूने बडे शब्दसे पुकार के कहा एली एली
लामा सबक्तनीहूं. अर्थात् हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर
तूंने क्युं मुज त्यागाहैं. जो लोग वहां खडेथे उनमें
से कितनोंने यह सुनके कहा, वह एलियाहको बुला-
ताहै. उनमें एकने तुरत दोडके इसपंज लेके सिर्केमें
भिगोया. और नलपर रखके उसे पीनेको दिया.
तब इशूने फिर शब्दसे पुकारके माण त्यागा. ई०
म० प० २७ । आ । ११ । १२ । १३ । १४ ।
२२ । २३ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ ।

३० । ३१ । ३३ । ३४ । ३७ । ३८ । ३९ । ४० ।
४१ । ४२ । ४३ । ४४ । ४५ । ४६ । ४७ । ४८ ।
४९ । ५० । इस लेखको वांचके हम बहुत दया क-
रुणार्द्रित चित्तवाले होतेहै कि देखो तिस देशके कैसें
अनार्य निर्दय लोकथे कि जिनोनें विचारे इशाकों
नाहक दुःखी करके उसके प्राण लीये. परंतु हे मित्र
इस लेखसें ईशा परमेश्वर वा परमेश्वर पुत्र वा परमे-
श्वरांशावतार वा परमेश्वरका भेजा हुआ दूत वा सर्व
समर्थ करामातवाला नही सिद्ध होता है क्यों कि जो
कभी ईशा पूर्वोक्त विशेषणोमेसें एक विशेषण करके
भी संयुक्त होता तो इस तरह क्यों मरता ? और शूली
देनेवाले अन्याइयोकुं इहांही दंड न देशका तो आगे
परभवमें क्यों कर दंड देगा ? और अन्याईयोंका
मत शुद्ध न करशका २ ईशा तो पापी नही था तो फेर
शूली चढा तो क्या विना शूलीके चडे पाप हर नही
करशक्ता था ४ क्या सर्व भक्तोंका इतनाही पाप
था ? जो एक वार शूली चढनेसें नष्ट हो गया. ५
क्या ईशाने पापका फल आपने आप भोगा अथवा

परमेश्वरनें भुक्ताया? जो कभी आपही भोगा तब आर्त्त ध्यानके सद्ध फाहको करे. ६ दूसरेका पाप अन्य कोइ भोगे यह अत्यंत असंभव और असमंजसहै ।७ जो कभी परमेश्वरने शूली दीया तब तो परमेश्वरने बडा भारी अन्याय कीया. क्यों कि ईसा तो पवित्र आत्मा था, तिसकों क्यों शूली दीया ८ जो कभी भक्तोंके पापोंके बदले ईशाकों शूली दीया तो ईशेके बदले परमेश्वरकों आप शूली चढना चहिताया. क्योंकि जैईशा भक्तों ऊपर दयालु परोपकारीया. तिससे तो परमेश्वरको ईशा ऊपर वहुत दयाकरनी चाहितीथी. ९ तथा ईशाने तो बडी हिम्मत करी जो भक्तोंका शूली चडके आप भोगा परंतु तुमारे ईश्वरसे कुछभी न बनसका के ईशेके पाप क्षमा कर देता, वा ईशेके बदले आप शूली चढ जाता. वा उन भक्तोंके पाप क्षमा करके इशूकों शूलीके दुखसें बचालेता, वा उन शूली देनें वालोंका मन फिरा देता. वा शूलीकों गुम्म कर देता. वा शूलीकों भस्म कर देता. वा ईशेकों तिनके हाथसे छुडाके ले जाता, वा शूली देने

वालोंके हाथ पग तोड देता, वा ईशेके वैरीयों मार देता. इतने कामोमेसें कोइभी काम नही कर सका तो फेर क्या। जाने ईशाइ परमेश्वरको क्योंकर सृष्टिकाहर्त्ता कर्त्ता सर्व समर्थवाला मानतेहै.। १० तथा ईशाइ लोक पिता १ पुत्र २ पवित्रात्मा ३ ये तीन कहतेहै परं वास्तव्यमें ईशाकों १ पिताकों २ पवित्रात्माकों। इन तीनोंकों एकंही परमेश्वर मानतेहै। जब अैसे है तबतो जो जो अवश्य ईशामसींहकी हूइसो सर्व परमेश्वरके साथही वीती तबतो परमेश्वरही मरियमके गर्भमे उत्पन्न हूआ १ और चालीस दिन भूखा रहा २ शैतानसें अपने आपकी परीक्षा करवाइ ३ थक गया ४ भूख लगी ५ गूलरके फलका ज्ञान न हूआ ६ गूलरकों वेगुनाहके शाप दीया ७ जानके मरनेवाले गाममें गया ८ शूलीसें न उतरसका ९ दुखी होके प्राण त्यागे १० इत्यादि अत्यंत असमंजस काम करनेवालेकों बुद्धिमान् क्योंकर परमेश्वर मानेगा परंतु जंगली अविद्वान् तो कोइ मानभी लेवेगा परंतु जैनमती अरिहंतका उपासक तो अैसेकों स्वप्नमेंभी ईश्वर वा ईश्वर पुत्र नही

मानेगा ॥ इत्यादि अनेक ईंजीलके लेखोंसें इशामसीह परमेश्वर वा परमेश्वरका पुत्र वा करामाती सिद्ध वा सच्चे धर्मका उपदेशक सिद्ध नही होताहै.

और जो जैनमतमें अरिहंत माना जाताहै तिसमें पूर्वोक्त १८ अठारह दूषणोमेंसें एकभी दूषण नही था तथा अन्य जो जो दूषण ईंजील मत्ती रचित के लेखंसें ईशामसीहमें पाये जातेहै वे सर्व दूषणोंमेंसें एकभी जैनमतके शास्त्र लेखसें नही पाया जाताहै, क्योंकि जैनमतमें २४ चौवीस अरिहंत तीर्थंकरोंके इतिहास जन्मसें लेकर निर्वाण पर्यंत लिखेहै, तिनसें एकभी पूर्वोक्त दूषणोंमेसें दूषण अरिहंतोमें नही सिद्ध होताहै । और ये चौवीस इस अवसर्पिणिके अरिहंत सर्वज्ञ सर्वदर्शीथे, और काम क्रोध राग द्वेष मोह करके वर्जितथे, चौतीस ३४ अतिशय और पंचत्रींस ३५ वचनातिशय करके संयुक्तथे। और गृहस्थावासमेंभी। शिष्टजनोचितकाम करतेथे और: दीक्षा लिये पीछे महानोग्र जप तप संयम शील संतोष धर्म ध्यान शुक्ल ध्यानरूप साधन करके चार घातिकर्म

अर्थात् ज्ञानावरण १ दर्शनावरण २ मोह ३ अंतराय ४ इनचारोंका क्षय करके निर्मल केवल ज्ञानादि रिद्धि प्रगट हूइ. तब अरिहंत तीर्थंकर भगवंत हूए सर्व सुरासुर नरेंद्रादिकोंके पूज्यनीय हूए. तब भव्य जनोकुं तारनेके वास्ते साधुयोंको पंच महाव्रत रूप अर्थात् जीवहिंसा १ असत्य वचन २ चोरी ३ स्त्रीका संग ४ परिग्रह धनादि ५ त्यागरूप धर्म तथा दश प्रकारका यति धर्म। क्षमा करणी १ निर्लोभता २ सरल—कपट रहित ३ मार्दव—अभिमान रहित ४ लाघव—थोडे उपकरण रखने ५ सत्य बोलना ६ संयम पालना ७ तप—बार भेदसें तपकरणा ८ साधुयोंकी दानादिकसें भक्तिकरणी ९ नव गुप्ति संयुक्त शील पालना १० तथा करण सत्तरि ७० चरण सत्तरि ७० तथा अठारह सहस्र शीलांग धारण करणा, बैतालीस ४२ दोष वार्जित भिक्षा लेनी, शांत इंद्रिय दमनादि बहुत भेदसें साधुका धर्म कहा, और सम्यक्त पूर्वक द्वादश व्रत १२। तथा एका दश प्रतिमादि गृहस्थका धर्म कथनकरा, । श्री अरिहंत समान सत्य मार्गका

उपदेष्टा तथा अरिहंतके समान सर्वज्ञ और राग द्वेष मोहादि दूषणोंसें रहित देव तथा अरिहंत समान धर्मको कथन करनेवाला इस जगतमें कोइभी देव नही हूआ, और इस कथनमें प्रमाण यहहैकि सर्व मतों के पुस्तक मिलाके देख लेना. तब सर्व मालूम हो जावेगा पवित्र देव पवित्र सत्य धर्मका कथन करनेवाला कौन हूयाहै. ईस अवसर्पिणि कालमें प्रथम आदि अरिहंत श्रीऋषभदेवने शुद्ध धर्म कथनकरा तैसेंही सब तीर्थंकरोंने कथनकरा. परंतु अज्ञलोक मत्सरीयोने सच्चे देवोका कथन छोडकर अन्य अन्य अवतार ईश्वर पेगंबरादि कल्पना करके खडे करेहै, तिनके कथन निर्दोष नहीहै, तोभी लोक अपने बडबडेरोंकी तथा अपने देश मुलककी रूढीको पीटे जातेहै सत्य धर्मका कोइ पुण्यात्मा खोज करताहै, ऐसे निर्दोष सर्वज्ञको छोडके सदोष देवको मानना यह बुद्धिमानोंका काम नहीहै. इसाइ लोक अपणे भोले पणसें पूर्वोक्त सर्वोपाधि शुद्ध सर्वज्ञ अरिहंतको छोडकर एक सामान्य पुरुष इसामसीहको परमेश्वरका पुत्र

मान कर भूलमें पडतेहै। क्योंकि पूर्वोक्त इंजीलके लेखसें इशामें किंचित् मात्रभी इश्वर सत्ता सर्वज्ञ समर्थ सच्चे धर्मका उपदेशकपणा सिद्ध नहीहै, फेर भी इशाइलोक अपना कदाग्रह नही छोडतेहै, और लोकोंको कहेतेहै अमूल रत्न छोड कर काचका टुकडा ले लो, कोइ अत्यंत अज्ञानी जैनमती होगा जो इनका कहना मानेगा, इस पूर्वोक्त सर्व लेखसें नमो अरिहंताणं। यह नमस्कारका प्रथम पद यथार्थ उपास्य और सत्यहै, इस पदकों त्यागके इसकी जगे इशामसीहकों मानना प्रेक्षावानोंका लक्षण नहीहै। इति प्रथम पद॥ तथा नमो सिद्धाणं। यह दूसरा पदहै तिसका स्वरूप लिखतेहै। सिद्ध उसकों कहतेहै, जिसके सर्व कार्य सिद्ध हो गयेहैं, और ज्ञानावरण कर्मके और दर्शनावरण कर्मके क्षय होनेसें सर्वज्ञ १ सर्व दर्शीहूएहै २ और वेदनीय कर्मके क्षय होनेसें। कर्म जन्य सुख दुःख जिसकों नहीहै; परंतु आत्मानंद सहजानंदरूप अनंत सुखहै ३ और मोहके क्षय होनेसें क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ राग ५

द्वेष ६ राति ७ अराति ८ शोक ९ हास्य १० भय ११ जुगुप्सा १२ स्त्री वेद अर्थात् स्त्रीपणा १३ पुरुषपणा १४ नपुंसकपणा १५ ये तिनोमें नही-इत्यादि दूषणोंसें रहित हुएहै ४ और आयु कर्मके क्षय करनेसें । सदा अमर हुएहै । ५ नाम कर्मके क्षय करनेसें जितनी देहकी अवस्था और चार गतिकी देह धारण करनी तथा तिस नाम कर्मके एकसौ १०३ तीन भेद क्षय करनेसें जितने संसारावस्थाके रूपहै तिन सर्वसें रहित हुएहै, । ६ और गोत्र कर्मके क्षय करनेसें तिनमें ऊंच नीचपणा नहीहै, ७ और अंतराय कर्मके क्षय करनेसें सर्व विघ्न दूर हुएहै ? तब सिद्ध भगवंत होतेहै. । एक सिद्धकी आदि तोहै, परं अंत नहीहै सर्व सिद्धोंकी अपेक्षा तो अनादि अनंतहै, । सिद्ध १ बुद्ध २ मुक्त ३ निरंजन ४ निर्विकार ५ कैवल्परूप ६ अजर ७ अमर ८ शुद्ध ९ अज १० अलख ११ परमेश्वर १२ परमात्मा १३ इश १४ परमब्रह्म १५ पारंगत १६ परंपरग १७ भगवंत १८ अदेही १९ अकर्मी २० अयोनी २१ इत्यादि अनंत नामोसें कहे

जातेहै, । और सिद्ध होना इसीकों जैनमतमें मुक्त होना कहतेहै, ये सिद्ध सर्वस्व स्वरूपानंदीहै. व्यक्तीकी अपेक्षा सिद्ध अनंतहै और सामान्यरूप करके एकहै, । इससे मान्याशकों अवलंबके मतधारीयोंने एक इश्वर मानाहै । और तिस इश्वरकोही जगतका कर्त्ता मानाहै, परं पूर्वोक्त स्वरूपवाला इश्वर इस जगतका कर्त्ता और नियंता नही सिद्ध होताहै, इसकी चर्चा आगे चलके लिखेगें, और जो जो वस्तु इस जगतमें अनादिहै, तिनका कर्त्ता तो कोइ भी नहीहै, और कार्यरूप वस्तुका जो कर्त्ताहै । और जिसकों मतलबी कर्त्ता इश्वर मानतेहै, तिसका भी स्वरूप आगे लिखेंगे ॥ यहां प्रथम जो ईशाइयोंमें परमेश्वर जगतका कर्त्ता मानाहै तिसकी परीक्षा इशाइयोंकी बैबलहीसें करतेहै, सो सर्व सुज्ञ जन जानेंगे के इशाइयोंका माना हुआ सच्चा परमेश्वरहै वा नहीं, परमेश्वरका स्वरूप जो इशाइयोंके शास्त्रमें लिखाहै, वो सत्यहै वा इशाइयोंके परमेश्वरकी हानिकारकहै ॥ और इशाइयोंकी पुस्तकोंमें जो सृष्टिकी उत्पत्ति लि-

खींहे सो सत्यहै वा मिथ्याहै, । वदासकी किताब १ आरंभमें इश्वरनें आकाश और पृथिवीकों सृजा । और पृथिवी बेडौल और शून्यथी, । और गहिराव-पर अंधियाराथा, और इश्वरका आत्मा जलके उपर डोलताथा, । पर्व १ आयत । १ । २ । ७—इस ले-खकों विचारो । इसमें जो आकाशका बनाना लिखा है सो असत्यहै । क्योंकि आकाश सर्व व्यापी अति सूक्ष्म पदार्थहै। और ऊपर नीचे एकसाहै,। जब आ-काश अर्थात् पोल नहीथा, तब इशाइयोंका परमेश्वर कहां रहताथा ? क्योंके विना आकाशके कोइ वस्तु रह नही सकतीहै, और जो इश्वरका आत्मा जल उ-पर डोलताथा तो विना आकाशके जल कहां रहता-था ? और इश्वर जल ऊपर किस वास्ते डोलताथा ? क्या जलकों मापताथा कि जल इतनी दूरमेंहै ? वा इश्वरको गर्मी लगतीथी ? जो पानीके ऊपरकी ठंडी पवनमें डोलताथा, २ अथवा कोइ वस्तु जाती रहीथी तिसके खोजमें डोलताथा, ३ वा स्मृतिभ्रंस होनेसें अपने रहनेकी जगा ढुंढताथा, ४ तथा पृथवी बेडौल

रची, क्या इश्वरसें पृथिवी डौलसर नरची गई ५ तथा पृथिवी आकाशादि पदार्थोंका उपादान कारण नहोथा तो इश्वरनें किसतरे जगत रचा ? ६ । जो कभी ईश्वरही उपादान कारण हुया, तब तो जो कुछ जगतमेंहै—अछा और बुरा सो सर्व इश्वरकाही रूप हुआ, तो फिर पापी धर्म्मी कौन चोर यार कौन ? इशा इश्वरका पुत्र, तो हम क्यों नहीं ? इशा पवित्र तो हम पवित्र क्यों नहीं ? जो अन्य मतवाले नरकमें जायेगें तो इश्वर क्यों नहीं जायगा ? इश्वर सर्व समर्थ सर्वज्ञ कर्त्ता मालिक न्यायकर्त्ता तो हम क्यों नहीं ? ७ जो कभी इस जगतका कारण जड चेतन अनादिहै तो विना आकाशके कहां रहतेथे ? ८ इश्वरने जब जगत नहीं रचाथा तब इश्वरके क्या हानी और रचनेसें क्या वृद्धि हुइ ? ९ जो कभी इश्वर एकदुःखीथा, जैसें वेदोमें लिखाहै 'एको न रमते' । तब इश्वर सृष्टि रचनेसें पहिला महा दुःखीथा ऐसा सिद्ध होवेगा. १० जब इश्वरमें सृष्टि रचनेकी शक्तिथी तो इतने काल तक एकला दुःखी क्यौं बैठा रहा ? ११

जो कभी इश्वरनें क्रीडा करनेके वास्ते जगत रचा तब तो इश्वर रागवान् बालकवत् हुआ, और यह क्रीडा-जन्य सुख इश्वर एकलेकु नहींथा तब महा दुःखी सिद्ध होवेगा. १२ जो कभी इश्वरने कृपा करके सृष्टि रची होवे तब तो सर्वकों सुखीही रचनाथा. १३ जो कभी सुखी दुःखी विना पुण्य पापके रचेहै तब तो इश्वर न्यायी सिद्ध नहीं होताहै १४ निरपक्षी सिद्ध नहीं होताहै १५ वीतराग नहीं सिद्ध होताहै १५ विना जड चेतनकी सामग्रीके कदापि जगत नहीं उत्पन्न हो सकताहै, जो कभी कोइ कहे इश्वर १ जगतका का-रण जड २ चेतन ३ और आकाश ४ ये चारों अ-नादिहै, इश्वर जड चेतनरूप सामग्रीसें जैसे २ जी-वोंके पूर्वोपार्जित पुण्य पापहै, तैसे २ रच देताहै, रचके कितनेक काल पीछे प्रलय करताहै, फिर रच-ताहै, और फिर प्रलय करताहै । इस तरें अनादि अनंत व्यवहार चला जायगा. इसका उत्तर—जब इश्वर सदा जगतकी रचना और प्रलय करताही रहताहै इसमें इश्वरकों क्या लाभहै ? । १ सदा सृष्टि रचना

और प्रलय करनेसें क्या इश्वर जगतवासी जीवोंका चाकरहै ? जो सदा उनका बिछोना बिछाता और फिर उठाताहै २ और तुम इश्वरकों सर्वव्यापी मानते हो, जो वस्तु सर्वव्यापी होतीहै, सो कुछ भी क्रिया नहीं कर सकतीहै, जैसें आकाश. इस वास्ते तुमारा इश्वर अक्रिय अकिंचित् करहै, एक तृणभी नहीं तोड सकताहै, तो सृष्टि कैसे रच संकेगा ? ३ जो कभी इश्वर अपनी इच्छासें सृष्टी रचताहै तो सो इच्छा इश्वरसें भिन्नहै १ वा अभिन्नहै । २ । जडहै १ वा चेतनहै २, नित्यहै वा १ अनित्यहै, रूपीहै १ वा अरूपीहै २, अनादि अनंतहै १ अथवा अनादि शांतहै २, वा सादि अनंतहै ३ वा सादि शांतहै ४, इश्वरमें सर्वगतहै १ वा देशगतहै २, सक्रियहै १ वा निःक्रियहै, इश्वरके साथ इच्छाका समवाय संबंधहै, १ वा संयोग संबंधहै २, वा स्वरूप संबंधहै ३, वा तादात्म्य संबंधहै ४, इच्छा कर्म अर्थात् पुण्य पापसें इश्वरमें उत्पन्न होतीहै १ वा स्वभावसे उत्पन्न होतीहै २, इच्छा एकही स्वरूपवालीहै १ वा अनेक स्व-

रूपवालीहै २, इश्वर इच्छाके अधीनहै कि १ इच्छा इ-श्वरके अधीनहै २, इच्छाकी उत्पत्तिमें इश्वर उपादान कारणहै १ वा निमित्त कारणहै २, इच्छा गुणहै १ वा गुणीहै २, इच्छा आधेयरूपहै १ वा आधारहै २, इच्छा जन्म स्वभाववालीहै १ जनक स्वभाववालीहै २, इच्छा प्रेरकहै १ वा प्रेर्यहै २, ये सर्व बत्तीस विकल्पहै, इनका जो उत्तर देवे तिसका इश्वर जरूर सृष्टीका रचनेवाला कदाचित् कोइ मानभी लेवेगा, जो कभी इन सर्व विकल्पोंका उत्तर न देवे तब तो तिसका कथन प्रमाणिक जनोंकी परषदामें कबीभी मान्य न रहेगा, जो कभी इच्छा इश्वरसें भिन्नहै तब तो इच्छा इश्वरसें अन्य पदार्थ हुआ, तब तो सृष्टि रचनेसें पहिला एक इश्वर अरु एक इच्छा ये दो पदार्थ सिद्ध हुए, तब तो जो यह कहनाहै कि सृष्टिसें पहिला एकला इश्वरहीथा अन्य कोइ पदार्थ नहींथा यह कथन मिथ्याहो जावेगा, १ जो कभी इच्छा इश्वरसें अभिन्नहै तब तो इश्वरहीहै इच्छा कहनी यह कथन मिथ्याहै, २। जो कभी इच्छा जडहै, और इश्वरसें भिन्नहै, तब तो सृष्टिसें पहिलां

दो पदार्थ सिद्ध हुए, एक इश्वर एक इच्छा जडरूप, ३ जो कभी इच्छा जडरूप इश्वरसें अभिन्नहै, तब तो इश्वर ही जड सिद्ध हुआ ४, जो कभी इच्छा चैतन्य और इश्वरसें भिन्नहै, तब तो सृष्टिसें पहिलां दो वस्तु सिद्ध हुइ, एक इश्वर चैतन्य, दूसरा इच्छा चैतन्य, तो फिर सृष्टिसें पहिलां एकही इश्वरथा अन्य कोइ नहींथा यह कथन महा मिथ्याहै ५ जो कभी इच्छा चैतन्य और इश्वरसें अभिन्नहै, तब तो इच्छाके उत्पन्न होनेसें इश्वर कीभी उत्पत्ति हुइ, और इच्छाके नाश होनेसें इश्वर-काभी नाश होना चाहिये ६, जो कभी इच्छा नित्यहै, तब तो सदा सृष्टिये नवी नवीन उत्पन्न क्यों नहीं होवेहै, ७ और एकांत नित्य किसीका प्रेरकभी नहींहै.८ जो कभी इच्छा अनित्य चेतन इश्वरसें अभेदहै, तब तो इच्छाकी उत्पत्ति होनेसें इश्वरकीभी उत्पत्ति होनी चाहिये, तब तो इश्वर और इछाकी उत्पत्ति वास्ते अन्य उपादान १ और निमित्त कारण अवश्य होने चाहिये, ९ जो कभी इच्छा नित्य और चैतन्य और इश्वरसें अभेदहै, तब तो इच्छा कहना मिथ्याहै, वो

तो इश्वरहीहै, १० जो कभी इच्छा अनित्य जड इश्वरसें अभेदहै, तब तो इश्वर जड और नाशवान् सिद्ध होवेगा, ११ जो कभी इच्छा नित्य जड इश्वरसें अभेदहै, तब तो इश्वर सदा जड सिद्ध होवेगा, १२ जो कभी इच्छा अनित्य जड इश्वरसें भिन्नहै, । तब तो इच्छाकी उत्पत्ति वास्ते उपादान कारण अनादि और इश्वरसें भिन्न सिद्ध हुआ, और फिर सृष्टिसें पहिलां एकही इश्वरथा, यह कथन मिथ्या सिद्ध होवेगा, १३ जो कभी इच्छारूपीहै, तब तो इश्वरसें भेद और जड सिद्ध हुइ, तब पूर्वोक्त दूषण होवेगा, १४ जो कभी इच्छारूपी और इश्वरसें अभेद चैतन्यहै, तब तो इश्वरही हुआ नतु इच्छा, १५ जो कभी इच्छा अरूपी इश्वरसें भेद चैतन्यहै, तब तो मृष्टिसें पहिला इश्वर १ और इच्छारूप चैतन्य २ ये दो सिद्ध होवेगें, १६ जो कभी इच्छा अरूपी इश्वरसें भेद जडहै, तब तो इच्छा अरूपी जडरूप इश्वरसें भिन्न पदार्थ आकाशवत् सिद्ध होवेगा, तब तो सृष्टिसें पहिला एक इश्वर सिद्ध नहीं होताहै १७ जो कभी इच्छा अरूपी इश्वरसें अभेद जडहै तो

इश्वर जड सिद्ध होवेगा, १८ जो कभी इच्छा अनादि अनंतहै. तब तो इश्वरकी रची हुआ सिद्ध नहीं होतीहै, १९ जो कभी इच्छा अनादि शांतहै, तोभी इच्छा रची सिद्ध नहीं होतीहै, २० जो कभी इच्छा सादि अनंतहै, तब तो इच्छाका उपादान कारण इश्वर ठहरा, तब तो इश्वरभी सादि अनंत हुआ और सदा सृष्टियें उत्पन्न होती रहेंगी, २१ जो जभी इच्छा भेद सादि शांतहै, तब तो इश्वरभी सादिशांत हुआ, २२ इश्वर इच्छासें भेदहै, तो इच्छाका उपादान कारण कभी कोइ वस्तु नहीं सिद्ध होवेगी, २३ जो कभी इच्छा इश्वरमें सर्वगत नित्यहै, तब तो इच्छा इश्वरकी तरें अकिंचित करहै, क्योंकि जो एकांत नित्य सर्वगत होताहै, सो कोइ भी काम नहीं कर सक्ताहै, । सर्वव्यापी अवकाशके अर्थात् जगाके अभावसें किंचित् मात्रभी क्रिया नहीं कर सक्ताहै, तथा जो एकांत नित्य होताहै तिसकी अवस्था भी नही बदलतीहै, और विना अवस्थांतरके हुआ कर्त्ता कदापि कोइ कार्य नहीं कर सकता होवेगा, इस वास्ते इच्छा इश्वरमें सर्वगत

नित्य अभेद अथवा सर्वगत नित्य भेदभी सिद्ध नहीं होतीहै, । २४ जो कभी इच्छा इश्वरके एक देशवर्त्ती नित्य अभेदहै, यह तो होही नहीं सक्ताहै, क्योंकि अभेदपणा और एक देशवर्त्ती नहीं हो सक्ताहै, जो कभी भेद हो कर इच्छा एक देशवर्त्तीहै, तब तो मृष्टिसें पहिलां इश्वर एक सिद्ध नहीं होताहै, २५ जो कभी इच्छा भेद अनित्य रूपवाळी एक देशवर्त्तीहै, तो इच्छाकी कदापि उत्पत्तिमें उपादान कारण कोइ नहींहै, इस वास्ते इच्छाकी उत्पत्ति नहीं हो सक्तीहै, २६ इच्छा सक्रियहै इश्वरसें अभेद नित्यहै तब तो सदा निरंतर नवीन २ संसारकी उत्पत्ति होनी चाहिये, सो तो होती नहींहै, २७ जो कभी इच्छा सक्रिय इश्वरसें अभेद अनित्यहै, तब तो इश्वरभी अनित्य होवेगा, तब तो इश्वरकी उत्पत्तिमें अन्य कोइ इश्वर इच्छा चाहिये, तहां भी अन्य इश्वरेच्छा होवेगी, ऐसें अनवस्था दूषण होवेगा, २८ जो कभी इच्छा अक्रियहै तब तो इश्वर इच्छासें कदापि संसारकी उत्पत्ति न होवेगी, २९ जो कभी इश्वरसें इच्छाका समवाय संबंधहै तब तो सृष्टिसें पहिलां

तीन पदार्थ सिद्ध हुए, एक इश्वर १ दूसरी इच्छा २ तीसरा समवाय संबंध करनेवाला, ३। तब तो जो यह कहनाहै कि सृष्टिसें पहिला इश्वरके विना अन्य कुछ भी सत् १ असत् नहीं था; यह कथन मिथ्याहै, ३० जो कभी इश्वर १ इच्छाका संयोग संबंधहै तब तो सृष्टिसें पहिला दो पदार्थ सिद्ध होवेंगे, और इश्वर १ इच्छाका संबंध आदि अंतवाला होवेगा, और जब इश्वरसें इच्छा अलगथी, तब निरिच्छक इश्वरके साथ इच्छाका संबंध किसनें करा ३१ जो कभी इश्वर इच्छाका स्वरूप संबंधहै तब तो इच्छाके सदा होनेसें जगतोत्पत्ति भी सदा होनी चाहिये; ३२ जो कभी इश्वर इच्छाका तादात्म संबंधहै, तब तो इच्छाकी उत्पत्ति होनेसें इश्वरकी भी उत्पत्ति और इच्छाके नाशसें इश्वरकाभी नाश होना चाहिये ३३ जो कभी इश्वर और इच्छा सदा रहेंगे, तब तो अपर२ जगतकी सदा उत्पत्ति होनी चाहिये, ३४ जो कभी इश्वरकु इच्छा पुण्य पापके उदयसें होतीहै, तब तो इश्वर पुण्य पापवाला सिद्ध होवेगा, ३५ जो कभी

इच्छा स्वभावसें उत्पन्न होतीहै-तब तो सदाही नवीन २ सृष्टियोंकी उत्पत्ति होनी चाहिये, और इच्छाके बदलनेसें इश्वरमें भी स्वभाव भेद होना चाहिये, और जो स्वभावका बदलनाहै सोइ पदार्थकी अनित्यताका हेतुहै, तब इश्वर अनित्य सिद्ध होवेगा, ३६ जो कभी इच्छा एक स्वभाववालीहै, तब तो नाना स्वभावकी सृष्टि उत्पन्न न होनी चाहिये, और जो कभी इच्छा सर्जन स्वभाववालीहै; तब तो इच्छासें प्रलय न होवेगी, जो कभी प्रलय स्वभाववालीहै, तब तो इच्छासें जगतोत्पत्ति नहीं होवेगी, ३७ जो कभी इच्छा अनेक स्वभाववालीहै तब तो उत्पत्ति १ और प्रलय २ ये दोनों परस्पर विरोधी स्वभाव एक इच्छामें नहीं रह सक्तेहै, ३८ जो कभी इश्वर इच्छाका उपादान कारणहै तब तो इच्छाही इश्वरहै और इश्वरहै सो इच्छाहै. ३९ जो कभी इश्वर इच्छाका निमित्त कारणहै, तब तो इच्छाका उपादान कारण कोइभी नहींहै, तिससें इच्छाकी उत्पत्ति नहीं हो सक्तीहै ४० जो कभी इच्छा इश्वरके अधीनहै, तब तो इच्छा किसी

हेतुसें उत्पन्न होनी चाहिये, परं इश्वरके विना अन्य कोइ कारणहै नहीं. ४१ जो कभी इश्वर इच्छाके अधीनहै, तब तो इच्छाही कर्त्ता सिद्ध होवेगी, नतु इश्वर. ४२ जो कभी इच्छा गुणहै तब तो इच्छाका नाश नहीं होवेगा; ४३ जो कभी इच्छा गुणीहै, तब दूसरा ईश्वर सिद्ध होवेगा. ४४ जो कभी इच्छा आधेयरूपहै, तब तो इश्वर सदा इच्छा संयुक्तही रहेगा. ४५ जो कभी इच्छा आधाररूपहै, तब तो इश्वरभी इच्छा सहितादि रूपवाला होवेगा. ४६ जो कभी इच्छा जन्य स्वभाववालीहै तो जगदुत्पत्ति नहीं होवेगी, ४७ जो कभी इच्छा जनक स्वभाववालीहै, तब तो इच्छा इश्वरसें उत्पन्न नहीं हुइ सिद्ध होवेगी, ४८ इसी तरेंके दूषण प्रेरक प्रेर्य स्वभावमें भी जान लेना ५० तथा जो कोइ मानताहै के इश्वर १ आकाश २ जीव ३ जगदुत्पत्ति का उपादान कारण जड ४ ये चारों अनादिहै, इश्वर सर्व व्यापकहै. ५ इश्वर सृष्टि करताहै, ६ जीवोंके जैसे २ पुण्य पाप पूर्वकृतहै, तैसे २ सुखी दुःखी रच देताहै, ७ फिर कितनेक काल पीछे प्रलय करताहै, ८

फिर रचना करताहै, ९ इसी तरें अनादि अनंत व्य- वहार चला जायगा॥ इस कथनका उत्तर-हे वादी! तैनें थोडासा अर्हत् वचनामृतका स्वाद कही चाख्याहै, न्यायसूत्र कर्त्ता गौत्मवत्, तिससें तुं चारों वस्तु अ- नादि मानताहै यह तेरा मानना यथार्थहै, परंतु काल भी अनादिहै एवं पांच अनादिहै परंतु सृष्टिका रच- नेवाला इश्वरहै, यह तेरा कहना बहुत बेसमझकाहै क्योंकि सर्वव्यापी इश्वर तो अक्रियहै । सो तो एक तृण भी कुब्जी करण समर्थ नहींहै, सृष्टिका रचना तो दूर रहा १, और जो सर्व व्यापीहै सो जडहै, आकाशवत्, २ और तुमारे इश्वरकों सृष्टि रचनेसें कुछ भी लाभ नहींहै, और सृष्टि न रचे तो कुछ हानि नहींहै, तो फिर इश्वर किस वास्ते ऐसे निर्लाभक सृष्टि रचना प्रलय करनेरूप झगडेमें पडताहै, । पूर्व पक्ष, जो कभी इश्वर सृष्टि न रचे तो सर्व जीव अपने करे पुण्य पापका फल कैसें भोगे? उत्तर. सर्व जीव तुमारे इश्वरमें प्रलय अवस्थामें पुण्य पापके फल रहित शांतरूप हूए रहेतेहै, जो कभी इश्वर सृष्टि न रचे तो

इश्वरकी क्या हानिहै, १ और सर्व जीव नवीन पाप करनेसें बंध रहेंगे, २ इश्वरकों रचना और प्रलय करनेरूप महेनत छूट जावेगी, ३ पूर्व पक्ष—इश्वर सृष्टि न रचे तो जीवोंकों यथार्थ पुण्य पापके फळ विना भुगताये इश्वरकी न्यायता नहीं रहतीहै, इस वास्ते सृष्टि रचताहै, उत्तर । इश्वरनें सृष्टि रचके पुण्य पाप-का फळ तो भुगताया परंतु जीवोंकों पाप करनेंसे बंध न करा, इस वास्ते-इश्वर जान बूझ कर जीवोंसें पाप करावताहै. इस वास्ते तुमारा इश्वर न्यायी भी नहीं सिद्ध होताहै, । जैसें कोइ राजा चोरकों दंड देताहै. और कहताहै कि फिर चोरी मत करना, नहीं तो फिर तेरेकों अधिक दंड होगा. परंतु चोर नहीं मान-ताहै. फिर चोरी करताहै. और राजा सर्व सामर्थ्यवान् नहींहै, इस वास्ते चोरकों चोरी करनेसें नहीं रोक सक्ताहै; परंतु तुमारा इश्वर तो सर्व समर्थहै, तो फिर पाप करनेसें जीवोंकों क्यों नहीं बंध करताहै, बंध न करनेसें इश्वर स्वयमेव जीवोंसें पाप करावताहै, इस वास्ते तुमारा इश्वर न्यायी नहीं है, १ तथा किसी जी-

वकों पाप फल भुगताने वास्ते इश्वरमें किसी पुरुष तलवारवालेकों प्रेरणा करके तिसका मस्तक कटवाया; तिसने तो इश्वरके सबबसें अपने पापका फल भोगा, परंतु मारनेवालेको क्यों फांसी देतेहै, तिसने तो इश्वरकी आज्ञासें तिसकों माराहै, जो कभी इश्वर प्रथम तिससें मरवाताहै, और पीछे उसकों फांसी दिलाताहै तो इश्वर तुमारे कहनेसें वडा भारी अन्यायी सिद्ध होताहै । तथा एक उत्कट कामी पुरुषनें किसी बहुत इज्जतवाले शेठ वा गामस्वामी वा राजाकी कुमारी यौवनवंती बेटीसें जबरजस्ती विषय सेवन करा, तिसका शील भंग करा, तब तिसके पिताको खबर पडी तिसनें कामीका मस्तक छेदन करा, और सरकारनें तिसके पिताकों फांसी दिया, और तिस कुमारीका शील भंग होनेसें उसकों कोइ विवाहता नहीं है, तब तिस कुमारी आपही फांसी ले मर गइ. अब जो अज्ञ लोक कहतेहै, सर्व दुःख सुख रूप फलका दाता इश्वरहै, तिनको हम पूछतेहै । प्रथम पुरुष इस जगतमें कुमारी यौवनवंतीसें भोग करनेकी मनुष

सुख मानतेहै तिस वास्ते तुमारे इश्वरनें तिसके पुण्य फल भुगताने वास्ते तिसको उत्कृष्ट कामी करा, सो पुरुष इश्वरकी प्रेरणासें अपने पुण्य फल भोगने वास्ते उत्तम जातिरूप यौवनवंती कुमारीसें विषय सेवन करनेके समयमें जो सुख भोगताहै, सो इश्वरकी कृपासें है, क्योंकि वादीकी यह प्रतिज्ञाहै कि इश्वर फल प्रदाताके विना अपने आप कोइ जीव सुख दुःख नहीं भोग सक्ताहै। तब तो जो जो वेश्या रखानगी वदकार दुराचारिणी स्त्रीयें और लुच्चे गुंडे बद चलनपर पुरुष स्त्रीयोंसें भोग करके जो सुख मान्तेहै, सो सर्व तुमारे इश्वरकी दयालुता और न्यायताका चमत्कारहै। तब तो इश्वरही जितने परपुरुष परस्त्री स्वस्त्रीसें भोग करके सुख मानेतेहै, वे सर्व इश्वरकी प्रेरणासेंहै, तब तो सर्व दुराचारका सेवना इश्वरही करा रहाहै. १ तथा तिस कुमारीनें जो तिस पुरुषसें भोग करके सुख माना सो भी इश्वरनेही दीना. २ तथा तिस कुमारीके पिताने जो तिस पुरुषको देखके अत्यंत दुःख माना सो दुःखभी तिस कामीके भोग

देखनेसें तिसकों इश्वरनें दीया ३ तथा तिस कुमारीके पितानें तिस कामीका मस्तक काट डाला. कामीनें अपने मस्तक कटनेसे जो दुःख भोगा सो भी इश्वरने तिसका मस्तक कटवा करके भुक्ताया. ४ तिस कामीके मस्तक काटनेसें जो सरकारनें कुमारीके पिताकों फांसी दीया सो भी दुःख इश्वरनेही दिया. ५ सरकारकों फांसी देनेकी वख्त इश्वर सो गया. ६ कुमारीनें दुराचार करके इश्वरकी कृपासें जो सुख भोगा था, तिस सुख भोगनेसेंही जो कुमारीकी फजीती निंदा अरु अपयशादि दुःख हुआ सोभी इश्वरनेही दिया. ७ कुमारीकों तिस दुराचार करणेसें कोइ विवाहता नहीं करता तिससें जो कुमारी दुःख भोगतीहै सो भी इश्वरनेही दिया. ८ जो कुमारी तिस दुःखसें आपही फांसी ले कर तडफडके मरी सो भी इश्वरनेही तडफडा२ के मारी और दुःख फल दीना. ९ जो कभी कोइ कहे सर्व जगें सुख दुःख रुप फल देने वास्ते इश्वरही सर्वकों प्रेरणा करताहै इसमें हमारी क्या हानिहै ऐसा तो हम मानतेहीहै, तिसका उत्तर

जब तुम ऐसा मानते हो तब तो वेद पुराण बैबल कुरान द्वारा काहेको दुराचार चोरी झूठका निषेध करतेहो, क्योंकि जगतमें जो कुछहै सो तो इश्वरनें सुख दुःख रूप फल भुगतानेके वास्ते रचाहै, इस वास्ते तुम लोक जिसकों इश्वर फलप्रदाता मानतेहै, तिसकों तुम बहुत कलंकी करतेहो, और यह तुमारा मत असल नास्तिक मतकी जडहै, । जरा आंख मीचके सोचो तो सही, । हम तो ऐसे अनीतिरूप चलनवालेकों कदापि इश्वर नहीं मानेगे, हां जिसके हृदयकी आंख नहीं होवेगी सो मानेगा, । इस वास्ते इश्वर जगतका कर्त्ता सिद्ध नहीं हो सक्ताहै, । और इसाई मतका इश्वर तो बहुत भोला और सर्वज्ञ नहींथा, वो तो कैसे कर्त्ता सिद्ध होवे, सोइ दिखातेहै, । तब इश्वरने कहाकि हम आदमको अपने स्वरूपमे अपने समान बनावें । तब इश्वरने आदमको अपने स्वरूपमे उत्पन्न किया उसने उसे इश्वरके स्वरूपमें उत्पन्न किया, उसने उन्हें नर और नारी बनाया॥ और इश्वरने उन्हें आशीष दिया पर्व १, आ० २६ । २७। २८ । पैदाश

की–४ पत्र ॥ समीक्षक–यदि आदमको इश्वरने अपने स्वरूपमे बनाया तो इश्वरका स्वरूप पवित्र ज्ञान स्वरूप आनंदमय आदि लक्षणयुक्त हे उसके सदृश आदम क्यौं नहीं हुआ ? जो नही हुआ तो उसके स्वरूपमे नहीं बना और आदमको उत्पन्न किया तो इश्वरने अपने स्वरूपहीको उत्पत्तिवाला किया पुनः वह अनित्य क्यौं नहीं, । और आदमको उत्पन्न कहांसे किया, । इसाइ । मिट्टीसे बनाया । समीक्षक । मिट्टी कहांसे बनाइ । इसाइ । अपनी कुदरत अर्थात् सामर्थ्यसे । सामर्थ्य तो इश्वरका गुण है तिस गुणका जड चैतन्य रूप जगत् कदापि उत्पन्न नही हो सक्ता है, किंतु जड चैतन्य रूप जगतका कारण अनादि है, और कार्यरूप जगत् प्रवाहसें अनादि है और नवीन नवीन पर्याय रूप जगत सदा उत्पन्न होता है नाशवी होता है, इस पर्याय रूप जगतका कर्त्ता अनादि द्रव्यत्व है, तिस द्रव्यत्वको ही अज्ञ लोकोंने जगत् कर्त्ता इश्वर माना है, इस द्रव्यत्व रूप जगतके कर्त्ताका स्वरूप आगे चलकर लिखेंगे, इसके

विना अन्य कोइ जगतका कर्त्ता इश्वर नही है ॥ तथा अब सर्प्प भूमिके हर एक पशुसे जिसे परमेश्वर इश्वरने बनायाथा धूर्त्तथा । और उसने स्त्रीसें कहा, क्या निश्चय इश्वरने कहा हेकि तुम इस वाडीके हरएक पेडसें न खाना, और स्त्रीने सर्प्पसे कहाकि हम तो इस वाडीके पेडोंका फल खाते है, । परंतु उस पेडका फल जो वाडीके बीचमें है, इश्वरने कहाकि तुम उस्से न खाना, और न छूना, नंहि तो मरजाओगे। तब सर्प्पने स्त्रीसे कहाकि तुम निश्चय न मरोगे । क्यों कि इश्वर जानता है कि जिस दिन तुम उस्से खाओगे तुह्मारी आंखे खुल जायेंगी, और तुम भले और बूरेकी पहिचानमें इश्वरके समान हो जाओगे, और जब स्त्रीने देखा वह पेड खानेमें सुस्वाद और दृष्टिमें सुंदर और बुद्धिं देनेकें योग्य हे तो उसके फलमेसें लिया और खाया और अपने पतिकोभी दिया, और उसने खाया ॥ तब उन दोनोंकी आंखें खुल गइ, और वे जान गये कि हम नंगे है सो उन्होंने गूलरके पत्रोंको मिलाके सिया और अपने

लिये ओढना बनाया, । तब परमेश्वर इश्वरने सर्पसे कहाकि जो तुंने यह किया है इस कारण तुं सारे ढोर और हरएक वन के पशुनसे अधिक शापित होगा, तुं अपने पेटके बल चलेगा, और अपने जीवन भर धूल खाया करेगा, और मैं तुजमें और स्त्रीमें, और तेरे वंश और उसके वंशमें वैर डालुंगा, वह तेरे शिरको कुचलेगा, और तुं उसकी एडीको काटेगा और उसने स्त्रीको कहाकि मैं तेरी पीडा और गर्भ धारण को बहुत बढाऊंगा. तुं पीडासे बालक जनेगी, और तेरी इच्छा तेरे पतिपर होगी, और वह तुजपर प्रभुता करेगा, और उसने आदमसे कहाकि तुंने जो अपनी पत्नीका शब्दमाना है, और जिस पेडका फल मैंने तुजे खानेसे वर्जाथा, तुंने खाया है, इसकारण भूमि तेरे लिये शापित है, अपने जीवन भर तुं उस्से पीडाके साथ खायगा, और वह कांटे और ऊंटकटारे तेरे लिये उगायगी, और तुं खेतका साग पात खायगा, तौरेत उत्पत्ति पैदाश पत्र—६—पर्व ३ आ० १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । १४ ।

१५ । १६ । १७ । १८। परीक्षक॥ जो इसाइयोंका इश्वर सर्वज्ञ होता तो इस धूर्त्त सर्प्प अर्थात् शैतान को क्यों बनाता, । और जो बनाया तो वही इश्वर अपराधका भागी है, क्योंकि जो वह उसको दुष्ट न बनाता तो वह दुष्टता क्यों करता और वह पूर्वजन्म नही मानता तो विना अपराध उसको पापी क्यों बनाया, ? और सच पूंछो तो वह सर्प्प नहींथा किंतु मनुष्य था,क्योंकि जो मनुष्य न होता तो मनुष्यकी भाषा क्यों कर बोल सकता, और जो आप झूंठा और दूसरेको झूंठ में चलावें उसको शैतान कहना चाहिये, सो यहां शैतान सत्यवादी और इससे उसने उस स्त्रीको नहीं बहकाया किंतु सच कहा और इश्वर ने आदम और हव्वासे झूंठ कहा कि इसके खानेसे तुम मर जाओगे, जब वह पेड ज्ञानदाता । और अमर करनेवाला था तो उसके फल खानेसे क्यों वर्जा और जो वर्जा तो वह इश्वर झूंठा और बहकानेवाला ठहरा, क्योंकि उस वृक्षके फल मनुष्योंको ज्ञान और सुखकारकथे अज्ञान और मृत्युकारक नहीं

जब ईश्वरने फल खानेसे वर्जा तो उस वृक्षकी उत्प-त्ति किस लिये कीथी जो अपने लिये की तो क्या आप अज्ञानी और मृत्यु धर्मवालाथा और जो दूसरोंके लिये बनाया तो फल खानेमें अपराध कुछ भी न हुआ, और आज काल कोइभी वृक्ष ज्ञानकारक और मृत्यु निवारक देखनेमें नहीं आता, क्या ईश्वरने उसका बीज भी नष्ट कर दिया, ऐसी बातोंसे मनुष्य छली कपटी होताहै, तो ईश्वर वैसा क्यों नहीं हुआ॥ क्योंकि जो कोइ दूसरेसें छल कपट करेगा वह छली कपटी क्यों न होगा और जो इन तीनोंको शाप दिया वह विना अपराधसेंहैं वह पुनः वह ईश्वर अन्यायकारीभी हुआ, और यह शाप ईश्वरको होना चाहियें क्योंकि वह झूंठ बोला और उनको बहकाया यह फिलास फी देखो. क्या विना पीडाके गर्भ धारण और बाल-कका जन्म हो सकताथा और विना श्रमके कोइ अ-पनी आजीविका कर सकताहै। क्या प्रथम कांटे आदिके वृक्ष नथे। और जब साकपात खाना सब मनुष्यों क्यों ईश्वरके कहनेसे उचित हुआ तो प्रो उ-

त्तरमें मांस खाना बाइबलमें लिखा वह झूंठा क्यों नहीं, और जो वह सच्चा हो तो यह झूंठाहै,जब आदमका कुछ भी अपराध सिद्ध नहीं होता तो इसाइ लोग सब मनुष्योंको आदमके अपराधसे सन्तान होनेपर अपराधी क्यों कहतेहैं ? । भला ऐसा पुस्तक और ऐसा इश्वर कभी बुद्धिमानोंके सामने योग्य हो सकताहै । और परमेश्वर इश्वरने कहा कि देखो आदम भले बूरेके जाननेमें हममेंसे एककी नाइ हुआ और अब एसा न होवेकि वह अपना हाथ डाले और जीवनके पेडमेंसे भी लेकर खावे और अमर हो जाय सो उसने आदमको निकाल दिया, और अदनकी वाडीकी पूर्व और करोबीम ठहराये ओर चमकते हुए जो खडगको जो चारों और घुमताथा जिसने जीवनके पेडके मार्गकी रखवाली करें पर्व० पैदाश ३ आ० २२ । २४ ॥ पत्र–८ समीक्षक। भला इश्वरको एसी इर्ष्या और भ्रम क्यों हुआ कि ज्ञानमें हमारे तुल्य हुआ,क्या यह बुरी बात हुइ? यह शंकाही क्यों पड़ी? परंतु इस लेखसे यहभी सिद्ध हो सकताहै०

कि वह इश्वर नहींथा किंतु मनुष्य विशेषथा. बाइबलमें जहां कहीं इश्वरकी बात आतीहै वहां मनुष्यके तुल्य ही लिखी आतीहै, अब देखो आदमको ज्ञानकी बढतीमें इश्वर कितना दुःखी हुआ और फिर अमर वृक्षके फल खानेमें कितनी इर्ष्याकी और प्रथम जब उसको बाडीमें रखा तब उसको भविष्यत्‌का ज्ञान नहीं था कि इसको पुनः निकलना पडेगा, इस लिये इसायियोंका इश्वर सर्वज्ञ नहींथा, और चमकते खडगका पहिरा रखा यहभी मनुष्यका कामहै इश्वरका नहीं. और कितने दिनोंके पीछे यों हुआ कि काइन भूमिके फलोंमेंसे परमेश्वरके लिये भेंट लाया, और हाबीलभी अपनी झुंडमेंसे पहिलोटी और मोटी २ भेंड लाया और परमेश्वरने हाबीलका और उसकी भेटका आदर कीया, परंतु काइनका उसकी भेंटका आदर न किया, इस लिये काइन अति कुपित हुआ और अपना मुंह फुलाया तब परमेश्वरने काइनसे कहा कि तुं क्यों क्रुद्धहै और तेरा मुंह फुल गया, तौरे० पैदाश पर्व पत्र ८४ आ० ३ । ४ । ५ ६ ॥ समी-

क्षक ॥ यदि ईश्वर मांसाहारी न होता तो भेंडकी भेट और हाबीलका सत्कार और काइनका तथा उसकी भेटका तिरस्कार क्युं करता? और एसा झगडा लगानेका और हाबीलके मृत्युका कारणभी ईश्वरहीहुआ । और जैसे आपसमें मनुष्यलोग एक दूसरेसें बातें करते है, वैसाही ईसाइयोंके ईश्वरकी बातें है, बगीचेमें आना जाना उसका बतानाभी मनुष्योंका कर्म है, इससे विदित होता है कि यह बाईबल मनुष्यों की बनाई है ईश्वरकी नहीं ॥ कदाच ईश्वर परमात्मा सर्वज्ञ भगवानकी बनाई होती तो एसे एसे अनुचित लेखोंका समावेश न होता, जब परमेश्वरने काईनसे कहा तेरा भाई हावील कहां है ? और वह बोला मैं नहीं जानता. क्या मैं अपने भाईका रखवाला हूं ? तब उसने कहा तुंनें क्या किया तेरे भाइके लोहूका शब्द भूमिसे मुजे पुकारता है, और अब तुं पृथिवी से शापित है. तौ० पैदाश पर्व. ४ आ० २ । १८। ११ पत्र ८. परीक्षक। क्या ईश्वर काइनसे पुछे बिना हावीलका हाल नहीं जानता था ? और लोहूका शब्द

भूमिसे कभी किसीका पुकार सकता है, ये सब बातें अविद्वानोंकी हैं इसी लिये यह पुस्तक न ईश्वर और न विद्वान्का बनाया हो सकता है ॥

और हनूक मतूसिलहकी उत्पत्तिके पीछे तीनसौ वर्षलों ईश्वरके साथ साथ चलताथा. तौ० पैदाश पर्व० ५ आ० २२, पत्र ११. परीक्षक—भला ईसाइयोंका ईश्वर मनुष्य न होता तो हनूकके साथ साथ क्यों चलता ? इससे जो जैनमत उक्त निरंजन निराकार ईश्वर है उसीको ईसाई लोग मानें तो उनका कल्याण हो जाय, और उनसे बेटियां उत्पन्न हुई तो ईश्वरके पुत्रोंने आदमकी पुत्रियोंको देखा कि वे सुंदर हैं और उनमेंसे जिन्हें उन्होंने चाहा उन्हें ब्याहा और उन दिनोंमें पृथिवीपर दानव थे, और उसके पीछेभी जब ईश्वरके पुत्र आदमकी पुत्रियोंसे मिले तो उनसे बालक उत्पन्न हुए जो बलवान् हुए, जो आगेसे नामीथे और ईश्वरने देखाकि आदमकी दुष्टता पृथिवीपर बहुत हुई और उनके मनकी चिंता और भावना प्रतिदिन केवल बूरी होती है, तब आ-

दमी पृथिवीपर उत्पन्न करनेसें परमेश्वर पछताया, और उसे अती शोक हुआ, तब परमेश्वरने कहाकि आदमीको जिसे मैंने उत्पन्न किया, आदमीसे लेके पशुनलों और रेंगवैयोंको और आकाशके पक्षियोंको पृथिवीपरसे नष्ट करूंगा क्योंकि उन्हें बनानेसे मैं पछताता हुं. तौ० पैदाश पर्व ६ आ० १।२।३।४।५।६।७।

परीक्षक-ईसायोंसे पूंछना चाहियेकि ईश्वरके बेटे कौन है और इश्वरकी स्त्री सास श्वसुर शाला और संबंधी कौन है, कयौंाकि अब तो आद्मीकी बेटियोंके साथ विवाह होनेसे ईश्वर इनका संबंधी हुआ, और जो उनसे उत्पन्न होते हैं, वे पुत्र और प्रपौत्र हुए. क्या ऐसी बात इश्वर और इश्वरके पुस्तककी हो सकती है, । किंतु यह सिद्ध होता है, कि उन जंगली मनुष्योंने यह पुस्तक बनाया है, वह ईश्वरही नहीं, जो सर्वज्ञ न हो, न भविष्यत्की बात जाने वह जीव है, क्या जब सृष्टिकीथी तब आगे मनुष्य दुष्ट होंगे, एसा नहीं जानताथा ? और पछताना अति शोका-

दि होना भूलसे काम करके पीछे पश्चाताप करना आदि ईसाइयोंके इश्वरमें घट सकता है, कि ईसाइ-योंका ईश्वर पूर्ण विद्वान् योगी भी नहीं था नहीं तो शांति और विज्ञान आति शोकादिसे पृथक् हो सकता था, भला पशु पक्षिभी दुष्ट हो गये यदि वह ईश्वर सर्वज्ञ होता तो ऐसा विषादी क्यों होता ? इस लिये न यह ईश्वर और न यह ईश्वरकृत पुस्तक हो सकता है, जैसे जैनमतोक्त सिद्ध परमेश्वर सब पाप क्लेश दुःख शोकादिसे रहित सच्चिदानंद स्वरुप है, उसको ईसाइ लोग मानते वा अबभी मानें तो अपने मनुष्य जन्मको सफल कर सके। नहीं तो जंगलीयोंका कल्पित ईश्वर मानके ईसाइ मतवालेभी जंगलीयां जैसे हो जावेंगे, इस वास्ते हे ईसाइ लोको! यह तुमारी भूल तुमको अछा फल न देगी, इस वास्ते इस कालमें विद्या पढके बहुत चतुर ईसाइलोक हो गए है, जो कभी ईसाइ बाइबल उक्त ईश्वरको ईश्वर मानेगे, तब तो आगे पीछे अंधकारमें पडे रहोगे ॥

उस नावकी लंबाई तीन सौ हाथ और चौडाई

पचास हाथ और उंचाई तीस हाथकी होवे तुं नावमें जाना, तुं और तेरे बेटे और तेरी पत्नी और तेरे बेटोंकी पत्नियां तेरे साथ और सारे शरीरोंमेंसे जीता जंतु दो दो अपने साथ नावमें लेना जिसते वे तेरे साथ जीते रहें, वे नर और नारी होवें ॥ पंछीमेंसे उसके भांति २ के और ढोरमेंसे उसके भांति २ के और पृथिवीके हरएक रंगवैयोंमेंसे भांति२ के हरएक-मेंसे दो २ तुज पास आवे जिसते जीते रहैं। और तुं अपने लिये खानेको सब सामग्री अपने पास इकट्ठा कर वह तुह्मारे और उनके लिये भोजन होगा सो ई-श्वरकी सारी आज्ञाके समान नूहने किया, तौ० पै-दाश पर्व० ६ आ० १५।१८।१९।२०।२१।२२॥पत्र १२.

परीक्षक—भला कोइभी विद्वान् एसी विद्यासे विरुद्ध असंभव बातके वक्ताको ईश्वर मान सकता है? क्योंकि इतनी बडी चौडी उंची नावमें हाथी हथनी ऊंट ऊंटनी आदि क्रोडो, जंतु और उनके खाने पी-नेकी चीजें वे सब कुटुंबकेभी समा सकते है, यह इ-सी लिये मनुष्यकृत पुस्तक है जिसने यह लेख किया

है वह विद्वानभी नहीं था, जो विद्वान् होता तो ईश्वरके संबंधमे एसा अनुचित लेखकुं कबीभी न ग्रथन करता.

और नूहने परमेश्वरके लिये एक वेदी बनाई, और सारे पवित्र पशुआ और हरएक पवित्र पंछिओंमेंसें लिये और होमकी भेट उस वेदीपर चढाई, और परमेश्वरने सुगंध सुंघा और परमेश्वरने अपने अपने मनमें कहाकि आदमीके लिये में पृथिवीको फिर कभी शाप न दुंगा, इस कारणकि आदमीके मनकी भावना उसकी लडकाइसे बूरी है, और जिस रीतिसे मैंने सारे जीवधारियोंको मारा फिर कभी न मारूंगा, तौ० पैदाश पर्व० ८ आ० २०।२१, पत्र १९

परीक्षक—वेदीके बनाने होम करनेके लेखसे यही सिद्ध होता है, कि ये बातें वेदोंसें बाइबलमें गई हैं, क्या परमेश्वरके नाकभी है कि जिस्से सुगंध सुंघा, क्या यह ईसाइयोंका ईश्वर मनुष्यवत् अल्पज्ञ नहीं है, कि कभी शाप देता है, और कभी पछताता है, कभी कहता है शाप न दुंगा, पहिले दियाथा, और फिरभी

देगा, प्रथम सबको मारडाला, और अब कहता है; कि कभी न मारूंगा, ॥ ये बातें सब लडकपणकीहैं, ईश्वरकी नहीं। और न किसी विद्वान्‌की, क्योंकि विद्वान्‌कीभी बात और प्रतिज्ञा स्थिर होती है, और यह लेख तो ईसायांके ईश्वरकी ईश्वरत्वता नाश करता है, अरु किसी असमंजसपुरुष समान ईश्वरको बनाता है ॥

और ईश्वरने नूहको ओर उसके बेटोंको आशीष दिया, और उन्हें कहाकि हरएक जीता चलता जंतु तुह्मारे भोजनके लिये होगा, मैंने हरी तरकारीके समान सारी वस्तु तुह्मे दिइ, केवल मांस उसके जीव अर्थात् उसके लोहु समेत मत खाना, ॥ तौ० पैदाश पर्व० ९ आ० १।३।४॥ पत्र १५.

परीक्षक–क्या एकको प्राणकष्ट दे कर दूसरोंको आनंद करानेसे दयाहीन ईसाइयोंका ईश्वर नहीं है? जो माता पिता एक लडकेको मरवाकर दूसरेको खिलावें तो महा पापी नहीं हैं? इसी प्रकार यह बात है, क्योंकि ईश्वरके लिये सब प्राणी पुत्रवत् है, एसा होनेसे इनका ईश्वर कसाईवत् काम करता है, और सब

मनुष्योंको हिंसकभी इसीने बनाये है, इस लिये ई-साइयोंका ईश्वर निर्दय होनेसे पापीक्यों नहीं ? जि-सकुं निर्दयपना होगा उनसे प्राणीयोंपर कृपा कैसें किई जायगी.

और सारी पृथिवीपर एकही बोली और एक-ही भाषाथी ।। फिर उन्होंने कहाकि आओ हम एक नगर और एक गुम्मट जिसकी चोटी स्वर्ग लों पहुंचे अपने लिये बनावे, और अपना नाम करें, न होकि हम सारी पृथिवीपर छिन्न भिन्न हो जायें, ।। तब ई-श्वर उस नगर और उस गुम्मटको जिसे आदमके संतान बनातेथे देखनेको उतरा, तब परमेश्वरने क-हा कि देखो ये लोग एकही है, और उन सबकी ए-कही बोली है, अब वे एसा २ कुछ करने लगे सो वे जिसपर मन लगावेंगे, उससे अलग न किये जा-येंगे, ।। आओ हम उतरें और वहां उनको गडबडावे, जिसते एक दूसरेकी बोली न समझे, ।। तब परमेश्व-रने उन्हे वहांसें सारी पृथिवीपर छिन्न भिन्न किया, और वे उस नगरके बनानेसे अलग रहै, ।। तौ० ।

पैदाश पर्व० ११ । आ०१।२।४।५।६।७।८।। पत्र १९।।

परीक्षक—जब सारी पृथिवीपर एक भाषा-बोली होगी उस समय सब मनुष्योंको परस्पर अत्यंत आनंद प्राप्त हुआ होगा, परंतु क्या किया जाय, यह ईसाइयोंके ईर्ष्यक ईश्वरने सबकी भाषा गडबडाके सबका सत्यानाश किया, उसने यह बडा अपराध किया, क्या यह शैतानके कामसेभी बुरा काम नहीं है? और ईससे यहभी विदित होता है. कि ईसाइयोंका ईश्वर सनाई पहाड आदिपर रहता था, और जीवोंकी ऊन्नतिभी नही चाहता था. यह विना एक अविद्वान्के ईश्वरकी बात और यह ईश्वरोक्त पुस्तक क्यौं कर हो सकता है,? अपितु कबीभी नही हो सकता है.

तब उसने अपनी पत्नीसरीसे कहाकि देख मै जानता हुं तुं देखनेमें सुंदर स्त्री है ॥ इस लिये यों होगा कि जब मिश्री तुजे देखें तब वे कहेंगेकि यह उसकी पत्नी है, और मुजें मार डालेंगे परंतु तुजें जीती रखेंगे, तुं कहियोकि मैं उसकी बहिन हुं, जिसतें तेरे कारण मेरा भला होय, और मेरा प्राण तेरे

से जीता रहे, । तौ० पैदाश पर्व० १२ ॥ आ०
। १२ । १३ ॥ पत्र २१.

ीक्षक—अब देखिये जो अविरहाम बडा पै-
प॒ ई और मुसलमानोंका बजता है, और उ-
ार ईसा ध्याभाषणादि बुरे हैं. भला जिनके एसे
ह कर्म मि को विद्या वा कल्याणका मार्ग कैसे
ंबर हों, उन केसें उसके अनुयायियोंका भी क-
ल सके? अरु और ईश्वरने अविहरामसें कहाकि
याण हो सकेगा? रा वंश उनकी पेढीयोंमें तेरे
; और तेरे पीछे ते नियम जो मुस्से और तुमसे
नेयमको माने, तुम मेरा है जिसे तुम मानोंगें, सो
और तेरे पीछे तेरे वंशसे पुरुषका खतनः किया
यह है, कि तुममेंसे हरएक की खलडी काटो,
जाय ॥ और तुम अपने शरीर में नियमका चिन्ह
और वह मेरे और तुह्मारे मध्य एक आठ दिनके
होगा, और तुह्मारी पीढियोंमें रहे. : उत्पन्न होय
पुरुषका खतनः किया जाय, जो घरमें शका न हो,
अथवा जो किसी परदेशीसे जो तेरे व पन्न हुआ
रूपैसे मोल लिया जाय, जो तेरे घरमें उ

है और जो तेरे रूपैसे मोल लिया गया हो, अवश्य उसका खतनः किया जाय और मेरा नियम तुह्मारे मांसमें सर्वदा नियमके लिये होगा, और जो अखतनः बालक जिसकी खलडीका खतनः न हुआ हो सो प्राणी अपने लोगसे कट जाय कि उसने मेरा नियम तोडा है, ॥ तौं० पैदाश, पर्व० १७ । आ० ९ । १० । ११ । १२ । १३ । १४ ॥ पत्र २७.

परीक्षक—अब देखिये ईश्वरकी अन्यथा आज्ञाकि जो यह खतनः करना ईश्वरको इष्ट होता तो उस चमडेको आदि सृष्टिमें बनाताही नहीं, और जो यह बना है वह रक्षार्थ है, जैसा आंखके ऊपरका चमडा, क्योंकि वह गुप्त स्थान अति कोमल है, जो उसपर चमडा नहोतो एक कीडीकेभी काटने और थोडीसी चोट लगनेसे बहुतसा दुःख होवे, और वह लघुशंकाके पश्चात कुछ मूत्रांश कपडोंमें न लगे इत्यादि बातोंके लिये इसका काटना बुरा है, और अब ईसाई लोग इस आज्ञाको क्यों नहीं करते? यह आज्ञा सदाके लिये है? इसके न करनेसे ईसाकी

गवाही जोकि व्यवस्थाके पुस्तकका एक बिंदुभी झूठा नहीं है, मिथ्या हो गई इसका शोच विचार ईसाई कुछभी नहीं करते, अरु दूसरेके दूषणोंकुं अन्वेषण करते है, यह कुछ थोडा अपशोसकी वात नहीं है, तब उसे बाति करनेसे रह गया और अबिरहामके पाससे ईश्वर ऊपर जाता रहा. ॥ तौ० पैदाश पर्व० १ । ७ । आ० २२ ॥ पत्र २८.

परीक्षक—इससे यह सिद्ध होता है के ईश्वर मनुष्य वा पक्षिवत् था, जो ऊपरसे नीचे और नीचेसे ऊपर आता जाता रहता था, यह कोई इंद्रजाली पुरुषवत् विदित होता है, किंतु सर्वज्ञ परमात्माका तो चिन्हभी तिसमे नहीं विदित होता है. फिर ईश्वर उसे ममरेके बलूतोंमें दिखाई दिया, और वह दिनको घामके समयमें अपने तंबूके द्वारपर बेठाथा, और उसने अपनी आखें उठाई, और देखा और देखोकि तीन मनुष्य उसके पास खडे हैं, और उन्हें देखके वह तंबूके द्वारपरसे उनकी भेंटको दौडा, और भूमिलों दंडवत् किइ और कहा, हे मेरें स्वामि! यदि मैंने

अब आपकी दृष्टिमें अनुग्रह पाया है तो मैं आपकी विनती करताहूंकि अपने दासके पाससे चले न जाइयें, इछा होय तो थोडा जल लाया जाय, और अपने चरण धोइयें और पेड तले विश्राम कीजिये, और मैं एक कौर रोटी लाउं और आप तृप्त हूजिये, उसके पीछे आगे बढिये, क्योंकि आप इसी लिये अपने दासके पास आये हो. तब वे बोलेकि जैसा तुंने कहा तैसा कर. और अबिरहाम तंबूमें सरः पास उतावलीसे गया, और उसे कहाके फुरती कर, और तीन नपुआ चोखा पिसान लेके गूंध, और उसके फुलके पका, और अबिरहाम झुंडकी और दौडा गया, और एक अछा कोमल बछडा लेके दासको दिया, उसनेभी उसे सिद्ध करनेमे चटक किया, और उसने मक्खन और दूध और वह बछडा जो पकायाथा लिया, और उनके आगे धरा, और आप उनके पास पेड तले खडा रहा, और उन्होंने खाया. तौ० पैदाश पर्व० १८ । आ० १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । पत्र २८.

परीक्षक—अब देखिये सज्जन लोगो! जिनका इश्वर बछडेका मांस खावे, उसके उपासक गाय बछडे आदि पशुओंको क्यों छोडें! जिसको कुछ दया नहीं और मांसके खानेमें आतुर रहे, वह विना हिंसक मनुष्यके ईश्वर कभी हो सकता है ॥ और ईश्वरके साथ दो मनुष्य न जाने कौनथे इससे विदित होता है कि जंगली मनुष्योंकी एक मंडलीथी उनका जो प्रधान मनुष्य था, उसका नाम बाइबलमें ईश्वर रक्खा होगा, इन्ही बातोंसे बुद्धिमान् लोग इनके पुस्तकको ईश्वरकृत नहीं मान सकते, और न ऐसेको ईश्वर समजते हैं ॥ क्युंके सर्वज्ञ परमात्माका आचरण अरु कथन ऐसा कबीभी नही होता है,

और परमेश्वरने अविरहामसे कहाकि सरः क्यों यह कहके मुस्कुराईकि जो मैं बुढिया हुं, सचमुच बालक जनूंगी, क्या परमेश्वरके लिये कोई बात असाध्य है॥ तौ० पैदाश पर्व० १८ आ० १३ ।१४। पत्र २९.

परीक्षक—अब देखियेकि क्या ईसाईयोंके ईश्व-

रकी लीलाकि जो लडके वा स्त्रियोंके समान चिडता और ताना मारता है, ॥ वाह ! एसे इशाईयोके ईश्वरकी तो वारंवार बलिहारी है.

तब परमेश्वरने सदूम अमूरःपर गंधक और आग परमेश्वरकी औरसें वर्षाया, और उन नगरोंको और सारे चौगानको और नगरोंके सारे निवासियोंको और जो कुछ भूमिपर ऊगता था उलट दिया. ॥ तौरेत उत्पाति पैदाश पर्व १९। आ० २४।२५॥ पत्र ३२.

परीक्षक—अब यहभी लीला बाइबलके ईश्वरकी देखियेकि जिसकों बालक आदिपरभी कुछ दया न आई, क्या वे सबही अपराधी थे? जो सबको भूमि उलटाके दबा मारा. ॥ यह बात न्याय दया और विवेकसे विरूद्ध है. जिनूका ईश्वर एसा काम करें उनके उपासक क्यों न करे? ॥ जिसके इश्वरमें दयाका अभाव होवे, तिसके उपासकोमें दयाका भावभी कैसें सिद्ध होवे? आओ हम अपने पिताको दाखरस पिलावे, और हम उसके साथ शयन करें, कि हम अपने पितासे वंश जगावें, तब उन्होंने उस रात अ-

पने पिताको दारवरस पिलाया, और पहि लोटी गइ और अपने पिताके साथ शयन किया, । हम उसे आज रातभी दारवरस पिलावें, तुं जाके शयन कर, सो लूतकी दोनों बेटियों अपने पितासे गर्भिणी हुई, तौ० पैदाश–उत्प० पर्व० १९ । आ० ३२ । ३३ ३४ । ३५ ॥ पत्र ३३.

परीक्षक—देखिये पिता पुत्रीभी जिस मद्यपान के नशामें कुकर्म करनेसे न बच सके एसे दुष्ट मद्यको जो ईसाई आदि पीते हैं उनकी बुराईका क्या पारावार है ? इस लिये सज्जनलोगोंको मद्यके पीनेका नामभी न लेना चाहिये ॥ मद्य पीनेसे अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न हो जाते है, मद्यपानके नशेमें चडा हुवा पुरुषकुं गम्य अगम्य वस्तुका ख्याल नही रहेता है, और अपने कहनेके समान परमेश्वरने सरः सेभेट किया, और अपने वचनके समान परमेश्वरने सरः कें विषयमे किया, और सरः गर्भिणी हुई, ॥ तौ० पैदाश उत्प० पर्व० २१ । आ० १ । २ ॥ पत्र ३५.

परीक्षक—अब विचारिये कि सरःसे भेंटकर

गर्भवंतीकी यह काम कैसै हुआ, ॥ क्या विना परमेश्वर और सरःके तीसरा कोई गर्भस्थापनका कारण दिखता है, ॥ एसा विदित होता है कि सरः परमेश्वरकी कृपासें गर्भवती हुई, ॥ यह तो कबीभी सिद्ध नही होता है के फक्त इश्वरकी कृपासें ही कोइभी स्त्री गर्भवती होजावे, क्युंके गर्भकी उत्पत्तिमें तो पुरुप स्त्रीका संयोग आदि सहकारी कारण होने चाहिये, विना सहकारी कारणके कबीभी गर्भकी उत्पत्ति नही हो शक्ति है, तब अबिरहामने बडे तडके उठके रोटी और एक पखालमैं जल लिया, और हाजिरःके कंधेपर धर दिया, और लडकेको भी उसे सौंपके उसे विदा किया, उसने उस लडकेको एक जाडीके तले डाल दिया, और वह उसके सन्मुख बैठके चिल्ला २ रोई, । तब ईश्वरने उस बालकका शब्दसुना, ॥ तौ० उत्प० पर्वं० २१ । आ० १४ । १५ । १६ । १७ । पत्र ३५.

परीक्षक—अब देखिये ईसाईयोंके ईश्वरकी लीला कि प्रथम तो सरःका पक्षपात करके हाजिरःको

वहांसे निकलवादी, और चिल्ला २ रोई हाजिरः और शब्दसुना लडकेका यह कैसी अद्भूत बात है ? यह ऐसा हुआ होगा कि ईश्वरको भ्रम हुआ होगा कि यह बालकही रोता है. भला ईश्वर और ईश्वरके पुस्तककी अैसी बात कभी हो सकती है ? विना साधारण मनुष्यके वचनके इस पुस्तकमैं थोडीसी बात सत्य के सब असार भरा है, सर्वज्ञ भगवान्के शास्त्रमें कबीभी एसी असमंजस बातें न होनी चाहिये, भला हम इतना पुछने चाहते हे के " जब ईश्वरने उस बालकका शब्द सुना " इस वचनसें ईशाईयो उस इश्वरकुं सर्वज्ञ केसे सिद्ध कर शकेगे ? क्युंके जो सर्वज्ञ होता है सो तो शब्द सुननेसें पहिले भी जान शक्ता है के अब इतने काल पीछे अमुक बालक शब्द करेगा, अब यहभी सिद्ध है के जो सर्वज्ञ हाता हे वो तो शब्दके विना सुनेभी जान शक्ता है, और इन बातोंके पीछे यों हुआ कि ईश्वरने अविरहामकी परीक्षा कि और उसे कहा, हे अबिरहाम ! तुं अपने बेटेको अपने इकलौठे इजहाकको जिसे तुं प्यार करता

है ले ॥ उसे होमकी भेंटके लिये चढा और अपने बेटे इजहाकको बांधके उस वेदीमें लकडियोपर धरा, ॥ और अविरहामनें छुरी लेके अपने बेटेको घात करनेके लिये हाथ बढाया तब परमेश्वरके दूतने स्वर्ग परसे उसे पुकारा कि अबिरहाम २ अपना हाथ लडकेपर मत बढा, उसे कुछ मतकर क्योंकि अब मैं जानता हुंकि तुं ईश्वरसे डरता है, ॥ तौ० उत्प० पर्व० २२ ॥ आ० १ । २ । ९ । १० । ११ । १२ ॥ पत्र ३७.

परीक्षक—अब स्पष्ट हो गयाकि यह बाइबलका ईश्वर अल्पज्ञ है सर्वज्ञ नहीं और अविरहामभी एक भोला मनुष्य था नहीं तो एसी चेष्टा क्यों करता ?। और जो बाइबलका ईश्वर सर्वज्ञ होता तो उसकी भविष्यत् श्रद्धाकोभी सर्वज्ञतासें जान लेता इससें निश्चित होता है कि ईसाईयोंका ईश्वर सर्वज्ञ नहीं। किंतु एक अल्पज्ञ अरु सामान्य मनुष्य था.

इत्यादि उपर ले तौरेतके लेखसें ईसाइयोंका ईश्वर अैसा सिद्ध होता है। असर्वज्ञ १, ईश्वर अप-

सधका भागी, २, झूठ बोलनेवाला. ३. बहकानेवाला, ४, छली, ५, कपटी, ६, अन्यायी, ७, मांस खानेकी आज्ञा देनेवाला, ८, ईर्ष्यावाला, ९, भ्रमवाला, १०, ईश्वर कल्पित, ११, मांसाहारी, १२, काम करके पछताने वाला, १३, पुत्रोंवाला, १४, बंहूओंवाला, १५, स्वसुर, १६, संबंधि, १७, विषाद करनेवाला, १८, अविद्वान्, १९, शांति रहित, २० अरतिवाला, २१, रतिवाला, २२, शोकवाला, २३, भयवाला, २४, रागी, २५, द्वेषी, २६, भूखा, २७, रोटी खानेवाला, २८, रोटी खाकर शौच जानेवाला, २९, माखन खानेवाला, ३०, दूध पीनेवाला, ३१, बछडेका मांस खानेवाला, ३१, नाकवाला, ३२, मुखवाला, ३३, कानवाला, ३४, देहवाला, ३५, होमीहूइ वस्तुका सूंघनेवाला, ३६, बालहत्या करनेवाला, ३७, अज्ञानी, ३८, पक्षपाती, ३९, निर्दय, ४०, भूलनेवाला, ४१, मांसकी भेट करनेवाले ऊपर खुश होनेवाला, ४२, लोकोंके साथ फिरनेवाला, ४३, गुणकारी वस्तुकों भुलानेवाला, ४४, मतिज्ञा

करके तिसकों छोडनेवाला, ४९, इत्यादि अनेक दूषण ईसाइयोंकी तौरेतसें ईश्वरमें सिद्ध होते है, तोभी ईसाइ लोक मिथ्याभिनिवेश नही छोडते है, और परम परमात्मा जैन सिद्धांतोक्त सिद्धोंको जिनमें पूर्वोक्त दूषणोमेंसें एकभी दूषण नही है उनकों नही मानते है, और जिसमे अनेक दूषण है, जो किसी प्रमाणसेभी ईश्वर नही सिद्ध होता है, तिसकों ईश्वर कहे जाते है, यह ईसाइयोकी कैसी भूल है? निर्दोष ईश्वर सिद्धोंको छोडके मनकल्पित ईश्वर मानके तिससें मुक्तिफल मांगते है यह काम इसाईयोंका हमारे मनकों बहुत दिलगीर करता है, कि ईसाइ अपने भोलेपनेसें क्यों मनुष्यजन्मकों बिगाडते है? जैन मतोक्त शुद्ध अरिहंत सिद्ध परमेश्वरकों सत्य मानकर अपना कल्याण क्यों नही करते है? इस वास्ते जैन मतमें जो सिद्धपद माना है तिसकी जग मतजंगीयोंनें एक ईश्वर माना है, इनका मानना ईश्वरकी ईश्वरत्वका नाश करता है. हे बुद्धिमानो! ईसाइयो! जो तुमनें बाइबल माना है, सो पुस्तक ईश्वरका करा हूआ

याने रचाहूआ नही है, किसी जंगली अविद्वानने रचा है अैसा इसके लेखसेंही सिद्ध होता है, ॥

इति द्वितीय सिद्धपद २ अथ आचार्य उपाध्याय साधुपदका स्वरूप। प्रथम ईसाइयोंके आचार्यादिकोंका स्वरूप लिखते है ॥

(खुरूज) मूसाहकी दूसरी किताब.

तौरेतयात्राकी पुस्तक.

जब मूसा सयाना हुआ और अपने भाइयोंमेसें एक इबरानीको देखाकि मिश्री उसे मार रहा है, ॥ तब उसने इधर उधर दृष्टि कि, देखाकि कोई नहीं तब उसने उस मिश्रीको मारडाला, और बालूमे उस्से छूपा दिया, ॥ जब वह दूसरे दिन बाहर गया तो देखो दो इबरानी आपसमे झगड रहे है, तब उसने उस अंधेरीको कहा तुं अपने परोसीको क्यों मारता है, तब उसने उसें कहाकि किसने तुजे हमपर अध्यक्ष अथवा न्यायी ठहराया है. क्या तुं चाहता है कि जिस रीतसे तुंने मिश्रीको मार डाला मुजेभी मार डाले,

तब मूसा डरा, और भागनिकला ॥ तौ० । या० प० २ । आ० ११ ॥ १२ । १३ । १४ । १५ ॥ पत्र. ११०

परीक्षक—अब देखिये जो बाइबलका मुख्य सिद्धकर्त्ता आचार्य मूसा कि जिसका चरित्र क्रोधादि गुणोसे युक्त मनुष्यकी हत्या करनेवाला और चौरवत् राजदंडसे बचनेहारा अर्थात् जब बातको छिपाताथा तो झूठ बोलनेवालाभी अवश्य होगा, एसे कोभी ईश्वर मिला वह पेंगबर बना । उसने यहूदी आदिका मत चलाया, वहभी मूसाहीके सदृश हुआ, इस लिये ईसाइयोंके जो मूलपुरुष कौन हैं वे सब मूसासे आदि लेकरके जंगली अवस्थामेथे, विद्या अवस्थामें नहीं थे, जो विद्या अवस्थामें होते तो एसा अनुचित आचरण क्युं करते ? यदुक्तं (आगमे) आर्यावृत्तम् ॥ तज्ज्ञानमेवन भवति, यस्मिन्नुदिते विभाति रागगणः तमसः कुतोस्ति शक्तिः, दिनकर किरणाग्रतः स्थातुं, १,

और फसहमेम्ना मारो और एक मूठी जूफाले-

ओ और. उसे उस लोहूमें जो बासनमें है बोरके ऊ-परकी चौखटके और द्वारकी दोनों और उस छापो, और तुममेंसे कोई विहानलों अपने घरके द्वारसे बा-हर न जावे, । क्योंकि परमेश्वर मिस्रके मारनेके लिये आरपार जायगा, और जब वह ऊपरकी चौखटपर और द्वारकी दोनों और लोहूको देखे तब परमेश्वर द्वारसे बीत जायगा, । और नाशक तुह्मारे घरोंमें न जाने देगा कि मारे ॥ तौ० या० प० १२। आ० २१ २२ । २३ ॥ १३१.

परीक्षक—भला यह जोटोंनें टामन करनेवालेके समान है, वह ईश्वर सर्वज्ञ कभी हो सकता है ? जब लोहूका छापा देखे तभी इसराइल कुलका घर जाने अन्यथा नहीं, यह काम क्षुद्र बुद्धिवाले मनुष्यके सदृश है, इससे यह विदित होता है कि ये बातें किसी जं-गली मनुष्यकी लिखी है नही तो परमेश्वरको हिंसक असमर्थ २ अज्ञानी कदापि न लिखता । मेम्ना मरवाके इसराइलीयोंके बचानेके वास्ते लोहू छिडकाना यह बहुत निर्दय पुरुषका काम है,॥ परमेश्वर दयालुका नही,॥

और यों हुआ कि परमेने आधीरातको मिश्रके देशमें सारे पहिलौंठेको फिरा जनके पहिलौंठलेसे के जो अपने सिंहासनपर बैठता था उस बंधुआके पहिलैठेलो जो बंदीगृहमें था पनके पहिलौंठे समेत नाश किये, और रातको फिर ऊन उठा वह और उसके सब सेवक और सारे मिश्री उठे और मिश्रमें बडा विलाप था क्योंकि कोई घर न रहा जिसमें एक न मरा ॥ तौ० या० प० १२। आ० २९। ३० ॥ १३२.

परीक्षक—वाह! अछा आधी रातको डाकूके समान निर्दयी होकर ईसाइयोंके ईश्वरने लडकवाले वृद्ध और पशुतकभी विन अपराध मार दिये, और कुछभी दया न आई, और मिस्रमें बडा विलाप होता रहा तोभी ईसाइयोंके ईश्वरके चितसें निष्ठुरता नष्ट न हुई, एसा काम ईश्वरका तो क्या किंतु किसी साधारण मनुष्यकेभी करनेको नहीं है, यह आश्चर्य नहीं. क्योंकि लिखा है। " मांसाहारिणः कुतोदया" जब ईसाइयोंका ईश्वर मांसाहारी है तो उसको दया

करनेसे क्या काम है ! जो कभी ईसाइयोंके ईश्वरने इसरायलीयोंके ईश्वरने इसरायलीयोंका पक्ष करना था तो फिर उन प्रमुख ईसरायलीयोंके शत्रुयोंको मारता तो बालहत्या रूप महा पाप न करता, तो हम ऐसा समझते कि ईसाइयोका ईश्वर दिल्लीको कतल करनेवाला एक नादिरशाह समान था, परंतु विना गुनाह मनुष्य और पशुयोंके बालपहलौठे बच्चोंको मारनेवालेको ईश्वर समझना यह बुद्धिमानोका काम नहीं॥ऐसेईश्वरके घमंडसे ईसाइ लोग सच्चे निर्दोष अरिहंत सिद्ध आचार्यादिकोंको छोडके निर्दय ईश्वरकी सेवासें मुक्त होना चाहते है !

परमेश्वर तुह्मारे लिये युद्ध करेगा इस्रायेलके संतानसे कहकि वे आगे बढें, परंतु तुं अपनी छडीउठा, और समुद्रपर अपना हाथ बढा, और उससे दो भाग कर, और इस्रायेलके संतान समुद्र के बीचोंवीचसे सूखी भूमी में होकर चले जायेगे, ॥ तौ० ॥ या० प० १४ । आ १४ । १५ । १६ ॥ १३७

परीक्षक—क्योंजी ! आगे तौ ईश्वर भेंडोके पीछे गडरिये के समान इस्रायेल कुलके पीछे पीछे डोलाकर

ताथा, अब न जाने कहां अंतरधान हो गया। नहीं तो समुद्रके बीचमेंसे चारों औरकी रेलगाडियोंकी सडक बनवा लेते जिससे सब संसारका उपकार होता और नाव आदि बनानेका श्रम छूट जाता, परंतु क्या किया जाय ईसाइयोंका ईश्वर जाने कहां छिप रहाहै ? इत्यादि बहुतसी मूसाके साथ असंभव लीला बाइबलके ईश्वरने कीहै, परंतु यह विदित हुआ कि जेसा इसाइयोंका ईश्वर है वैसेही उसके सेवक और एसीही उसकी बनाई पुस्तक है, । एसी पुस्तक और एसा ईश्वर हम लोगोंसे दूर रहैतभी अछा है, । क्या परमेश्वर इसरायलीयोंका नोकर था ? जो उनकी तर्फसें युद्ध करेगा। विना युद्ध करे एक छिनमें सर्व शत्रुयोंकों नहीं मार सक्ताथा, सत्यहै कि आंधे चूहे थोथेधान जैसै गुरु तैसै जजमान ॥ अफशोस है कि इसाईयो बुद्धिमान् अरु इलमदार होकरके सत्यासत्य बातमें निर्णय करनेकुं तत्पर नहीं होते है,—क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर उवलित सर्व शक्तिमान् हुं, पितरोंके अपराधका दंड उनके पुत्रों को जो मेरा वैर

रखते हैं उनकी तीसरी और चोथी पीढी लौं देवैया हुं, ॥ तौ० या० २० रया आ० ५ ॥ १४९ ॥

परीक्षक—भला यह कौस घरका न्याय है कि जो पिता के अपराधसें चार पीढी तक दंड देना अछा समजना. क्या अछे पिताके दुष्ट और दुष्टके अछे संतान नहीं होते ? जो एसा है तो चोथी पीढी तक दंड कैसे दे सकेगा ? और जो पांचवी पीढीसें आगे दुष्ट होगा उसका दंड न दे सकेगा, विना अपराध किसीका दंड देना अन्यायकारीकी बात है, । तथा ईश्वर उनकों डराता क्यों था ? सबके अंतःकरणको शुद्ध क्यों न करसका ? इतनी ऊतपटंग बाते काहेको कहता रहा ? जैनराजे वैष्णवराजे मुसलमान राजे बहुत पीहडीयों तक राज्य करते रहे है, ईसाइयोंके ईश्वरने किसीके ईश्वरने किसीकोंभी दंड न दीया, विश्रामके दिनको उसे पवित्र रखनेके लिये स्मरण कर, । छःदिन लों तुं परिश्रम कर, और सातवा दिन परमेश्वर तेरे ईश्वरका विश्राम है, परमेश्वरने विश्राम दिनको आशीष दी, ॥ तौ० या० प० । २०

आ० ८। ९। १०। ११ १४९

परीक्षक—क्या रविवार एकही पवित्र और छः दिन अपवित्र हैं ? और क्या परमेश्वरने छः दिन तक बडा परिश्रम किया था कि जिससे थकके सातवे दिन सो गया, और जो रविवारको आशीर्वाद दिया तो सोमवार आदि छःदिनों को क्या दिया ? अर्थात् शाप दिया होगा, एसा काम विद्वान् काभी नहीं तो ईश्वरका क्यों कर हो सकता है ? भला रविवार मैं क्या गुण और सोमवार आदिमें क्या दोष कियाथा कि जिससे एकको पवित्र तथा वरदिया और अन्योंको एसेही अपवित्र करदिये, यहां ईसाइयोंके ईश्वरने भूल खाइ, क्योंकि जिन छ दिनोंकी मदतसें रचना रची तिनको तो आशीष न दीनी, और जिस रविवारको कुछभी न रचा तिस नपुंसक वारको आशीषदीनी, । जिन बैलोंसें हलवाहा, तिनको भूषा मारा, और निकम्मे सांढको पोषा, वाह ! ईसाइयोंके ईश्वरकी समझका क्या कहना है, इसके भरोसे ऊपर तो ईसाइ स्वर्गकी वांछा करते है ॥

अपने परोसीपर जूठी साक्षी मत दे, अपने परोसीकी स्त्री और उसके दास उसकी दासी और उसके बैल और उसके गदहे और कीसी वस्तुका जो तेरे परोसीकी है लालचमतकर, ॥ तौ० या० प० आ० १६ ॥ १७ ॥ १४९

परीक्षक—वाह! तभी तो ईसाइलोग परदेसियों के मालपर एसे झुकते है कि जानो प्यासा जलपर, भूखा अन्नपर, जैसी यह केवल मतलब युक्त और पक्षपातकी बात है एसाही ईसाइयोंका ईश्वर अवश्य होगा. यदि कोई कहे कि हम सब मनुष्य मात्रको परोसी मानते है तो सिवाय मनुष्योंके अन्य कौन स्त्री । और दासी वाळे हैं कि जिनको अपरोसी गिने, ईसलिये ये बातें स्वार्थी मनुष्योंकी हैं ईश्वरकी नहीं. तथा परोसीकों मारडालना परमेश्वरने क्यों नहीं मना करा ? क्या मारडालनेंसे पाप नहीं समझा ? तथा परोसीकी वस्तुका लालच करना तो मना करा, परंतु परोसीके घरकों आग लगाना निषेध क्यों न करा, । आग लगानेमें कुछभी लालच नही है, ॥ इत्यादि

वृत्तांतसें ईसाइयोका ईश्वर मतलबी अरु पक्षपात वाला सिद्ध होता है,

सो अबलडकोंमेंसे हरएक बेटेको और हरएक स्त्रीको जो पुरुषसे संयुक्त हुईहो प्राणसे मारो। परंतु वे बेटियों जो पुरुषसे संयुक्त नहीं हुई हैं उन्हे अपने लिये जीती रक्खो. तौ०। प० ३१। आ० १७। । १८। गिनती ३४८

परीक्षक—वाहजी मूसापैगंबर और तुह्मारा ईश्वर! धन्य है कि जो स्त्री बालक वृद्ध और पशुआदिकी हत्या करनेसेभी अलग न रहे, और इससे स्पष्ट निश्चित होता है कि मूसा विषयीथा, क्योंकि जो विषयी न होता तो अक्षतयोनि अर्थात् पुरुषोंसे समागम नकी हुई कन्याओंको अपने लिये मंगवाता वा उनको एसी निर्दय वा विषयीपनकी आज्ञा क्योंदेता? ऐसे मूसेके साथ परमेश्वर तुष्टमान होकर बातें करता था. जब ईशाइयोंका ऐसा ईश्वर और मूसे सरीखा आचार्य भलामानस दयावान् औरशीलवान् था तो फेर ईसाइ क्यों नही स्वर्गमें जावेंगे?॥ जो

कोई किसी मनुष्यको मारे और वह मर जाय वह निश्चय घात किया जाय, और वह मनुष्य घातमें न लगाहो परंतु ईश्वरने उसके हाथमें सौंप दिया हो तब मैं तुजे भागनेका स्थान बतादुंगा, ॥ तौ० प० २१ आ० । १२ । १३ ॥ १९१

परीक्षक—जो यह ईश्वरका न्याय सच्चाहै तो मूसा एक आदमीको मार गाड कर भाग गया था, उसको यह दंड क्यों न हुआ? जो कहो ईश्वरने मूसाको मारनेके निमित्त सौंपाथा, तो ईश्वर पक्षपाती हुआ, क्योंकि उस मूसाका राजासे न्याय क्यों न होने दिया, और जिसकों ईश्वरनें मूसाके हाथसें मरवाया तिसकों ईश्वरने उत्पन्न ही क्योंकरा? मूसा जिसको मारे सो ईश्वरने मरवाया अन्य कोई मारे तो फांसी चढे, वाह क्या सच्ची बात है! अपने बेर मिठे अन्य सबके खट्टे खट्टे पुनरापि खट्टे बस करो. ॥ और कुशलका बलिदान बैलोंसे परमेश्वरके लिये चढाया, और मूसाने आधा लोहू ले के पात्रोंमे रक्खा, और आधा लोहू वेदीपर छिटका, और

मूसाने उस लोहूको लेके लोगोंपर छिड़का, और कहा कि यह लोहू उस नियमका है जिसे परमेश्वरने इन बातोंके कारण तुह्मारे साथ किया है, । और परमेश्वरने मूसासे कहा कि पहाड पर मुजपास आ, और वहां रह, और मै तुजे पत्थरकी पटियां और व्यवस्था और आज्ञा जो मैंने लिखो है दुंगा. तौ० या० प० २० आ० ५ । ६ । ८ । १२ ॥–पत्र १५८

परीक्षक—अब देखिये ये अत्र जंगली लोगोंकी बात हैं वा नहीं? और परमेश्वर बैलोंका वलिदान लेता और वेदी पर लोहू छिटकना यह कैसी जंगलीपन और असभ्यताकी बात है! जब ईसाइयोंका खुदा बैलोंका बलिदान लेवें तो जीसके भक्त बैल गायके बलिदानकी प्रसादीसे पेट क्यौं न भरें? और जगत्की हानी क्यौं न करे? एसी २ बूरी बातें बाइबलमें भरी हैं और यहभी निश्चय हुआ कि ईसाइयोंका इश्वर एक पहाडी मनुष्य था, पहाड ऊपर रहता था, जब वह खुदा स्याही लेखनी कागज नहीं बना था और उन्ही जंगलियोंके सामने इश्वरभी बन बैठा था,

मूसे कों पहाडपर बुलाकर पट्टीयांदीनी, क्या तिसही जगा पट्टीयां न दे सका ? क्या पट्टीयां बहुत भारीथी ? तिनकों इश्वर न उठा सका ? पहाडपर इश्वरकी झूपडीथी जिसमें पट्टीयां रखीथी ?

तुं मेरा रूप नहीं देख सकता, क्यों कि मुजे देखके कोइ मनुष्य न जियेगा, और परमेश्वरने कहा कि देख एक स्थान मेरे पास है तुं उस टीलेपर खडा रह, और यों होगा कि जब मेरा विभव चालाक निकलेगा तो में तुजे पहाडके दरारमें रखूंगा, और जबलों जा निकलुं तुंजे अपने हाथसे ढांपूंगा, और अपना हाथ उठा लुंगा, और तुं मेरा पींछा देखेगा, परन्तु मेरा रूप दिखाइ न देगा. तौ० या० प० ३३ आ० । २० । २१ । २२ । २३ ॥ पत्र १८२.

परीक्षक—अब देखिये इसायोंका इश्वर केवल मनुष्यवत् शरीरधारी और मूसासें कैसा प्रपंच रचके आप स्वयं इश्वर वन गया, जो पीछा देखेगा रूप न देखेगा तो हाथसें उसको ढांप दियाभी न होगा ! जब खुदाने अपने हाथसें मूसाकों ढांपा होगा तब

क्या उसकें हाथका रूप उसने न देखा होगा ? इत्यादि इश्वरकी अरु मूसेकी असमंजस बातें सुनके हम तो बहुत आश्चर्य होते है के यह कैसी अजायबीकी बात है जो फक्त बालक (ऐइबार) के ख्याल जैसी बातकुं बुद्धिमानो जराभी नहीं सोचते है ?

लयव्यवस्थाकी पुस्तक तौ०

और परमेश्वरने मूसाको बुलाया और मंडलीके तंबूमेंसे यह वचन उसे कहा कि इसराएलके संतानमेंसें बोल और उन्हे कह यदि कोइ तुम्मेंसें परमेश्वरके लिये भेंट जावे तो तुम ढोरमेंसें गाय बैल और भेंड बकरीमेंसें अपनी भेंट लाओ०। तौ० लैव्य० व्यवस्थाकी पुस्तक प० १ । आ० १। २ । २०२ ।

परीक्षक—अब विचारिये इसाइयोंका परमेश्वर गाय बैल आदिकी भेंट लेनेवाला जोकि अपने लिये बलिदान करानेके लिये उपदेश करता है वह बैल गाय आदि पशुओंके लोहू मांसका प्यासा भूखा है या नहीं ? इसीसे वह अहिंसक और ईश्वरकोटिमें

गिना कभी नहीं जा सकता, किंतु मांसाहारी प्रपंची मनुस्यके सदृश है, जैसें वेदोंमें गाय बैलका बध करके अनेक देवतायोंकों आहूति देकें असंख्य गाय बैलोंका मांस यज्ञ करनेवाले ब्राह्मण खा गये है, इसी तरह ईसाइ लोगभी करते थे. इतना विशेष है कि वेदोंमें तो देवताकों आहूति देते है, और ईसाइयोंका तो ईश्वर साक्षात् बैलोकों मरवाकें तिनका मांस खाता था, और होमे हुए मांसकी गंधको सूंघता था. इस वास्ते धन्य है जैनमतके सर्वज्ञ सर्वदर्शि निःकलंक वीतराग देवकों कि जिसमें कोइभी कलंक नहीं था, । इस वास्ते प्रेक्षावान् पुरुषोंकों आंख मीचके सोचना चाहिये के, नार्हतः परमोदेवः। यह वचन कैसा सत्य है?

और वह उस बैलकों परमेश्वरके आगे बलि करे, और हारूनके बेटे याजक लोहूकों निकट लावे, और लोहूकों यज्ञवेदीके चारोंओर जो मंडलीके तंबूके द्वारपर है छिडके, तब वह उस भेटके बलिदानकी खाल निकाले, और उसें टुकडा २ करे और हारून के बेटे याजक यज्ञवेदीपर आग रख्खे, और उसपर

लकडी चुने, और हारूनके बेटे याजक उसके टुक डोंकों ओर शिर और चिकनाइकों उन लकडियोंपर जो यज्ञवेदीकी है आगपर विधिसें धरे, जिस तें बलि-दानकी भेंट होवे जो आगसे परमेश्वरके सुगंधके लिये भेंट किया गया, । तौ० लैव्यव्यवस्थाकी पुस्तक ॥ प० १ आ० । ५ । ७ । ८ । ९० ॥

परीक्षक—जरा विचार किजीयें कि बैलकों पर-मेश्वरके आगे उसके भक्त मारें और वह मरवावे, और लोहूकों चारों और छिडके, अग्निमें होम करें, ईश्वर सुगंध लेवे भला यह कसाईके घरसें कुछ कमती लीला है ? इसीसे न बाइबल ईश्वरकृत और न वह जंगली मनुष्यके सदृश लीलाधारी ईश्वर हो सकता है, यह बाइबल किसी दयावंतका रचा हूआ नहीं है, किंतु गौ बैलादिक जीवोंके मांस खानेवाले और लोहू छिडकनेवाले किसी निर्दय पुरुषका रचा सिद्ध होता है, इसायोंके मतमें दयाधर्मकी तौ गंधभी नही मालुम होती है, तोभी ईसाई परमदयालु सर्वज्ञ वीत राग अष्टादश दूषणरहित श्री अर्हत परमेश्वरका अना-

दूर करते है, कामधेनु छोडके भैंससें दूध काढना चांहते है, दूध तो क्या ? पानीभी नही निकलेगा ! ॥

फिर परमेश्वर मूसासें यह कहके बोला यदि वह अभिषेक किया हुआ याजक लोगोंके पापके समान पाप करे तो वह अपने पापके कारण जो उसने किया है अपने पापकी भेंटके लियें निसखोट एक वछिया परमेश्वरके लिये लावे, और वछियाके शिरपर अपना हाथ रख्खो, और वछियाका परमेश्वरके आगे बलि करे. लैव्य० । तौ० प० आ० १ । ३ । ४ । २०८.

परीक्षक—अब देखियें पापोंके छुडानेके प्रायश्चित्त स्वयं पाप करे, गाय आदि उत्तम पशुओंकी हत्या करे, ओर परमेश्वर करवावें, धन्य हैं ईसाई लोगों कि एसी बातोंके करने करानेहारेकेभी इश्वर मानकर अपनी मुक्ति आदिकी आशा करते है, और परमेश्वरकों कोमल बछियांके मांसका लोलपी बनाते है, और पापका छूटना वछियाके मारनेसें बताते है. यह काम अैसा है जैसें लोहूसें भरे वस्त्रकों लोहूसें धोयकर उज्वल करणा. भला कदापि वछडेके मा·

रनेसें पापोंसें पुरुष छूट सकता है.

जब कोइ अध्यक्ष पापकरे, तब वह बकरीकी निसखोट नर मेम्ना अपनी भेंटके लिये लावे, ॥ और उस परमेश्वरके आगे बली करे, यह पापकी भेंट है, तौ,० लै० प० ४ आ० । २२ । २३ । २४ ॥

परीक्षक—वाहजी वाह ! यदि एसा है तो इनके अध्यक्ष अर्थात् न्यायाधीश तथा सेनापति आदि पाप करनेसें क्या डरते होंगे ? आप तो यथेष्ट पाप करे, और प्रायश्चितके बदलेमें गाय, वछियां, बकरे आदि के प्राण लेवे, तभी तो इसाइलोग किसी पशु वा पक्षी के प्राण लेनेमें शंकित नहीं होते. सुनो इसाइलोगो ! अब तो इस जंगलीमतको छोडके सुसभ्य धर्ममय जिनमतको स्वीकार करो, कि जिससें तुह्मारा कल्याण हो, भला कदापि अनाथ अति दीन रंक निरापरधी करुणास्पद बकरीके बच्चेके मारनेसेंभी पापोंसें छूटेगा तो क्या परंतु असे उपदेशकादाता और कर्त्ता नरक कुंडमें तो पड सकते है, यह जैन मतका सिद्धांत है. ॥

और यदि उस भेटलानेकी पूंजी न हो तो वह अपने कियेहुए अपराधके लिये दो पिंडुकियां और कपोतके दो बच्चे परमेश्वरके लिये लावे, और उसका शिर उसके गलेके पाससे मरोड डाले, परंतु अलग न करे, और उसके कियेहुए पापका प्रायश्चित करे, और उसके लिये क्षमा किया जायगा, परयदि उसे पिंडुकियां औरकपोतके दो बच्चे लानेकी पूंजी न हो तो सेरभेर चोखा पिसानका दशवा हिस्सा पापकी भेंट के लिये लावे, । उसपर तेल न डाले, ॥ और वह क्षमा किया जायगा. ॥ तौ० लै० । प० ५ । आ० । ७ । ८ । १० । ११ ॥ १३ ॥—२०१

परीक्षक—अब सुनिये इसाइयोंमें पाप करनेसें कोइ धनाढ्य दरिद्रभी न डरता होगा, और न गरीब क्यों कि इनके इश्वरने पापोंका प्रायश्चित करना सहज कर रक्खा है, एक यह बात इसाइयोंकी बाइबलमें बडी अद्भुत है विना कष्ट किये पापसें छूट जाय, क्योंकि एक तो पाप किया और दूसरे जीवोंकी हिंसाकी, और खूब आनंदसें मांस खाया, और पापभी छूट

गया. भला कपोतके बच्चेका गला मरोडनेसें वह बहुत देरतक तडफता होगा, तबभी इसाइयोंको दया नहीं आती, दया क्यों कर आवे इनके इश्वरका उपदेश ही हिंसा करनेका है, और जब सब पापका प्रायश्चित्त है, तो इसा के विश्वाससे पाप छूट जाता है, यह बडा आडंबर क्यों करते है, । बाइबलमें जब औसा उपदेश है तबही तो ईसाईलोग अंडोकारस और जानवरोंके बच्चोंका गला निर्दयतासें मरोडके खा जातेहै, और बंदुकोसें जंगलोमें जानवरोंका कलेजा दग्ध करतेहै, मांस खातेहै, अंडे चूसतेहै, स्त्रीयोंसें विषय भोगतेहै, जप तप संयम सत् संतोषशील नही धारण करतेहै, सच्चे अर्हत भगवंत परम पवित्र ईश्वरकी सेवा भक्ति नही करतेहैं, मतकरो "यहां तो सदाही धूमधामही चलाइ पर उहां तो नहीहै कछु राज पोपांबाइको॥"

सो उस बलिदानकी खाल उसी याजककी होगी जिसनें उसे चढाया और समस्त भोजनकी भेंट जो तन्दूरमें पकाई जावें और सब जो कडाहीमे अथवा तवे पर सो उसी याजककी होगी ॥ तौ० लै० पं० । ७ ।

आ० ८ । ९ ॥ २१४ ॥

परीक्षक—हम जानतेथे कि यहां देवीके भोपे और मंदिरोंके पूजारियोंकी पोपलीला विचित्रहै, परंतु ईसाइयोंके इश्वर और उनके पूजारियोंकी पोप लीला इससे सहस्त्र गुणी बढकरहै, क्योंकि चामके दाम और भोजनके पदार्थ खानेकों आवें फिर ईसाइयोंने खूब मौज उडाई होगी, और अबभी उडातेहोंगे,। भला कोई मनुष्य एक लडकेको मरवावे ओर दूसरे लडकेको उसका मांस खिलावे, एसा कभी हो सकताहै ? वैसेही ईश्वरके सब मनुष्य और पशुपक्षी आदि सब जीव पुत्रवत्है, परमेश्वर एसा काम कभी नही कर सकता,। इसीसे यह बाइबल इश्वरकृत और इसमें लिखा ईश्वर और इसके माननेवाले धर्मज्ञ कभी नहीं हो सकते, एसीही सब बातें लैव्यवस्था आदि पुस्तकोंमे भरीहै कहांतक गिनावें, हम ऐसें सोचते है कि इधर तो ब्राह्मण लोगोंनें वेदोकी श्रुतीयां पडके गाय बैल घोडे बकरे प्रमुख जानवर होमने शूरु करेथे, और इधर इसाइ आदि मतवालेभी

ऐसाही काम करतेथे, जो कभी जैनमतादि दयाधर्मीयों-का उपदेश जगत वासीयोंका न होता तो इन देशोमे कोइभी पशु पक्षी जीवता न रहता. वैदिक मतवाले और बाईबल कुरानादि पुस्तकोंके माननेवाले सर्व पशु पक्षीयोंका भक्षण कर जातेहै, धन्यहै उस दयालु अर्हत परमेश्वरकों के जिसके उपदेशसें इतने पशु प-क्षीयोंका वंश जगतमे रहाहै.

गिनतीकी पुस्तक ।

सो गदहीने परमेश्वरके दूतको अपने हाथमें त-लवार खेंचे हुए मार्गमें खडा देखा, तब गदही मार्ग सें अलग खेतमें फिर गई, उसे मार्गमें फिरनेके लिये बलआमने गदहीकों लाठीसें मारा, तब परमेश्वरने गदहीका मुह खोला, और उसने बलआमसे कहा कि मैने तेरा क्या किया है कि तुने मुजे अब तीन बार मारा, । तौ० गि० प० २२ आ० २३ । २८ । ३२९ ॥

परीक्षक—प्रथम तो गदहे तक ईश्वरके दूतों-को देखतेथे, और आजकल बिशप पादरी आदि

श्रेष्ट वा अश्रेष्ट मनुष्योंकोभी खुदा वा उसके दूत नहीं दीखते हैं. क्या ? आजकल परमेश्वर और उसके दूत है वा नहीं ? यादि हैं तो क्या बडी निंदमें सोते है वा रोगी अथवा अन्य भूगोलमें चले गये वा किसी अन्य धंधेमें लग गये, वा अब ईसाइयोंसें रुष्ट हो गये, अथवा मर गये ? विदित नहीं होता कि क्या हुआ, अनुमान तो अैसा होता है कि जो अब नहीं है, नहीं दीखते तो तबभी नहींथे, और नहीं दीखते होंगे, किंतु ये केवल मनमाने गपोडे उडाये हैं, निकेवल छोकरायोंके सरीखी बातें बना रख्खी है, प्रेक्षावान् तो अैसा कथन कदापि नही मानेंगे, परंतु मांसाहारी मद्य पीने वाले पांचों इंद्रियके विषयमे रक्त, शरीरको मांस खाय खाय करके पुष्ट करनेवाले तो मानेगें, परंतु जैनमतका तो एक जानकार छोकराभी सुनके छिछि करेगा, । इसाइ लोग संसारीक विद्यामें बहुतबळ फोरते है, परंतु धर्मपरिक्षा करनेमे तो सूते समान हो रहे है ! अपनेही असत् आग्रहेकों सत्यमान रहे है, यह काठकी हांडी कहां तक अग्निपर चढेगी ।।,

समुएलकी दूसरी पुस्तक.

और उसी रात ऐसा हुआ कि परमेश्वरका बचन यह कहके नातनको पहूंचा कि जा और मेरे सेवक दाऊदसे कह कि परमेश्वर यों कहता है मेरे निवासके लिये तुं घर बनावेगा क्यों जबसे इसराएलके संतानको मिश्रसें निकाल लाया मैंने तो आजके दिनलों घरमें वास न किया परंतु तंबुमें और डेरेमें फिरा किया, । तौ० समुएलकी दूसरी पुस्तक० । प० ७ । आ० ४ । ५ । ६ । ६२१ ॥

परीक्षक—अब कुछ संदेह न रहा कि ईसाइयों का ईश्वर मनुष्यवत् देहधारी नहीहैं, । और उलहना देता हैं कि मैंने बहुत परिश्रम किया इधर उधर डोलता फिरा, अब दाउद घर बना दे तो उसमे आराम करूं, क्यों ईसाइयोंको एसे ईश्वर और एसे पुस्तक को माननेमें लज्जा नहीं आती ? परंतु क्या करें बिचारे फसही गये, अब निकलनेके लिये बडा पुरुषार्थ करना उचित है, क्या ईसाई इन बातोंको न सोचते

होंगे, कोइ बुद्धिमान सोचताभी होगा तोभी कुयेके मेंडककी तरे कूद कादके कहां निकल जावे! अर्हत देवके मत रूपीया समुद्र तो देखा नही, और न निककलनेका रस्ता मालूम है, एक इसाईमतका पुस्तक ही देखा है. ॥

राजायाको पुस्तक.

सलतनतकी दूसरी किताब.

और बाबुलके राजा नबूखुद नजरके राज्यके उन्नीसवें बरषके पांचवे मास सातवी तिथिमें बाबुलके राजाका एक सेवक नबूसर अदान जो निज सेनाका प्रधान अध्यक्षथा, यरूसलममें आया, और उसने परमेश्वरका मंदिर और राजाका भुवन और यरूसलमके सारे घर और हरएक बडे घरको जला दिया, और कसदियोंकी सारी सेनाने जो उसनिज सेनाके अध्यक्षके साथथी यरूसलमकी भीतोंको चारों औरसोंढा दिया, ॥ तौ० । रा० प० २५। आ० ८।९।१०॥ ७९?

परीक्षक—क्या किया जाय ईसाइयोंके इश्वरने तो अपने आरामके लिये दाऊद आदिसे घर बनवायाथा, उसमें आराम करता होगा, परंतु नबूसर अहानने इश्वरके घरको नष्ट भ्रष्ट करादिया, और इश्वर वा उसके दूतोंकी सेना कुछभी न कर सकी, प्रथम तो इनका ईश्वर बडी लडाइयां मारताथा और विजयी होताथा, परंतु अब अपना घर जला तुडवा बैटा, न जाने चुप चाप क्यों बैठा रहा! ॥ और न जाने उसके दूत किधर भाग गये, ॥ एसे समयपर कोईभी काम न आया, और इश्वरका पराक्रम भी न जाने कहां उड गया, यदि यह बात सच्ची हो तो जो २ विजयकी बातें प्रथम लिखी सो २ सब व्यर्थ हो गई, क्या मिस्रके लडके और लडकियोंके मारनेमेंही शूरवीर बनाथा? अब शूरवीरोंके सामने चुप चाप हो बैठा, यह तो ईशाईयोंके ईश्वरने अपनी निंदा और अप्रतिष्ठा करा ली एसेही हजारों इस पुस्तकमें निकम्मी कहानियां भरीहै, । ऐसे ईश्वरको ईसाइ जगतका रचनेवाला मानतेहै जो

अपना घरभी न बचा सका, इसी वास्ते तो लोकोंने ऊ-तपटंगी विषयी अज्ञानीयोंको ईश्वर मानके जगतका कर्त्ता मानाहै, क्यों कि यथार्थ तत्वका ज्ञान तो मिला-नही और जगत स्वरूपकों अनादि समझा नही, कि किस रीतसें इस जगतकी रचना व्यवस्था हो रहीहै,। कर्त्ता ईश्वरहै इसी भ्रम चक्रमें गोते खा रहेहै. ॥

ज़बूर दूसरा भाग.

तवारिख

कालके समाचारकी पहेली पुस्तक.

सो परमेश्वर मेरे ईश्वरने इसराएलपर मरी भेजी और इसराएलमेंसे सत्तर सहस्र पुरुष गिर गये, काल० दू० २ । प० २१ आ० १४

परीक्षक—अब देखिये इसराएलके ईसाइयोंके ईश्वरकी लीला! जिस इसराएल कुलकों बहुतसे बर दियेथे और रात दिन जिनके पालनमें डोलताथा, अब जरा क्रोधित होकर मरी डालके सत्तर सहस्र मनुष्योंकों । मार डाला, जो यह किसी कविने लिखा है सत्यहै किः—

क्षणे रुष्टः क्षणे तुष्टा रुष्टः थुष्टः क्षणे क्षणे ॥
अव्यवस्थिताचित्तस्य । प्रसादोऽपि भयंकरः ॥ १ ॥

जैसे कोई मनुष्य क्षणमें प्रसन्न क्षणमें अप्रसन्न होताहै, अर्थात् क्षण २ में प्रसन्न अप्रसन्न होवे उसकी प्रसन्नताभी भयदायक होतीहै, वैसी लीला ईसाइयोंके ईश्वरकीहै, बुद्धिमानो! यह ईश्वरकी लीला नही किंतु किसी अज्ञानी निर्दयीकी लीलाहै, क्योंकि जब इसरायलीयोंकों मरीसें मारताथा तो तिनको प्रथम उत्पन्नही काहेकों करनाथा? अैसे ईश्वरके मनाने वास्तें ईसाइलोक छोटे २ हिंदुयोंके छोकरोंको बहकाके जाति और धर्मसें भ्रष्ट करतेहै, यह काम बुहुत बुराहै. ॥

एयूबकी पुस्तक.

और एक दिन एसा हुआकि परमेश्वरके आगे ईश्वरके पुत्र आ खडे हुए, और शैतानभी उनके मध्यमें परमेश्वरके आगे आ खडा हूआ, । और परमेश्वरने शैतानसें कहा कि तुं कहांसें आताहै, तब शैतान-

ने उत्तर देके परमेश्वरसे कहा कि पृथिवीपर घुमते और इधर उधरसें फिरते चला आताहुं, । तब परमेश्वरने शैतानसें पूछा कि तुने मेरे दास एयूबको जांचाहै कि उसके समान पृथिवीमें कोई नहीहै, वह सिद्ध और खरा जन ईश्वरसें डरता और पापसे अलग रहताहै, और अबलों अपनी सच्चाइको घर रख्खा है, और तुने मुजे उसे अकारण नाश करनेको उभारा है, ॥ तब शैताननें उत्तर देके परमेश्वरसें कहा कि चामके लिये चाम हां जो मनुष्यका है सो अपने प्राणके लिये देगा, परंतु अब अपना हाथ बढा और इसके हाडमांसको छु तब वह निःसंदेह तुजे तेरे सामने त्यागेगा, तब परमेश्वरने शैतानसें कहा कि देख वह तेरे हाथमेंहै केवल उसके प्राणको बचा, तब शैतान परमेश्वरके आगेसें चला गया, और एयूबको शिरसें तलवेलों बुरे फाडोसें मारा, ॥ जबूर एयू० प० २ । आ० १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ ९८९

परीक्षक—अब देखिये ईसाइयोके ईश्वरका सा-

मर्थ्य कि शैतान उसके सामने उसके भक्तोंको दुःख देता है, न शैतानको दंड, न अपने भक्तोंको बचा सक्ता है, और न दूतोंमेंसें कोइ उसका सामना कर सक्ता है, एक शैतानने सबकों भयभीत कर रक्खा है, और ईसाइयोंका ईश्वरभी सर्वज्ञ नहीं है, जो सर्वज्ञ होता तो ऐयूबकी परीक्षा शैतानसें क्यों कराता ? ऐसी २ बहुत असमंजस वातें बायबलमें ईश्वर विषय और मूसादि ईसाइयोंके आचार्योंके वास्ते लिखीहै, इन बातोंसें ईश्वर तो क्या सिद्ध होवेगा, परंतु अज्ञानी निर्दय कोइ समान जंगली अविद्वानही सिद्ध होवेगा, ऐसेही मूसादि सर्व आचार्यहै. । अब देखिये अठार ह दूषण रहित अरिहंत सिद्ध परमेश्वरके माननेवाले, और छत्रीस ३६ गुण संयुक्त आचार्य, और पच्चीस २५ गुण संयुक्त उपाध्यायके माननेवाले, और सत्ता-इस २७ गुण संयुक्त साधूयोंके माननेवाले, और जीवहिंसा झूठ चोरी स्त्रीसेवन परिग्रहके त्यागी नरक स्वर्ग पाप पुन्यके माननेवाले, निःकलंक देव गुरु धर्मके माननेवाले, इत्यादि अनेक गुण संयुक्त ऐसे जैन

मतके माननेवाले, पुरुषोंको तो ईसाइ नास्तिक कहतेहै, और अज्ञानी, रागी, द्वेषी, विषयी, निर्दय आदि अनेक अवगुण संयुक्तको ईश्वरमानना, और निर्दय चोरी झूठादि पाप सेवनेवालेको आचार्यमानना, और मांसमद्य स्त्री सेवके स्वर्ग जानेवाले माने तिनको आस्तिक कहना, इससे अधिक जगतमें अन्य अतिहास्यका पात्र कौनहै ? इस वास्ते अरिहंत, १ सिद्ध, २ आचार्य, ३ उपाध्याय, ४ साधू,५ ये पंचपरमेष्ठि रूप, नमस्कारके विना अन्य और कोइ ईश्वर जगतका कर्त्ता नही है, । और जो ईसाइयोंने अपनी तौरेत १ जबूर २ इंजीलमें जगत कर्त्ता ईश्वर लिखा है और तिस ईश्वरका स्वरूप लिखा है और ईश्वरका पुत्र ईसा लिखा है, और मूसादि मतके आचार्य लिखे है, ये सर्वस्व कपोल कल्पित यथार्थ गुणोंसें रहित लिखे है, इसीतरे सर्वमतो वालोंनें जैन मतकी इर्ष्यासें जैनमतके पंच परमेष्ठीको बोलके पंच परमेष्ठीकी जगे अपने रमतके देव कल्पना करे है, । इस कथनकी सत्यता जिसने देखनी होवे सो

अपनी अति निर्मल बुद्धिसें पक्षपात छोडकर विचारे तो सर्व यथार्थ मालुम हो जावेगा, परंतु विकारी, रागी, द्वेषी, असर्वज्ञ, स्वार्थी, अभिमानी, अपनी महिमाका भूखा, निर्दय, इत्यादि अवगुण वालेको इश्वर और जीवहिंसा झूठ चौरी स्त्रीसेवन परिग्रह संयुक्त, मांसभक्षी, मद्यपानी, इत्यादि अवगुण वालेको गुरु मानेगा वो अवश्य जन्म मरणके दुःखोंसें न छूटेगा. ॥ जैनमतके पंच परमेष्ठीकी जगे झूठी कल्पना खडी करी है सो यंत्रसें देख लेना. ॥

जैन मत १	अरिहंत १,	सिद्ध २,	आचार्य ३	उपाध्याय ४	साधु ५,
सांख्य मत २	कपिल,	०	आसुरी,	विद्यापाठक,	सांख्यसाधु
वैदिक मत ३,	जैमनि,	०	भट्ट प्रभा-कर.	विद्यापाठक.	०
नैयायिक मत ४	गौतम,	एक इश्वर,	आचार्य नै-यायिक,	न्याय पा-ठक.	साधु,
वेदांत म-त, ५,	व्यास.	एक ब्रह्म.	आचार्योस्ति,	वेदांतपाठक,	परमहंसादि,
वैशेषिक मत ६	शिव,	एक ईश्वर,	कणाद,	पाठक,	साधु,

यहूदी मत ७	मूसा,	एक ईश्वर,	अनेक,	पाठक,	उपदेशक,
ईसाइ मत ८	ईशा,	एक ईश्वर,	पथरसमच्या आदि,	पाठक,	पादरी,
मुसल्मान मत ९	महम्मद.	एक ईश्वर,	अनेक	पाठक,	फकीर,
शंकर मत १०	शंकर,	एक ब्रह्म,	आनंदगिरि आदि,	शंकरभाप्यादि पाठक,	गिरि पुरि भारती आदि,
रामानुज मत ११	रामानुज,	एक ईश्वर, रामचंद्र,	अनेक,	रामानुज मत पाठक,	साधू वैश्नव
वल्लभ मत १२	वल्लभाचार्य,	एक ईश्वर कृष्ण,	अनेक,	वल्लभ मत पाठक,	तीसमतके साधू,

कबीर मत १३	कबीर,	एक ईश्वर,	अनेक,	तन्मतपाठक,	गृहस्थ साधू,
नानक मत १४	नानक,	एक ईश्वर,	अनेक,	ग्रंथपाठक,	उदासीसाधू,
दादू मत १५	दादू	एक ईश्वर,	सुंदरदासादि,	तत्ग्रंथ पाठक,	दादू पंथी साधू,
गोरख मत १६	गोरख,	एक ईश्वर,	अनेक,	तत्ग्रंथ पाठक,	कानफटे योगी,
सामीनारायण १७	सामीनारायण,	एक ईश्वर,	स्त्री और परिग्रहधारी,	तत्ग्रंथ पाठक,	रंगेवस्त्रवाले धोलेवस्त्रवाले
दयानंद मत १८	दयानंद,	एक ईश्वर,	आस्ति	तन्मतपाठक,	०

इत्यादि मत धारीयोंने पंच परमेष्टीकी जगे पांच २ वस्तु कल्पना करी है, इस वास्ते पंचपरमेष्टींके विना अन्य कोइ सृष्टिका कर्त्ता सर्वज्ञ वीतराग ईश्वर नही है, । निःकेवल लोकौकों अज्ञान भ्रमसें सृष्टिकर्त्ताकी कल्पना उत्पन्न होती है, ।

पूर्वपक्ष—कोइ प्रश्न करे के जो कभी सर्वज्ञ वीततराग ईश्वर जगतका कर्त्ता नहीं है, तो यह जगत अपने आप कैसे उत्पन्न हुया ? क्यों कि हम देखते है कर्त्ताके विना कुछभी उत्पन्न नहीं होता है, । जैसे घडीयालादि वस्तु. । तिसका उत्तर. हे परीक्षको ! तुमकों हमारा अभिप्राय यथार्थ मालुम पडता नहीं है इस वास्ते तुम कर्त्ता ईश्वर कहते हो, जो इस जगतमे बनाइ हुइ वस्तु है तिसका कर्त्ता तो हमभी मानते है ।.जैसें घट, पट, शराव, उदंचन, घडियाल, मकान, हाट, हवेली, संकल, जंजीरादि; परंतु आकाश, काल, स्वभाव, परमाणु, जीव—इत्यादि वस्तुयें किसीकी रची हुइ नहीं है, । क्यों कि सर्व विद्वानोंका यह मत है के जो वस्तु कार्यरूप उत्पन्न होती है ति-

सका उपादान कारण अवश्य होना चाहिये, विना उपादान के कदापि कार्यकी उत्पत्ति नहीं होती है, जो कोइ विना उपादान कारणके वस्तुकी उत्पत्ति मानता है सो मूर्ख पशुतुल्य प्रमाणका स्वरूप नहीं जानता है, तिसका कथन कोइ महामूढ मानेगा, इस वास्ते आकाश १ आत्मा २ काल ४ परमाणु ४ इनका उपादान कारण कोइ नहीं है, । इस वास्ते ये चारों वस्तु अनादि है इनका कोइ रचनेवाला नहीं है, । इस्सें यों यह कहना है कि सर्व वस्तुयें ईश्वरने रची है सो मिथ्या है, अवशेष वस्तु पृथवी १ पानी २ अग्नि ३ पवन ४ वनस्पति ५ चलने फिरनेवाले जीव रेह है, तथा पृथवीका भेद नरक स्वर्ग सूर्य चंद्र ग्रहन नक्षत्रतारादि है । ये सर्व जड चैतन्यके उपादानसें वने है, । जो जीव और जड परमाणुओंके संयोगसें वस्तु वनी है वे ऊपर पृथवी, आदि लिख आये है. ये पृथवी आदिवस्तु प्रवाहसें अनादि नित्य है, और पर्यायरूप करके अनित्य है, । और ये जड चैतन्य अनंत स्वभाविक शक्तिवालेहै, ।

वे अनंतशक्तियें अपने २ कालादि निमित्तके मिलनेसें प्रगट होतीहै। और इस जगतमें जो रचना पीछे हूइ है. और जो हो रहीहै और जो होवेगी सर्व पांच निमित्त उपादान कारणोंसें होतीहै, । वे कारण यह है। काल १ स्वभाव २ नियति ३ कर्म ४ उद्यम ५ इन पांचोके सिवाय अन्य कोइ इस जगतका कर्त्ता और नियंता ईश्वर किसी प्रमाणसे सिद्ध नही होताहै, तिसकी सिद्धिका खंडन पूर्वे—पहिले सब लिख आये है, । जैसे एक बीजमें अनंत शक्तियेंहै वृक्षमें जितनै रंग विरंगे मूल १ कंद २ स्कंध ३ त्वचा ४ शाखा ५ प्रवाल ६ पत्र ७ पुष्प ८ फल ९ बीज १० प्रमुख विचित्र रचना मालुम होतीहै, सो सर्व बीजमें शक्ति रूपसें रहतीहै, जब कोइ बीजको जलाके भस्म करे तब तिस बीजके परमाणुओमें पूर्वोक्त सर्व शक्तियें रहेतीहै, परंतु विना निमित्तके एकभी शक्ति प्रगट नहीं होतीहै, । जो कभी बीजमें शक्तियें न मानीये तब तो गेहूं के बीजसें आंब और बंबूल मनुष्य पशु पक्षी आदिभी उत्पन्न होने चाहिये, इस वास्ते सर्व

वस्तुयोंमे अपनी २ अनंतशक्तियेहै. जैसा २ निमित्त मिलताहै तैसी २ शक्ति वस्तुमें प्रगट होती है, । जैसे बीज कोठीमें पडाहै तिसमें वृक्षके सर्व अवयवोंके होनेकी शक्तिहै, परंतु बीजके काल विना अंकुर नही हो सक्ते है, । काल तो वृष्टि ऋतुका है, परंतु भूमि और जलके संयोग विना अंकुर नही हो सक्ता है, काल भूमि जल तो मिलेहैं परंतु विना स्वभावके कंकर बोवे तो अंकुर नही होवे है. । बीजका स्वभाव १ काल २ भूमि ३ जलादि तो मिले हैं परंतु बीजमें जो तथा तथा भवन अर्थात् होनेवाली अनादि नियतिके विना बीज तैसा लंब्बा चौडा अंकुर निर्विघ्नसें नही दे सक्ता है, । जो निर्विघ्न पणे तथा रूपकार्यको निष्पन्न करे सो नियति, । और जो कभी वनस्पतिके जीवोंने पूर्व जन्मोंमे ऐसे कर्म न करे होते तो वनस्पतिमें क्यों उत्पन्न होते, । जो कभी बोने वाला न होवे तथा बीज स्वयं अपने भारीपणे करके पृथवीमें न पडे तो कदापि अंकुर उत्पन्न न होवे, । इस वास्ते बीजांकुरकी उत्पत्तिमें पांचका

रण है काल १ स्वभाव २ नियति ३ पूर्वकर्म ४ उद्यम ५ इन पांचोके सिवाय अन्य कोइ अंकुर उत्पन्न करनेवाला कोइ ईश्वर नही सिद्ध होता है, । तथा मनुष्य गर्भमें उत्पन्न होता है वहांभी पांच कारणसेंही होता है, गर्भधारणेके कालमेंही गर्भ रहै । १ गर्भकी जगाका स्वभाव गर्भधारणका होवे तोही गर्भधारण करे, २ गर्भका तथा तथा निर्विघ्नपनेसें होना नियतिसें है, ३ जावोने पूर्वजन्ममें मनुष्य होनेके कर्म करे है तोही मनुष्यपणे उत्पन्न होता है, ४, मातापिता और कर्मसें आकर्षण न होवे तो कदापि गर्भ उत्पन्न न होवे, । ५, इसीतरे जो वस्तु जगतमे उत्पन्न होती है सो इनही पांचो निमित्त कारणोंसे और उपादान कारणोसें होती है । और पृथिवी प्रवाहसें सदा रहेगी, और पर्यायरूप करके तो सदा नाश और उत्पन्न होती रही है, क्योंकि सदा असंख्य जीव पृथिवीपणेही उत्पन्न होते है, और मरते है, तिन जीवोंके शरीरोंका पिंडही पृथिवी है, जो कोइ प्रमाणवेत्ता ऐसे समझता है कार्यरूप होनेसें पृथिवी एक दिन तो अवश्य सर्वथा

नाश होवेगी, घटवत् . । उत्तर—जैसा कार्य घट है तैसा कार्य पृथिवी नही है,। क्यों कि घटमें घटपणे उत्पन्न होनेवाले नवीन परमाणु नहीं आते है और पृथिवीमें तो सदा पृथिवीशरीरवाले जीव असंख्य उत्पन्न होते है, और पूर्वले नाश होते है, तिन असंख जीवोंके शरीर मिलने और विछडनेंसें पृथिवी तैसीही रहेगी, जैसें नदीका पाणी अगला २ चला जाता है, और नवीन नवीन आनेसें नदी वैसीही रहती है, इस वास्ते घटरूप कार्य समान पृथिवी नही है, इसवास्ते पृथिवी सदाही रहेगी, और तिसके उपर जो रचना है, सो पूर्वोक्त पांच कारणोंसें सदा होतेही रहेंगे, । इस वास्ते पृथिवी अनादि अनंत कालतक रहेगी, इसवास्ते पृथिवीका कर्त्ता ईश्वर नही है, और जो कितनेक भोले जीव मनुष्य १ पशु २ पृथिवी ३ पवन ४ वनस्पतिकों तथा चंद्र सूर्यकों देखके और मनुष्य पशुओंके शरीरकी हड्डीयांकी रचना, आंखके पडदे, खोपडीके टुकडे, नशाजालादिं शरीरोंकी विचित्र रचना देखके हैरान होते है, जब कुछ आघा पीछा नही सूझताहै तब हार

कर यह कहदेतेहै कि यह रचना ईश्वरके विना कौन कर सक्ता है, इसवास्ते ईश्वर कर्त्ता २ पुकारते है, परंतु जगत्कर्त्ता माननेसें ईश्वरका सत्यानाश करदेते है, सो नही देखते है, काणी हथनी एक पासेकीही वेलडीयां खाती है,परंतु हे भोलेजीव ! जो कभी तुने अष्टकर्मके एकसौ १४८ अडतालीस भेद जाने होते तो अपने विचारे ईश्वरको काहेको जगतकर्त्ता रूप कलंक देके तिसके इश्वरत्वकी हानी करते, क्यों कि जो जो कल्पना भोले लोकोनें इश्वरमें करी है सो सो सर्व कर्मद्वारा सिद्ध होती है, तिन कर्मोका स्वरूप संक्षेप मात्र यहां लिखते है,जो कभी विशेष करके कर्म स्वरूप जाननेकी इछा होवे तदा षट्कर्मग्रंथ १ कर्म प्रकृति प्राभृत २ पंचसंग्रह ३ शतक ४ प्रमुख ग्रंथ देखलेने,प्रथम जैनमतमें कर्म किसको कहते तिसका स्वरुप लिखते है, जैसें तेलादिसें शरीर चोपडके कोइ पुरुष नगरमें फिरे तब तिसके शरीर उपर सूक्ष्म रज पडनेसें तेलादिके संयोगसें परिणामांतर होके मलरूप होके शरीरसें चिप जाती है, तैसेही जीवके-जीवहिंसा १

जूठ२चोरी ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध६मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन १४ परपारिवाद१५ रतिअरति १६ मायामृषा१७मिथ्यादर्शन शल्य१८येरूप जो अंतःकरणके परिणाम है वे तेलादि चीकास समान हो,तिनमें जो पुद्गल जडरूप मिलता है तिसकों वासनारूप सूक्ष्मकारमण शरीर कहते है, यह शरीर जीवके साथ प्रवाहसें अनादि संयोग संबधवाला है, इस शरीरमें असंख्य तरेंकी पापपुण्यरूप कर्मप्रकृति समारही हैं, इस शरीरकों जैनमतमें कर्म कहते है, । और सांख्य मतवाले प्रकृति और वेदांति माया और नैयायिक वैशेषिक अदृष्ट कहतेहै, कोइक मतवाले क्रियमाण संचित प्रारब्ध रूप भेद करते है, । बौद्ध लोक बासना कहते है, विना समझके लोक इन कर्मांकों इश्वरकी लीला वा कुदरत कहते है, परंतु कोइ मतवाला इन कर्मोंका यथार्थ स्वरूप नही जानता है, क्योंकि इनके मतमें कोइ सर्वज्ञ नहीं हुआहै, जो यथार्थ कर्मोंका स्वरूप कथन करे, इसवास्ते लोकभ्रम अज्ञानके वश हो कर अनेक मनमानी हु-

तपटंग जगतकर्त्तादिककी कल्पना करके अंधाधुंध पंथ चलाये जाते है. ॥

इस वास्ते भव्य जीवोंके वास्ते आठ कर्मका किंचित् स्वरूप लिखते है, । ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणीय २, वेदनीय ३, मोहनीय ४, आयु ५, नाम ६, गोत्र ७, अंतराय ८, । इनमेसें प्रथम ज्ञानावरणीयके पांच भेदहै, । मति ज्ञानावरणीय १, श्रुत ज्ञानावरणीय २, अवधि ज्ञानावरणीय ३, मनःपर्याय ज्ञानावरणीय ४, केवल ज्ञानावरणीय ५, तहां पांच इंद्रिय और छठा मन, इन छहो द्वारा जो ज्ञान उत्पन्न होवे तिसका नाम मतिज्ञान है, । तिस मतिज्ञानके तीनसौ चालीस ३४० भेदहै, । वे सर्व कर्मग्रंथकी वृत्तिसें जानना. तिन सर्व ३४० भेदोंका आवरण करनेवाला मतिज्ञानावरण कर्मका भेदहै । जिस जीवके आवरण पतला हूआहै तिस जीवकी बहुत बुद्धि निर्मल है, जैसें जैसे आवरणके पतलेपणेकी तारतम्यताहै, यद्यपि मतिज्ञान मतिज्ञानावरणके क्षयोपशमसें होताहै, । तोभी तिस क्षयोपशमके निमित्त

मस्तक शिर विशाल, मस्तकमे भेजा चरबी–चिकास, मांस, रुधिर, निरोग्य हृदय, दिल-निरुपद्रव, और सूंठ ब्राह्मी वच घृत दूध शाकर प्रमुख अछी वस्तुका खानपानादिसें अधिक अधिक तर मतिज्ञानावरणके क्षायोपशमके निमित्तहै, और शील संतोष महाव्रतादि करणी, और पठन करानेवाला विद्यावान् गुरु, और देश काल श्रद्धा उत्साह परिश्रमादि ये सर्व मति ज्ञानावरणके क्षायोपशम होनेके कारणहै, ॥ जैसे जैसे जीवोंको कारण मिलतेहै तैसी तैसी जीवोंकी बुद्धि होतीहै, । इत्यादि विचित्र प्रकारसें मतिज्ञानावरणी १, दूसरा श्रुतज्ञानावरण–श्रुत ज्ञानका आवरण, श्रुतज्ञान तिसकों कहतेहै । जो गुरु द्वारा सुनके ज्ञान होवे और जिसके बलसें अन्य जीवोंकों कथन करा जावे तिसके निमित्त पूर्वोक्त मतिज्ञानवाले जानने, क्योंके ये दोनो ज्ञान एक साथही उत्पन्न होतेहै, परंतु इतना विशेषहै, मतिज्ञान वर्त्तमान विषयिक होताहै, और श्रुतज्ञान त्रिकाल विषय होताहै, श्रुतज्ञानके चौदहै १४ तथा बीस भेद २० है, ति-

नका स्वरूप कर्मग्रंथसें जानना, पठन पाठनादि जो अक्षरमय वस्तुका ज्ञानहै, सो सर्व श्रुतज्ञानहै, तिसका आवरण-आछादन जो है जिसकी तारतम्यतासें श्रुत ज्ञान जीवोंकों विचित्र प्रकारका होताहै, तिसका नाम ज्ञानावरणीयहै, इसके क्षयोपशमके वेही निमितहै जो मतिज्ञान के है. इति श्रुतज्ञानावरण २, । तीसरा अवधिज्ञानका आवरण—अवधिज्ञानावरणीय ३, ऐसेही मनः पर्यायज्ञानावरण ४, केवलज्ञानावरण ५, इन पांचों ज्ञानोमेंसें पिछले तीन ज्ञान इस कालके जीवोंकों नहीं है, सामग्री और साधनके अभावसें. इस वास्ते इनका स्वरूप नंदी आदि सिद्धांतोंसें जानना; । ये पांच भेद ज्ञानावरण कर्मके है, । यह ज्ञानावरण कर्म जिन कर्त्तव्योंसें बांधता है अर्थात् उत्पन्न करके अपने पांचों ज्ञान शक्तियोंका आवरण कर्त्ताहै सो यह है, । मति श्रुत प्रमुख पांच ज्ञानकी तथा ज्ञानवंतकी २ । तथा ज्ञानोपकरण पुस्तकादिकी ३ प्रत्यनीकता अर्थात् अनिष्टपणा प्रतिकूलपणा करे जैसें ज्ञान और ज्ञानवंतका बुरा होवे तैसें करे १, । जिस

द्वारा पढा होवे तिस गुरुका नाम न बतावे तथा जानी हूइ वस्तुकों अजानी कहे २, ज्ञानवंत तथा ज्ञानोपकरणकी अग्नि शस्त्रादिकसें नास करे ३, तथा ज्ञानवंत उपर तथा ज्ञानोपकरण उपर प्रद्वेष अंतरंग अरुची मत्सर ईर्ष्या करे ४, पढनेवालोंकों अन्न वस्त्र वस्ती देनेका निषेध करे, पढनेवालोंकों अन्य काममें लगावे, बातोंमें लगावे, पठन विछेद करे ५, ज्ञानवंतकी अति अवज्ञा करे, यह हीनजातिवाला है, इत्यादि मर्म प्रगट करनेके वचन बोले, कलंक देवे, प्राणांत कष्ट देवे, तथा आचार्य उपाध्यायकी अविनय मत्सर करे, अकालमें स्वाध्याय करे,। योगोपधान रहित शास्त्र पढे,। अस्वाध्यायमें स्वाध्याय करे,। ज्ञानके उपकरण पास हूयां दिसा मात्रा करे, ज्ञानोपकरणकों पग लगावे, ज्ञानोपकरण सहित मैथुन करे, ज्ञानोपकरणकों थूक लगावे, ज्ञानके द्रव्यका नाश करे, नाश करतेको मना न करे,। इन कामोंसें ज्ञानावरणीय पंच प्रकारका कर्म बांधे तिसके उदय क्षयोपशमसें नाना प्रकारकी बुद्धिवाले जीव होते महाव्रत संयम तपसें ज्ञानप्र-

रणीय कर्म क्षय करे तब केवलज्ञानी सर्व वस्तुका जानने वाला होवे,। इति प्रथम ज्ञानावरणी कर्मका संक्षेप मात्र स्वरूप॥ १ अथ दूसरा दर्शनावरणीय कर्म,। तिसके नव ९ भेद है,। चक्षु दर्शनावरण १, अचक्षु दर्शनावरण २, अवधि दर्शनावरण ३, केवल दर्शनावरण ४, निद्रा ५, निद्रानिद्रा ६, प्रचला ७, प्रचलाप्रचला ८, स्त्यानर्द्धी ९,। अब इनका स्वरूप लिखते है, सामान्यरूप करके अर्थात् विशेष रहित वस्तुके जाननेकी जो आत्माकी शक्ति है तिसकों दर्शन कहते है,। तिनमें नेत्रोकी शक्तिकों आवरण करे सो चक्षुदर्शनावरणीय कर्मका भेद है,। इसके क्षयोपशमकी बिचित्रतासें आंखवाले जीवोंकी आंख-द्वारा विचित्र तरेंकी दृष्टि प्रवर्त्ते है,। इसके क्षायोपशम होनेमें विचित्र प्रकारके निमित्त है। इति चक्षुदर्शना-वरणीय १,। नेत्र वर्जके शेष चारों इंद्रियोकों अचक्षु-दर्शन कहते है, तिनके सुनने सूंघने रस लेने स्पर्श पिछाननेका जो सामान्य ज्ञान है सो अचक्षु दर्शन है, चारों इंद्रियोंकी शक्तिका जो आच्छादन करनेवाला जो

कर्म है तिसको अचक्षु दर्शन कहते है, इसके क्षयोपशम होनेमें अंतरंग बहिरंग विचित्र प्रकारके निमित्त है, तिन निमित्तोंद्वारा इस कर्मका क्षयउपशम जैसा जैसा जीवोंको होता है तैसी तैसी जीवोंकी चार इंद्रियकी स्वरूप विषयमें शक्ति प्रगट होती है, । इति अचक्षुदर्शनावरणीय । २, । अवधि दर्शनावरणीय और केवल दर्शनावर्णीयका स्वरूप शास्त्रसें देख लेना, क्योंकि सामग्रीके अभावसें ये दोनो दर्शन इस काल क्षेत्रके जीवोंको नही है, एवं दर्शनावरणीय के चार भेद हूए ४, पांचमा भेद निद्रा जिसके उदयसें सुखे जागे सो निद्रा १, जो बहुत हलाने चलानेसें जागे सो निद्रा निद्रा २ जो बैठेकों निंद आवे सो प्रचला ३, जो चलतेकों आवे सो प्रचला प्रचला ४, जो निंदमें ऊठके अनेक काम करे—निंदमें शरीरमें बल बहुत होवे है तिसका नाम स्त्यानर्द्धी निद्रा है, । पांचों निद्रा पांच इंद्रियके ज्ञानमें हानि करती है, इस वास्ते दर्शनावरणीयकी प्रकृति है, । एवं ९ भेद दर्शनावरणीय कर्मके हूये, । इस कर्मके बांध-

नेके हेतु ज्ञानावरणीयकी तरे जानना, परं ज्ञानकी जगे दर्शनपद कहना, दर्शन चक्षु अचक्षु आदि दर्शनी साधु आदि जीव तिनकी पांच इंद्रियोंका बुरा चिंते, नाशकरे, अथवा सम्मति तत्वार्थ द्वादशारनय चक्र बालतर्कादि दर्शनप्रभावकशास्त्रके पुस्तक तिनका प्रत्यनीकपणादि करे तो दर्शनावरणीय कर्मका बंध करे, । इति दूसरा कर्म ॥ २, अथ तीसरा वेदनीय कर्म तिसकी दो प्रकृति है, । साता वेदनीय १, असाता वेदनीय २, साता वेदनीयसें शरीर अपने निमित्तद्वारा सुख होताहै, और असाता वेदनीके उदयसें दुःख प्राप्त होताहै, । एवं दो भेदोंके बांधनेके कारण—प्रथम सातावेदनीयके बंध करणेके कारण, । गुरु अर्थात् अपने मातापिता धर्माचार्य इनकी भक्ति सेवा करे । १, क्षमा अपने सामर्थके हूए दुसरोंका अपराध सहन करना २, परजीवोंको दुःखी देखके तिनके दुःख मेटनेकी वांछा करनी ३, पंच महाव्रत अनुव्रत निर्दूषण पाले ४, दशविध चक्रवाल समाचारी संयम योगपालनेसें ५, क्रोधमान माया लोभ

हास्य रति अरति शोक भय जुगुप्सा इनके उदय आयें न इनकों निष्फल करे ६, सुपात्र दान अभय॰ दान देतें सर्व जीवों पर उपकार करे, सर्व जीवों॰ का हित चिंतन करे ७, धर्ममें स्थिर रहे, मरणांत कष्टकेभी आये धर्मसें चलायमान न होवे, बाल वृद्ध रोगीकी वैयावच्च करतें, धर्मीकों धर्ममें प्रवर्चतें स॰ हाय करे, चैत्य जिनप्रतिमाकी अछी भक्ती करतें सराग संयमपाळे, देशव्रत्तीपणा पाले, अकामनिर्जरा अज्ञान तप करें, शौच्य सत्यादि सुंदर अंतःकरणकी वृत्ति प्रवर्त्तावे तो सातावेदनीय कर्म बांधे, इति साता वेदनीयके बंध हेतु कहे। १, । इनसें विपर्यय प्रवर्त्ते तो असाता वेदनीय बाधे । २, इति वेदनीय कर्म स्वरूप, ॥ ३ ॥ अथ चौथा मोहनीय कर्म ति॰ सके अठावीस भेदहै, अनंतानु बंधी क्रोध १, मान २, माया ३ लोभ ४, । अप्रत्याख्यान क्रोध ५, मान ६, माया ७, लोभ ८, प्रत्याख्यानावरण क्रोध ९, मान १०, माया ११, लोभ १२, संज्वलका क्रोध १३, मान १४, माया १५, लोभ १६, हास्य १७,

रति १८, अरति १९, शोक २०, भय २१, जुगुप्सा २२, स्त्रीवेद २३, पुरुषवेद २४, नपुसक वेद २५, सम्यक्त मोहनीय २६, मिश्र मोहनीय २७, मिथ्यात्व मोहनीय २८ ॥ अथ इनका स्वरूप लिखतेहै । प्रथम अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ। जहां तक जीवें तहां तक रहे, हटे नही, तिनमेसें अनंतानुबंधी क्रोध तो अैसा कि जावजीव सूधी क्रोध न छोडे, अपराध कितनी आधीनगी करे तोभी क्रोध न छोडे, । यह क्रोध ऐसाहै जैसे पर्वतका फटना फेर कदापि न मिले । मान पत्थरस्तंभसमान किंचित् मात्र भी न नमे २, माया कठिन वांसकी जड समान सूधी न होवे, लोभ कृमिके रंग समान फेर उतरे नहीं, । ये चारों जिसके उदय होवे सो जीव मरकें नरकमें जाताहै, । और इस कषायके उदयमें जीवकों सच्चे देव गुरु धर्मकी श्रद्धा रूप सम्यक्त नहीं होताहै, । ४, दूसरा अप्रत्याख्यान कषाय तिसकी स्थिति एक वर्षकीहै, एक वर्ष तक क्रोध मान माया लोभ रहै, । तिनमें क्रोधका स्वरूप पृथिवीके रेखा फाटने समान

बडे यत्नसें मिले, । मान झाडके स्तंभे समान कु-
श्केलसें नमे, । माया मिंढेकेसींगके वल समान सी-
द्धा कठीनतासें होवे. लोभ नगरकी मोरीके कीचडके
दाग समान, इस कषायके उदयसें देशव्रतीपणा
न आवे, और मरके पशु-तिर्यचकी यतिमें जावे, ।
८, तीसरा प्रत्याख्यानावरण कषाय तिसकी स्थिति
चार मासकी है, क्रोध वालूकी रेखा समान । मान
काष्टके स्तंभे समान, माया बैलके मूत्र समान वक्र;
लोभ गाडीके खंजन समान-इसके उयसें शुद्ध साधु
नहीं होताहै, ऐसे कषायवाला मरके मनुष्य होवाहै
। १२ चौथा संज्वलन कषाय तिसकी स्थिति एक
पक्षकी, क्रोध पाणीकी लकीर समान, मान वांसकी
शींखके स्तंभे समान, माया वांसकी छिल्लक समान।
लोभ हलदीके रंग समान, इसके उदयसें वीतराग
अवस्था नहीं होतीहै, इस कषायवाला जीव मरके
स्वर्गमें जाताहै, । १६ । जिसके उदयसें हासी आवे
सो हास्यप्रकृति १७, जिसके उदयसें चित्तमें निमित्त
निर्निमित्तसें रति-अंतरमें खुशी होवे सो रति १८, नि-

सके उदयसें चित्तमें सनिमित्त निर्निमित्तसें दिलगी-
री—उदासी उत्पन्न होवे सो अरतिप्रकृति १९, जि-
सके उदयसें इष्ट वियोगादिसें चित्तमें उद्वेग उत्पन्न
होवे सो शोक मोहनीयप्रकृति २०, जिसके उदयसें
सात प्रकारका भय उत्पन्न होवे सो भयमोहनीय
२१, जिसके उदयसें मलीन वस्तु देखी सूग उपजे
सो जुगुप्सा मोहनीय २२, जिसके उदयसें स्त्रीके
साथ विषय सेवन करनेकी इछा उत्पन्न होवे सो पु-
रुषवेदमोहनीय २३, जीसके उदयसें पुरुष
के साथ विषय सेवनेकी इछा उत्पन्न होवे सो स्त्री
वेदमोहनीय २४, जिसके उदयसें स्त्री पुरुष दोनों-
के साथ विषय सेवनेकी अभिलाषा उत्पन्न होवे सो
नपुंसकवेदमोहनीय २५, जिसके उदयसें शुद्ध
देव गुरु धर्मकी श्रद्धा न होवे सो मिथ्यात्व मोहनीय
२६, जिसके उदयसें शुद्ध देव गुरु अर्थात् जैनमतके
उपर रागभी न होवे और द्वेषभी न होवे अन्य मत-
कीभी श्रद्धा न होवे सो मिश्र मोहनीय २७, जि-
सके उदयसें शुद्ध देव गुरु धर्मकी श्रद्धा तो होवे प-

रंतु सम्यक्तमें अतिचार लगावे सो सम्यक्त मोहनीय २८, इन २८ प्रकृतियोंमें आदिकी २५ पचीस प्रकृतिकों चारित्र मोहनीय कहतेहै, । और उपरली तीन प्रकृतियोंकों दर्शन मोहनीय कहतेहै । एवं २८ प्रकृति रूप मोहनीय कर्म तीसराहै, । अब मोहनीय कर्मके बंध होनेकै हेतु लिखवेहै, ॥ प्रथम मिथ्यात्व मोहनीयके बंध हेतु । उन्मार्ग अर्थात् जे संसारके हेतु हिंसादिक आश्रव पापकर्म तिनकों मोक्ष हेतु कहे, तथा एकांतनयसें निकेवल क्रिया कष्टानुष्टानसें मोक्ष प्ररूपे तथा एकांतनयसें निकेवल ज्ञान मात्रसें मोक्ष कहे, एसेही एकले विनयादिकसें मोक्ष कहै, १ मार्ग अर्थात् अर्हन् भाषित सम्यगृदर्शन ज्ञान चारित्र रूप मोक्षमार्ग तिसमें प्रवर्त्तनेवाळे जीवकों कुहतु कुयुक्ति करके पूर्वोक्त मार्गसें भ्रष्ट करे । २, देवद्रव्य ज्ञान द्रव्यादिक तिनमें जो भगवान्के मंदिर प्रतिपादिके काम आवे काष्ट पाषाण मृतकादिक तथा तिस देहरादिकके निमित्त करा हूआ रूपा सोनादि धन तिसका हरण करे, देहराकी भूमि प्रमुखकों अपनी कर लेके,

देवकी वस्तुसें व्यापार करके अपनी आजीविका करे, तथा देवद्रव्यका नाश करे, शक्तिके हूए देव द्रव्यके नाश करनेवालको हटावे नहीं, ये पूर्वोक्त काम करनेवाला मिथ्यादृष्टी होता है, सो मिथ्यात्व मोहनीय कर्मका बंध करता है,। तथा दूसरा हेतु तीर्थंकर केवलीके अवर्णवाद बोले—निंदा करे तथा भले साधुकी तथा जिनप्रतिमाकी निंदा करे, तथा चतुर्विध ४ संघ साधु साध्वी श्रावक श्राविकाका समुदाय तिंसकी, श्रुतज्ञानकी निंदा—अवज्ञा—हीलना करता हूआ अयश करता कराता हूआ निकाचित महामिथ्यात्व मोहनीय कर्म बांधे,। इति दर्शनमोहनीयके बंध हेतु,। अथ चारित्रमोहनीय कर्मके बंध हेतु लिखते है। चारित्रमोहनीय कर्म दो प्रकारका है,। कषाय चरित्र मोहनीय १, नोकषाय चारित्र मोहनीय २, तिनमेंसें कषाय चारित्र मोहनीयके १६ सोलेभेद है तिनके बंध हेतु लिखते हैं—अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभमें प्रवर्त्ते तो सोलेही प्रकारका कषाय मोहनीय कर्म बांधे,। अप्रत्याख्यानमें वर्त्ते तो

उपरले चारे कषाय बांधे, । प्रत्याख्यानमें प्रवर्त्ते तो ऊपरले आठ कषाय बांधे, संज्वलनमें प्रवर्त्ते तो चार संज्वलनका कषाय बांधे, इति कषायचारित्रमोहनीयके बंध हेतु ॥ नोकषाय हास्यादि तिनके बंध हेतु यह है—प्रथम हास्य—हांसी करे भांड—कुचेष्टा करे बहुत बोले तो हास्यमोहनीय कर्म बांधे, । १ देश देखनेके रससें, विचित्र क्रीडाके रससें अति वाचाल होनेसें कामण मोहन टूणा वगेरा करे, कुतूहल करे तो रतिमोहनीय कर्म बांधे, २ । राज्यभेद करे—नवीन राजा स्थापन करे, परस्पर लडाइ करावे, दूसरोंको अरति—उच्चाट उत्पन्न करे, अशुभकाम करने करानेमें उत्साह करे और शुभकामके उत्साहको भांगे, निष्कारण आर्त्तध्यान करे तो अरति मोहनीय कर्म बांधे ३ । पर जीवोंको त्रास देवे तो निर्दय परिणामी भय मोहोनीय कर्म बांधे ४ परको शोक चिंता संताप उपजावे तपावे तो शोक मोहनीय कर्मबांधे ५, धर्मी साधुजनोंकी निंदा करे, साधुका मलमलीन गात्र देखि निंदा करे तो जुगुप्सा मोहनीय कर्म बांधे । ६, पुरुष

रूप रस गंध स्पर्श रूप मनगती विषयमें अत्यंताशक्त होवे, दूसरेकी इर्षाकरे, माया मृषा सेवे, कुटिल परिणामी होवे, परस्त्रीसें भोग करे तो जीव स्त्रीवेद मोहनीय कर्म बांधे ७, सरल होवे, अपनी स्त्रीसे उपरांत संतोषी होवे, इर्षा रहित, मंद कषायवाला जीव पुरुष वेद बांधे ८, तिव्र कषायवाला दर्शनी दूसरे मतवालोंका शीलभंग करे तिव्र विषयी होवे पशुकी घात करे मिथ्यादृष्टी जीव नपुंसक वेद बांधे। ९, संयमीके दूषण दिखावे, असाधुके गुण बोले। कषायकी उदीरणा करता हूआ जीव चारित्रमोहनीय कर्म समुच्चय बांधे, इति मोहनीय कर्मके बंध हेतु।, यह मोहनीय कर्म मदिरेके नशेकी तरें अपने स्वरूपसें भ्रष्ट कर देता है, इति मोहनीयकर्मका स्वरूप संक्षेप मात्रसे पूरा हुआ. अथ चौथा आयुकर्म तिसकी चार प्रकृति जिनके उदयसें जीव नरक १ तिर्यंच २ मनुष्य ३ देव ४ भवमें खैंचा हूआ जीव जावे है जैसें चमकपाषाण लोहकों आकर्षण करता है तिसका नाम अयुकर्म। नरकायु १ तिर्यंचायु २ मनु-

ष्यायु ३ देवायु ४ । प्रथम नरकायुके बंध हेतु कहते है. महारंभ चक्रवर्त्ती प्रमुखकी ऋद्धि भोगनेमें महामूर्छा परिग्रह सहित व्रत रहित अनंतानुबंधी कषायोदवान्, पंचेद्रिय जीवकी हिंसा निःशंक होकर करे। मदिरा पीवे, मांस खावे,चौरी करे,जुआ खेले, परस्त्री सेवे, वेश्या गमन करे, शिकार करे, कृतघ्नी होवे, विश्वासघाती, मित्रद्रोही, उत्सूत्र प्ररूपे,मिथ्यामतकी महिमा बढावे, कृष्ण नलि कापोत लेश्यासें अशुभ परिणामवाला जीव नरकायु बाधे १ तिर्यंचकी आयुके बंध हेतु यह है ॥ गूढ हृदयवाला अर्थात् जिसके कपटकी किसीकों खबर न पडे, धूर्त्त होवे, मुखसें मीठा बोले, हृदयेमें कतरणी रख्खे,झूठे दूषण प्रकाशे। आर्त्तध्यानी इसलोकके अर्थ तपक्रिया करे, अपनी पूजा महिमाके नष्ट होनेके भयसें कुकर्म करके गुरुआदिकके आगे प्रकाशे नहीं, झूठ बोले, कमतिदेवे अधिक लेवे, गुणवान्की इर्षाकरे, आर्त्तध्यानी कृष्णादि तीन मध्यम लेश्यावाला जीव तिर्यंच गतिका आयु बांधे, । इति तिर्यंचायु । २ अथ मनुष्यायुके बंध हेतु ।, मि-

थ्यात्व कषायका स्वभावेही मंदोदयवाला प्रकृतिका भद्रिक धूलरेखा समान कषायोदवाला सुपात्र कुपात्रकी परीक्षा विना विशेष यशकीर्त्तिकी वांछा रहित दान देवे, स्वभावे दान देनेकी तीव्ररुचि होवे क्षमा अर्जव मार्दव दया सत्य शौचादिक मध्यम गुणों में वर्त्ते, सुसंबोध्य होवे, देव गुरुका पूजक, पूजा प्रिय, कापोत लेश्याके परिणामवाला मनुष्य तिर्यंचादि मनुष्यायु बांधे ३ अथ देव आयु ॥ अविरति सम्यग्‌ दृष्टि मनुष्य तिर्यंच देवताका आयु बांधे, सुमित्रके संयोगसें धर्मकी रुचिवाला देशविरति सराग संयमी देवायु बांधे. बालतप अर्थात् दुःखगर्भित वैराग्य करके दुष्कर कष्ट पंचाग्नि साधन सहित अत्यंत रोष तथा अहंकारसें तप करे, असुरादि देवताका आयु बांधे तथा अकाम निर्जरा अजाणपण भूष तृषा शीत उश्न रोगादिक कष्ट सहनेसे स्त्री अनमिलते शील पाले, विषयकी प्राप्तिके अभावसें विषय न सेवनेसें इत्यादि अकाम निर्ज्जरासें । तथा बालं मरण अर्थात् जलमें डूब मरे अग्निसें जल मरे झंपा-

पातसें मरे शुभ परिणाम किंचित्वाला तो व्यंतरदे-
वताका आयु बांधे, आचार्यादिककी अवज्ञा करे तो
किल्विष देवताका आयु बांधे । तथा मिथ्यादृष्टीके
गुणीकी प्रशंसा करे महिमा वढावे अज्ञान तप करे
और अत्यंत क्रोधी होवेकी परमाधार्मिककी आयु बां-
धे, इति देवायुके वंध हेतु ॥ यह आयुकर्म हाडिके
बंधन समान है, इसके उदयसे चारोंगातिके जीव जीव-
तेहै और जव आयु पूर्ण हो जाताहै तव कोइभी तिसको
नही जीवा सक्ताहै, । जो कभी आयुकर्म विना जी-
व जीवे तो मतधारीयोंके अवतार पैगंवर क्यों मरते?
जितना आयु पूर्व जन्ममें जीव बांधके आयाहै ति-
ससें एक क्षण मात्र भी कोइ अधिक नही जीव स-
क्ताहै, और न किसिकों जीवा सक्ताहै, । मतधारी
जो कहतेहै हमारे अवतारादिकनें अमुक अमुकको
फिर जीता करा यहवाते महा मिथ्याहै, क्यों कि
जो कभी उनमें ऐसी शक्ति होवी तो आप क्यों मर
गये? सदा क्यों न जीते रहे? ईशा महम्मदादि जो
कभी आज तक जीते रहते तो हम जानते ये सच्चे पर-

मेश्वरकी तर्फसें उपदेश करने आयहै हम सब उनके मतमें हो जाते, मतधारीयोंकों मेहनत न करनी पडती, जब साधारण मनुष्योंके समान मर गये तब क्यों कर शक्तिमान् हो सक्तेहै ? ये सर्व झूठी बातोंकी अणघड गप्पे जंगली गुरुओंनें जंगलीपणेसें मारीहै ? इस वास्ते सर्व मिथ्याहै, इति आयु कर्म चतुर्थ, ।

अथ पांचमा नामकर्म तिसका स्वरूप लिखतेहै, । तिसके तिरानवे भेदहैं, नरकगति नामकर्म १ तिर्यंचगति नाम २ मनुष्यगति नाम ३ देवगति नाम ४, एकेंद्रिय जाति १ द्वींद्रिय जाति २ तीनेंद्रिय जाति ३ चार इंद्रिय जाति ४ पंचेंद्रिय जाति ५ एवं ९, । उदारिक शरीर १० वेक्रिय शरीर ११ आहारिक शरीर १२ तैजस शरीर १३ कार्मण शरीर १४ उदारिकांगोपांग १५ वैक्रिय बंधन १९ आहारिक बंधन २० तैजस बंधन २१ कर्मण बंधन २२ उदारिक संघातन २३ वैक्रिय संघातन २४ अहारिक संघातन २५ तैजस संघातन २६ कार्मण संघातन वज्र ऋषभ नराच संहनन १८ ऋषभ नराच संहनन

२९ नराच संहनन ३० अर्द्ध नराच संहनन ३१ कीलिका संहनन ३२ छेवर्त्त संहनन ३३ सम चउरस्र संस्थान ३४ निगोध्र परिमंडल संस्थान ३५ सादिया संस्थान ३६ कुब्ज संस्थान ३७ वामन संस्थान ३८ हुंडक संस्थान ३९ कृश्नवर्ण ४० नील-वर्ण ४१ रक्तवर्ण ४२ पीतवर्ण ४३ शुक्लवर्ण ४४ सुधंग ४५ दुर्गंध ४६ तिक्तरस ४७ कटुकरस ४८ कषायरस ४९ आम्लरस ५० मधुररस ५१ कर्कशस्पर्श ५२ मृदु स्पर्श ५३ हलका ५४ भारी ५५ शीत स्पर्श ५६ उश्न स्पर्श ५६ स्निग्ध स्पर्श ५८ रुक्ष स्पर्श ५९ नरकानु पूर्वि ६० तिर्यचानु पूर्वि ६१ मनुष्यानुपूर्वि ६२ देवानु पूर्वि ६३ शुभ विहाय गति ६४ अशुभ विहाय गति ६५ परघात नाम ६६ उत्स्वास ६७ आतप ६८ उद्योत नाम ६९ अगुरु लघु ७० तीर्थंकर नाम ७१ निर्माणि ७२ उपघात नाम ७३ त्रस नाम ७४ बादर नाम ७५ पर्याप्त नाम ७६ प्रत्येक नाम ७७ स्थिर नाम ७८ शुभ नाम ७९ सुभग नाम ८० सुस्वर नाम ८१ आदेय नाम ८२ यशकीर्त्ति नाम ८३ स्थावर

नाम ८४ सूक्ष्म नाम ८५ अपर्याप्त नाम ८६ साधा-
रण नाम ८७ अस्थिर नाम ८८ अशुभ नाम ८९
दुर्भग नाम ९० दुस्वर नाम ९१ अनादेय नाम ९२
अयश नाम ९३। ये तिरानवे भेद नामकर्मके है.
अब इनका स्वरूप लिखते है, ॥ गति नामकर्म जि-
स कर्मके उदयसें जीव नरक १ तिर्यंच २ मनुष्य ३
देवताकी गति पर्याय पामे नरकादि नाम कहनेमें
आवे, और जीव मरे तव जिस गतिका गति नाम
कर्म और आयु आयुकर्म मुख्यपणे और गति नामकर्म
सहचारी होवेहै तब जीवकों आकर्षण करकें तब वो
जीव तिस गति नाम और आयु कर्मके वश हूआ जहां
उत्पन्न होना होवे तिस स्थानमें पहुचें है, जैसें डोरे-
वाली सूइकों चमक पाषाण अकर्षण कर्त्ता है और
सूइ चमक पाषाणकी तर्फ जाती है डोरा भी सूइके
साथही जाता है, इस तरे नरकादि गतियोंका स्थान
चमक पाषाण समान है आयु कर्म और गतिनामकर्म
लोहेकी सूइ समान है, और जीव डोरे समान बीचमें
पोया हूआ है इस वास्ते परभवमें जीवकों आयु

और गति नाम कर्म ले जाता है, जैसा २ गति नाम कर्म जीवोंनें बंध करा है शुभ वा अशुभ तैसी गतिमें जीव तिस कर्मके उदयसें जा रहता है, । इस वास्ते जो अज्ञानीयोने कल्पना कर रख्खी है कि पापी जीव कों यम और धर्मि जीवको स्वर्गके दूत मरे पीछे ले जाते है तथा जबराइल फिरस्ता जीवोंकों ले जाता है सो सर्व मिथ्या कल्पना है, क्यों कि जब यम और स्वर्गिय दूत फिरस्ते मरते होंगे तब तीनको कौन ले जाता होवेगा, और जीव तो जगतमें एक साथ अनंत मरते और जन्म ते तिन सबके ले जाने वास्ते इतने यम कहांसें आते होवेंगे ? और इतने फिरस्ते कहां रहते होवेंगे ? और जीव इस स्थूल शरीरसें निकले पीछे किसीके भी हाथमें नही आताहै, इस वास्ते पूर्वोक्त कल्पना जिनोंने सर्वज्ञका शास्त्र नहीं सूनाहै तिन अज्ञानीयोंने करीहै, । इस वास्ते मुख्य आयुकर्म और गति नाम कर्मके उदयसेंही जीव परभवमे जाताहै । इति गति नामकर्म ४, अथ जाति नाम कर्मका स्व-

रूप लिखतेहै । जिसके उदयसें जीव पृथिवी पाणी अग्नि पवन बनस्पति रूप एक इंद्रिय स्पर्शेंद्रियवाले जीव उत्पन्न होतेहै सोएकेंद्रिय जाति नामकर्म १ जिसके उदयसें दो इंद्रियवाले कृम्यादिपणें उत्पन्न होवे सो द्वींद्रिय जाति नाम कर्म २ एवं तीनेंद्रि कीडी आदि चतुरिंद्रिय भ्रमरादि पंचेद्रिय—नरकपंचेद्रिय पशु गो महिष्यादि मनुष्य देवतापणे उत्पन्न होवेसो जाति नाम कर्म, एवं सर्व ९ ऊदारिक शरीर अर्थात् एकेंद्रिय द्वींद्रीय त्रींद्रिय चतुरिंद्रिय पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्यके शरीर पानेकी तथा ऊदारी शरीरपणे परिणामककी शक्ति तिसका नाम ऊदारिक शरीर नाम कर्म १०, जिसकी शक्तिसें नारकी देवताका शरीर पावे जिससें मन इच्छित रूप बनावे तथा वैक्रिय शरीरपणे पुद्गल परिणामनेकी शक्ति सो वैक्रिय शरीर नामकर्म ११ एवं आहारिक लब्धीवालेके शरीरपणे परिणामावे २ तैजस शरीर अंदर शरीरमें उष्णता आहार पचानेकी शक्तिरूप सो तैजस नाम कर्म १३, जि-

सकी शक्तिसें कर्म वर्गणाकों अपने अनेक कर्म प्रकृतिके परिणामपणे परिणामावे सो कामर्ण शरीर नाम कर्म १४, दो बाहु २, दो साथल ४, पीठ ५, मस्तक ६, उर–छाती ७, उदर–पेट ८, ये आठ अंग और अंगोंके साथ लागा हूआ जैसें हाथसें लागी अंगुली, साथलसें लागा जानु–गोडा आदि इनका नाम उपांग है, शेष अंगुलीके पर्व रेखा रोम नखादिं प्रमुख अंगोपांग है जिसके उदयसें ये अंगोपांग पावे और इनपणे नवीन पुद्गल परिणमावे ऐसी जो कर्मकी शक्ति तिसका नाम उपांग नाम कर्म है,। ऊदारीकोपांग १५, वैक्रियोपांग १६, आहारिको पांग १७, । इति उपांग नाम कर्म, ।। पूर्वे वंधा हूआ ऊदारिक शरीरादि पांच प्रकृति और इन पाचोंके नवीन वंध होतेको पिछलेके साथ मेलकरके बधावे जैसे राल लाखादि दो वस्तुयोंकों मिला देते है तैसे ही जो पूर्वापर कर्मके संयोग करे सो बंधन नाम कर्म शरीरोंके समान पांच प्रकारका है, ऊदारिक बंधन वैक्रिय बंधन इत्यादि, एवं २२ प्रकृति हूइ, । पांच शरीरके योग्य विखरे·

हूए पुद्गलोंकों एकठे करे पीछे बंधन नाम कर्म बंध करे तिस एकठे करणेवाली कर्म प्रकृतिका नाम संघातन नाम कर्म है सो पांच प्रकारका है, ऊदारिक संघातन, वैक्रिय संघातन इत्यादि एवं २७ सत्ताइस प्रकृति हुइ। अथ ऊदारिक शरीरपणे जो सातधातु परिणमी है तिनमें हाडकी संधिकों जो दृढ करे सो संहनन नाम कर्म सो छ प्रकारका है। तिनमेंसे जहां दोनो हाड, दोनों पासे मर्कटबंध होवे तिसका नाम नराच है। तिन दोनों हाडोंके उपर तीसरा हाड पट्टेकी तरे जकडबंध होवे तिसका नाम रूषभ है, अैसी जिस कर्मके उदयसें हाडकी संधी दृढ होवे तिसका नाम वज्ररूषभ नराच संहनन नाम कर्म है, २८। जहां दोनों हाडोंके छेहडे मर्कट बंध मिले हूए होवे और उनके ऊपर तीसरे हाडका पट्टा होवे अैसा हाड संधी जिस कर्मके उदयसें होवे सो रूषभनराच संहनन नामकर्म, २९ जिन हाडोंका मर्कटबंध तो होवे परंतु पट्टा और कीली न होवे जिसके उदयसें सो नाराच संहनन नाम कर्म,

३० जहां एक पासें मर्कटबंध और दूसरे पासे खीली होवे जिस कर्मके उदयसें सो अर्द्धनराच संहनन नाम कर्म ३१, जैसें खीलीसें दो काष्ट जोडे होवे तैसें हाडकी संधी जिस कर्मके उदयसें होवे सो कीलिका संहनन नाम कर्म ३२, दोनों हाडोंके छेहडे मिले हूए होवे जिस कर्मसें सो सेवार्त्त संहनन नाम कर्म ३३, जिस कर्मके उदयसें सामुद्रिक शास्त्रोक्त संपूर्ण लक्षण जिसके शरीरमें होवे तथा चारों अंस बराबर होवे, पलाठी मारके बैठे तब दोनों जानुका अंतर और दाहिने जानुसें वामा स्कंध और वामे जानुसें दाहिना स्कंध और पलाठी पीठसें मस्तक मापतें चारों डोरी बराबर होवे और सर्व बत्तीस लक्षण संयुक्त होवे औसा रूप जिस कर्मके उदयसें होवे तिसका नाम समचतुरस्रसंस्थान नाम कर्म ३४, जैसे वड वृक्षका ऊपरला भाग पूर्ण होवे है तैसें ही जो नाभीसें ऊपर संपूर्ण लक्षणवाला शरीर होवे और नाभीसें नीचे लक्षण हीन होवे जिस कर्मके उदयसें सो निग्रोध परिमंडल संस्थान नाम कर्म ३५,

जिसका शरीर नाभीसें नीचे लक्षण युक्त होवे और नाभीसें ऊपर लक्षण रहित होवे जिस कर्मके उदयसें सो सादिया संस्थान नाग कर्म ३६, जहां हाथ पग मुख ग्रीवादिक उत्तम सुंदर होवे और हृदय पेट पूंठ लक्षण हीन होवे जिस कर्मके उदयसें सो कुब्ज संस्थान नाम कर्म ३७, जहां हाथ पग लक्षण हीन होवे अन्य अंग लक्षण संयुक्त अछे होवें जिस कर्मके उदयसें सो वामन संस्थान नाम कर्म ३८, जहां सर्व शरीरके अवयव लक्षण हीन होवे सो हूंडक संस्थान नाम कर्म ३९, जिस कर्मके उदबसें जीवका शरीर मिषी स्याही नील समान काला होवे तथा शरीरके अवयव काले होवे सो कृष्णवर्ण नाम कर्म ४०, जिसके उदयसें जीवका शरीर तथा शरीरके अवयव सूर्यकी पुंछ तथा जंगाल समान नील अर्थात् हरित वर्ण होवे सो नीलवर्ण नाम कर्म ४१, जिसके उदयसें जीवका शरीर तथा शरीरके अवयव लाल हिंगलु समान रक्त होवे सो रक्तवर्ण नाम कर्म ४२, जिस कर्मके उदयसें जीवका शरीर तथा शरीरके

अवयव पीत हरिताल हलदी चंपकके फूल समान पीले होवे सो पीतवर्ण नाम कर्म ४३, जिस कर्मके उदयसें जीवका शरीर तथा शरीरके अवयव संख स्फटिक समान उज्वल होवे सो शुक्लवर्ण नाम कर्म ४४, जिसके उदयसे जीवके शरीर तथा शरीरके अवयव सुरभि गंध अर्थात् कर्पूर कस्तूरी फूल सरीषी सुगंधी होवे सो सुरभिगंध नाम कर्म ४५, जिस कर्मके उदयसें जीवके शरीर तथा शरीरके अवयव दुरभि गंध लशुन मृतकशरीर सरीषी दुरभि गंध होवे सो दुरभि गंध नाम कर्म ४६, जिसके उदयसें जीवका शरीर तथा शरीरके अवयव नींब चिरायते सरीखा रस होवे सो तिक्तरस नाम कर्म ४७, जिसके उदयसें जीवका शरीरादि सूंठ मरिचकी तरे कटुक होवे सो कटुकरस नाम कर्म ४८, जिसके उदयसें जीवका शरीरादि हरड बहेडें समान कसायला रस होवे सो कसायरस नाम कर्म ४९, जिस कर्मके उदयसें जीवके शरीरादिका रस निंबू अम्ली सरीखा खट्टास होवे सो खट्टारस नाम कर्म ५०, जिस कर्मके उद-

यसें जीवके शरीरादि खांड शाकरादि समान रस होवे सो मधुरस नाम कर्म ५१, इति रस नाम कर्म. जिसके उदयसें जीवके शरीरमें तथा शरीरके अवयव कठिन कर्कस गायकी जीभ समान होवे सो कर्कस स्पर्श नाम कर्म ५२, जिसके उदयसें जीवका शरीर तथा शरीरके अवयव माखणकी त्ररे कोमल होवे सो मृदुस्पर्श नाम कर्म ५३, जिसके उदयसें जीवका शरीर तथा अवयव अर्कतूलकी तरे हलके होवे सो लघुस्पर्श नाम कर्म ५४, जिसके उदयसें लोहवत् भारी शरीरके अवयव होवे सो गुरुस्पर्श नाम कर्म ५५ जिस कर्मके उदयसें जीवका शरीर तथा अवयव हिम–बर्फवत् शीतल होवें सो शीतस्पर्श नाम कर्म ५६, जिसके उदयसें जीवका शरीर तथा अवयव उष्ण होवे सो उष्णस्पर्श नाम कर्म ५७, जिस कर्मके उदयसें जीव शरीर तथा शरीरावयव घृतकी तरे स्निग्ध होवें सो स्निग्धस्पर्श नाम कर्म ५८, जिस कर्मके उदयसें जीवका शरीरावयव राखकी तरे रूखे होवे सो रूक्षस्पर्श नाम कर्म ५९, इति स्पर्श नाम कर्म.

नरक तिर्यंच मनुष्य देव ए चार जगें जब जीवगति नाम कर्मके उदयसें वक्र—बांकी गति करे तब तिस जीवकों बांके जातेकों जो अपने स्थानमें ले जावे जैसे बैलके नाकमें नाथ तसे जीवके अंतराल वक्र गतिमें अनुपूर्वीका उदय तथा जो जीवके हाथ पगादि सर्व अवयव यथायोग्य स्थानमें स्थापक करे सो अनुपूर्वी नाम कर्म, सो चार प्रकारका है, नरकानुपूर्वी १ तिर्यंचानुपूर्वी २ मनुष्यानुपूर्वी ३ देवतानुपूर्वी ४, एवं सर्व ६३ हुइ. जिसके उदयसें हाथी वृषभकी तरें शुभ चालनेकी गति होवे सो शुभविहायगति ६४ जिस कर्मके उदयसें ऊंटकी तरे बुरी चाल गति होवे सो अशुभविहायगति नाम कर्म ६५ जिसके उदयसें परकी शक्ति नष्ट हो जावे परसें गंज्या पराभव करा न जाय सो परघात नाम कर्म ६६, जिसके ऊदयसें श्वासोश्वासके लेनेकी शक्ति ऊत्पन्न होवे सो ऊत्स्वास नाम कर्म, जिसके ऊदयसें जीवोंका शरीर उष्ण प्रकाशवाला होवे सूर्य मंडलवत् सो आतप नाम कर्म ६८ जिसके उदयसें जीवका शरीर अनुष्ण प्रकाशवाला

होवे सो उद्योत नाम कर्म-चंद्र मंडलवत् ६९, जिसके उदयसें जीवका शरीर अति भारी अति हलका न होवे सो अगुरु लघु नाम कर्म ७०, जिसके उदयसें चतुर्विध संघ तीर्थ थापन करके तीर्थंकर पदवी लहे सो तीर्थंकर नाम कर्म ७१, जिस कर्मके उदयसें जीवके शरीरमें हाथ पग पिंडी साथल पेट छाती बाहु गल कान नाक होठ दांत मस्तक केश रोम शरीरकी नशांकी विचित्र रचना हाडोंकी यथार्थ विचित्र रचना आंख मस्तक प्रमुखके पडदे यथार्थ यथायोग्य अपने २ स्थानमें उत्पन्न करे होवे संचयसें जैसें वस्तु वनतीहै तैसेही निर्माण कर्मके उदयसें सर्व जीवोंके शरीरोमें रचना होतीहै सो निर्माण कर्म ७२, जिसके उदयसें जीव अधिक तथा न्यून अपने शरीरके अवयव करके पीडा पामे सो उपघात नाम कर्म ७३, जिसके उदयसें जीव थावरपणा छोडी हलने चलनेकी लब्धि शक्ति पावे सो त्रसनाम कर्म है ७४, जिस कर्मके उदयसें जीव सूक्ष्म शरीर छोडके बादर चक्षु ग्राह्य शरीर पावे सो बादर नाम कर्म ७५, जिस क-

र्मके उदयसें जीव प्रारंभ करी हुई छ पर्याप्ति अर्थात् आहार पर्याप्ति १, शरीर पर्याप्ति २, इंद्रिय पर्याप्ति ३, श्वासोत्स्वास पर्याप्ति ४, भाषा पर्याप्ति ५, मन पर्याप्ति ६, पूरी करे सो पर्याप्ति नाम कर्म ७६, जिसके उदयसें एक जीव एकही ऊदारिक शरीर पावे सो प्रत्येक नाम कर्म ७७, जिस कर्मके उदयसें जीवके हाड दांतादि दृढ बंध होवे सो थिर नाम कर्म ७८, जिस कर्मके उदयसें नाभिसें ऊपरला भाग शरीरका पावे दूसरेके तिस अंगका स्पर्श होवे तो भी बुरा न माने सो शुभ नाम कर्म ७९, जिस कर्मके उदयसें विना ऊपकारके किये भी तथा संबंध विना वल्लभ लागे सो सौभाग्य नाम कर्म ८०, जिस कर्मके उदयसें जीवका कोकिलादि समान मधुर स्वर होवे सो सुस्वर नाम कर्म ८१, जिस कर्मके उदयसें जीवका वचन सर्वत्र माननीय होवे सो आदेय नाम कर्म ८२, जिस कर्मके उदयसें जगतमें जीवकी यशकीर्ति फैले सो यश कीर्ति नाम ८३, जिस कर्मके उदयसें जीव त्रसपणा छोडी स्थावर पृथवी पानी वनस्पत्यादिकका जीव

हो जावे हली चली न सके सो स्थावर ४. नाम कर्म ८४, जिस कर्मके उदयसे सूक्ष्म शरीर जीव पावे सो सूक्ष्म नाम कर्म ८५, जिस कर्मके उदयसे प्रारंभी हुइ पर्याप्ति पूरी न कर सके सो अपर्याप्त नाम कर्म ८६, जिस कर्मके उदयसें अनंते जीव एक शरीर पामें सो साधारण नाम कर्म ८७, जिस कर्मके उदयसें जीव के शरीरमें लोही फिरे हाडादिसिथल होवे सो अथिर नाम कर्म ८८, जिस कर्मके उदयसें नाभीसें नीचेका अंग उपगादि पावेसो अशुभ नाम कर्म ८९ जिस कर्मके उदयसें जीव अपराधके विना करे वैरके विनाही बुरा लगेसो दौर्भाग्य नाम कर्म ९० जिस कर्मके उदयसें जीवका स्वर माजरि ऊंट सरीषा होवे सो दुःस्वर नाम कर्म ९१, जिस कर्मके उदयसें जीवका च्यवन अच्छाभी होवे तो भी लोकन मानेसो अनादेय नाम कर्म ९२, जिस कर्मके उदय सें जीवका अपयश अकीर्त्ति होवेसो अपयश कीर्त्ति नाम कर्म ९३, इति नाम कर्म ६. अथ नाम कर्मके बंधहे ओ लिखते है ॥ देवगत्यादि तीस ३० शुभ

नाम कर्मकी प्रकृतिका बंधक कौन होवेसो लिखते है। सरल कपट रहित होवे जैसी मनमे होवे तैसा ही कायकी प्रवृत्ति होवे किसीकोभी अधिक न्यून तोला मापा करके न ठगे, पर वंचन बुद्धि रहित होवे। ऋद्धि गारव। रस गारव साता गारव करके रहित होवे पाप करता हुआ डरे परोपकारी सर्व जन प्रिय क्षमादि गुण युक्त, ऐसा जीव शुभ नाम कर्म बांधे, तथा अप्रमत्त यतिपणे चारित्रियो आहारक द्विक बांधे, और अरिहंतादि वीस स्थानकको सेवता हूआ तीर्थंकर नाम कर्मकी प्रकृति बांधे। और इन पूर्वोक्त कामोसें विपरीत करे अर्थात् बहुत कपटी होवे कुडा तोला मान मापा करके परको ठगे, परद्रोही हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रहमें तत्पर होवे, चैत्य अर्थात् जिन मंदिरादिककी विराधना करे, व्रत लेकर भग्न करे, तीनो गौरवमें मग्न होवे, हीनाचारी ऐसा जीव नरक गत्यादि अशुभ नाम कर्मकी ३४ चौतीस प्रकृति बांधे, येह सतसठ ६७ प्रकृतिकी अपेक्षा करके बंध कथन करा है

अथ गोत्रकर्म तिसके दो भेद प्रथम उच्चगोत्र विशिष्ट जाति क्षत्रिय काश्यपादिक उग्रादिकुल उत्तम बल विशिष्ट रूप ऐश्वर्य तपोगुण विद्यागुण सहित होवे सो उच्चगोत्र १, तथा भिक्षा चरादि कुल जाति आदिक लहे सो नीच गोत्र २, अथ उच्च गोत्र के बंध हेतु ज्ञान दर्शन चारित्रादिक गुण जिसमें जितना जाने तिसमें तितना प्रकाश कर गुण बोले और अवगुण देखके निंदे नही तिसका नाम गुण प्रेक्षा है. ऐसा गुण प्रेक्षी होवे, जातिमद १, कुलमद २, बलमद ३, रूपमद ४, सूत्रमद ५, ऐश्वर्यमद ६, लोभमद ७, तपोमद ८, ए आठ मदकी संपदा होवे तो भी मद न करे, सूत्र सिद्धांत तिसके अर्थके पढने पढानेकी जिसकों रुचि होवे निरा हंकारसें सुबुद्धि पुरुषकों शास्त्र समझावे, इत्यादि पर हित करनेवाला जीव उच्च गोत्र बांधे. तीर्थंकर सिद्ध प्रवचन संघादिकका अंतरंगसें भक्तीवाला जीव उंच गोत्र । इन पूर्वोक्त गुणोसें विपरीत गुणोवाला अर्थात् मत्सरी १, जात्यादि आठमद सहित अंह-

कारके उदयसें किसाकों पढावे नहीं, सिद्ध प्रवचन अरिहंत चैत्यादिककी निंदा करे भक्ति न होवे सो जीव हीन जाति नींच गोत्र बांधे ॥ इति गोत्रकर्म ७ ॥ अथ आठमा अंतराय कर्मका स्वरूप लिखते है ॥ तिसके पांच भेद है, जिस कर्मके उदयसें जीव शुद्ध वस्तु आहारादिकके हूए भी दान देनेकी इ-छाभी करे परंतु दे नहीं सके सो दानांतराय कर्म १ जिस कर्मके उदयसें देनेवालेके हुए भी इष्टवस्तु याचनेसें भी न पावे, व्यापारादिमें चतुरभी होवे तो भी नफा न मिले सो लाभांतरायकर्म २, जिस कर्मके उदयसें एकवार । भोगने योग्य फूल माला-मोदकादिकके हूए भी भोग न कर सके सो भोगां-तराय कर्म ३, । जिस कर्मके उदयसें जो वस्तु बहुतवार भोगनेमें आवे स्त्री आभर्ण वस्त्रादि तिनके हूए भी वारंवार भोग न कर सके सो उपभोगांतराय कर्म ४, जिस कर्मके उदयसें मिथ्या मतकी क्रिया न कर सके सो बालवीर्यांतराय कर्म १, जिसके उदयसें सम्यग दृष्टी देशव्रति धर्मादि क्रिया न कर

सके सो बाल पंडित वीर्यांतरायकर्म जिसके उद-यसें सम्यग दृष्टी साधक मोक्ष मार्गकी संपूर्ण क्रिया न कर सके सो पंडित वीर्यंतिरायकर्म ॥ अथ अं-तराय कर्मके बंध हेतु लिखते है ॥ श्री जिन प्रति माकी पूजाकी निषेध करे, । उत्सूत्रकी प्ररूपणा करे अन्य जीवांकों कु मार्गमे प्रवर्त्तावे, । हिंसादिक आठारह पाप सेवनेमें तत्पर होवे, तथा अन्य जी-वांकों दान लाभादिकका अंतराय करे सो जीव अंतराय कर्म बांधे इति अंतराय कर्म ८ ॥ इसतरें आठ कर्मकी एकसौ १४८ अडतालीस कर्म प्रकृति के उदयसें जीवोंके शरीरादिककी विचित्र रचना होती है जेसें आहारके खानेसें शरीरमें जैसे जैसें रंग और प्रमाण संयुक्तहाड नशा जाल आंखके प-डदे मस्तकके विचित्र अवयवपणें तिस आहारका रस परिणमता है, यह सर्व कर्मके उदयसें शरी-रकी सामर्थ्यसें होता है, परंतु यहां इश्वर कुछभी कर्त्ता है, तैसें ही काल १ स्वभाव २ नियति ३ कर्म ४ उद्यम ५ इन पांचो कारणोंसें जगतकी विचित्र

रचना हो रही है, जेकर ईश्वरवादी लोक इन पूर्वोक्त पांचोके समवायका नाम ईश्वर कहते होवे तब तो हम भी ऐसे ईश्वरकों कर्त्ता मानते है। इसके सिवाय अन्य कोइ कर्त्ता नही है,। जेकर कोई कहे जैनीयोंने स्वकपोल कल्पनासें कर्माके भेद बना रखे हैं यह कहना महा मिथ्या है क्योंकि कार्यानुमानसें जो जैनीयोने कर्मके भेद माने है वे भेद सर्वज्ञ वीतरागने प्रत्यक्ष केवल ज्ञानसें देखे है,। इन कर्मांके सिवाय जगतकी विचित्र रचना कदापि नही सिद्ध होवेगी, इस वास्ते सुज्ञ लोकोंकों आरिहंत प्रणीत मत अंगीकार करना उचित है,। और ईश्वर वीतराग सर्वज्ञ किसी प्रमाणसें भी जगतका कर्त्ता सिद्ध नही होता है, जिसका स्वरूप ऊपर लिखआये है, ॥ इति ईश्वर जगत कर्त्ताके माननेवाले ईसाइ आदि मतोंका खंडन ॥ अथ जो ईसाइयने शंका करी है तिनका उत्तर लिखते है,। प्रथम जे कल्प सूत्र बाबत शंका करी है सोवे समझीसें करी है, क्योंकि भगवंत श्री महावीरके विद्य-

मान होते तिनके शिष्य श्री सुधर्मस्वामीने जब चौदह पूर्व रचे तिनमेसें नवमें पूर्व कीती सरी आचार वस्तुमें सर्व तीर्थंकरोंके चरित महावीर भगवंतके कहे मुजब गूंथन करे, पीछे महावीर भगवंतके पीछे एकसोसित्तेर १७० पीछे भद्रबाहु दिवंगत हूए, भद्रबाहु चौदह पूर्वका ज्ञाताथा तिनोने नवमे पर्वमेंसें काढके दशाश्रुतस्कंध शास्त्ररचा, तिसके आठमे अध्ययनमे सुधर्मस्वामिके कहे मुजब ही चार तीर्थंकरोके चरित कथन करेहै, और आवश्यक प्रथमा तु योगमें सर्व तीर्थंकरोके चरित विद्यमान है इसवास्ते जैसा सुधर्म स्वामीने कथन करा-था तैसाही श्री भद्रबाहुस्वामीने कथन करा है, और जो अधिकार भद्रबाहुस्वामीने पूर्व नवमेसे दश श्रुतस्कंधमे कथन करा सोइ कथन भगवानके पीछे नवसौ ९८० अैंसी वर्ष पीछे पुस्तकमे लिखा गया परं रचा नही गया, इस वास्ते सत्यहै जेकर लिखनेसे पुस्तककी सत्यता न मानीये तब तो मुसाकी लिखी तौरेत और दाऊदकी लिखी

जबूर और इसाकी लिखी इंजील दिखलाओ, नहीतो हम ऐसें समझेंगे क्या जाने किसी जंगली वे समझने लिखते हूए क्या लिख मारा है, और जो कल्पसूत्रके लिखनेमे १६३८३ हाथी प्रमाण स्याहीका लगना लिखा है सो ईसाइयोने दहीके भुलेखे कपास खाइ है क्यो कियह प्रमाण चौदह पूर्वके वास्ते है, परं कल्पसूत्रके वास्ते ऐसा लेख कीसीभी जैनशास्त्रमे नही है १, और पार्श्वनाथ श्रीनेमिनाथ श्री रूषभदेव प्रमुखनी जे कथा । वृतांत लिखा है सो सर्व महावीर भगवंत सर्वज्ञ के कथन करनेसे कल्पसूत्रवत् सत्य है, परं महावीर भगवंत तुमारे ईसेकी तरे अल्पज्ञानी नही था, जैसे ईसेको यहवी खबर न पडीके इस गूलरके पडमे फल है वा नही जेकर महावीर सर्वज्ञ न होता तो जैसे तुमलोक अल्पज्ञानी इसाको । परमेश्वरका पुत्र मानतेहो हम ऐसे कदापि न माने, हमतो तुमारे अल्पज्ञानी ईश्वर और ईसाकी लीला देखके हेरान होते हैकि ईसाइ लोक समझवाले ऐसी २ अज्ञानकी उतपटं

मवाते क्योंकर मानते होवेगे ? और चौवीस तीर्थं-करोके चरितमे जोजो तीर्थंकर पदकी वाते है वे सर्व एक सरीषी है । शेष चरित सर्वके विलक्षण है और जोजो तिष बाबत लिखा हैकि जोतिष जैन मानते है चंद्र सूर्य ग्रहोंकी चालसें जीवांको दुख सुख हौता है ऐसें मानते है यह मानना जैन मतीयोका सत्य है, क्योंकि जोजो दुख सुख जीवांको प्राप्त होता है सो कालादि पांच कारणोंसें होता है, पांचोमेसें एकांश निमित्त कालभी है, और काल है सो चंद्र सूर्यग्रहादिककी चालसें माना जाता है, इस वास्ते जैनोका पूर्वोक्त मानना सत्य है, और जो तुमारी खगोल विद्या है सौ कल्पित बनारखी है सौ धर्मकी चरचेमें काम नही आती हैं । हां जेकर तुमारे ईशाने खगोल विद्या रची होवे तब तो हम तिसका सत्यासत्यपणे जैन शास्त्रसें मिलाके देखे परंतु तुमारी बुद्धिकी कल्पना हम कदापि सत्य नही मान सकते है ३, और जो द्वीप समुद्रोंकी बाबत लिखा है के जैनी सातद्वीप और सात समुद्र मानते

है यह कथन मिथ्या है, क्योंकि जैन मतके शास्त्रोमें तो असंख्य द्वीप और असंख्य समुद्र मानते है, परं ईसाइयांको कुछभी मालम नही हैकि जैनी किसतरे द्वीप समुद्र चंद्र सूर्य ग्रहादिक मानेत है। विना जाने दूसरे के मतकी वात लिखनी यह अल्प मतिका-चिन्ह है और जो भरत क्षेत्रकों तुम हिंदुस्थान कहते है। सोभी तुमारी भूल है, क्योंकि जितने देश एशीया और यूरपके तुमने देखे है और जितने टापु तथा अमेरिका प्रमुख देश समुद्र है हम इन सर्वका भरत क्षेत्रके अंदर मानते है, और उत्तर दिशिमें बर्फके जम जानेंसें रस्ता नही रहा है, इस वासते भूगोलवालोंकी जां तक दृष्टी गइ तहां तकका ब्यान लिख दीया, मन कल्पनासे जो चाहा सो तिसका नाम रख दीया, और जैन शास्त्रमे तों चीन रूसादि सर्व देशाकों और समुद्रको भरतखंडही लिखा हैं, इस समुद्रका पानी वे मर्यादहै, कदे तो थलकी जगे जल हो जाता हैं और कहीं जलकी जगा ऊपर थल हो जाता है, बर्बर देशवत्, इस-

वास्ते तुमारी भूगोलविद्या स्थिर नही है, आज अैसे है तो कलको फेर अैसे है, इसवास्ते तुमारी बात शास्त्रसें नही मिल सकती है, क्योंकि जबसे यह समुद्र महा लवण समुद्रसे भरतखंडमे आया है तबसे भरतखंडकी व्यवस्था बिगड गइ है, इस वास्ते जो जैनशास्त्रोमे जो कुछ लिखा है सो सर्व सत्य है विशेष करके जैन धर्मका स्वरूप देखना होवें तो हमेरी तर्फसे रचे हुवे " जैन तत्वादर्श " १ और " अज्ञान तिमिरभास्कर " २ नामके ग्रंथ देख लेने, और जैन मतके उपदेश पद नामके शास्त्रमे लिखा है कि हिमालय पर्वतके उत्तरके पासे के देशोमे भगवान श्री महावीर पधारेथे और तिन देशोमे मुख्य नगरीका नाम पृष्टचंपाथा और तिस नगरीमे प्रसन्नचंद्र राजाके पुत्रशाल महाशाल दो भाइ राज्य करतेथे वे श्रावक थे, फेर पीछे श्री गणधर गौतमजी तिस नगरमे गये और शाल महा शालको दीक्षा दीनी इत्यादि बहुत कथन है, इसवास्ते अब क्षेत्रोके नाम बदल गये है। परंतु यह न सम-

श्वना के जैन मतोक्त क्षेत्रका समास ठीक नही क्यों कि समुद्रके पानीके सबबसे भरतखंड बिगड गया हैं ॥ इसवास्ते हम ठकिर नही वता सक्ते है परंतु सर्वज्ञ भाषित कदापि मिथ्या नही है ॥ तथास्तु.

इति–न्यायांभोनिधि–श्रीमद्–आत्माराामजी " आनंदविजयजी " विरचित ईशाईमतसमीक्षाग्रंथ समाप्तः ॥